

श्रीमद् बुद्धिसागरसूरि प्रथमाला प्रथाक ३८

पट्टद्रव्य विचार.



न्ययिना

श्रीमद् बुद्धिसागर मरियूरनी



छपारी प्रसिद्ध करनार

श्री अयाम ज्ञानप्रसारक मठङ्ग

हा उकोल मोहनलाल हिमचद पादरा.



आगति श्रीनी

प्रत १०००

म १०८४

म १९२८

किमत ०-५-०

निवेदन.

आ लहु पण उपयोगो ग्रन्थनो श्रीजी
आवृत्ति पदार पाठता आलद थाय छे

आ ग्रन्थ सदूगत शुद्धयर्ये श्रीमद् शुद्धि-
मागरसूरिजीप सयत १९६८ मर लखेलो
जेनी पहेली आवृत्ति स १९६९ नी सालमा
अन्ते श्रीजी आवृत्ति स १९७२ नी सालमा
श्रीमद् शुद्धिमागर सूरिमधरजी ग्रन्थमाळा
प्रापाक ३६ तरीके प्रगट थपल तेनी तमाम
नकलो गषी जथाथी अने मारणी चालु रहे
कायी आ श्रीजी आवृत्ति प्रगट करपार्मा
आयी छे

आ ग्रन्थनी श्रीजी आवृत्ति काढवानी
जहर पढ्यायी तेमज थी ज्ञेन प्रव्यै० पड्युकेश
त योई तरफथी लेयाती धार्मिक हरीफीहनी
परोक्षाना अभ्यास प्रममा आ ग्रन्थ हालमा

ज दायरे अरेक दोषार्थी सेनी उपर्योगीता
सिद्ध पाय हि

आ ग्राम दृष्टियामा पादराजा शा रा
द्वाभाइ हीमचहनी सदूगत पुत्रो सो छेत
छीलायतीता धेयार्थ-क १००) ती मदद आ
पयामा आर्थी हो, त माटे लेमनी द्वाभार
मानी विरभीष दीप

पादरा फागण शुक्र ११ स १९८६
श्री अद्यात्म ज्ञान प्रसारक मंडल.

उद्देश.

भी तीर्थकर मदाराजाप समवसरणमा
येसी भष्यजीयोना दित भणी पहुङ्ग्रव्यनु स्व-
रूप कथन कर्यु ते पहुङ्ग्रव्य स्वरूप पहु छे
के—तै जाणीने तेनी अद्वा करवायी सम्य
क्षयनी प्राप्ति थाय छे जीवादि नय तस्थनो
समायेशो पण पहुङ्ग्रव्यमा थह शके छे प
पहुङ्ग्रव्यनु यिश्रेष्ठ स्वरूप सुग्रीमा छे तेमायी
चर्किचित् आ प्रश्यमा लग्बिधामा आव्यु छे

भी तीर्थकर मदाराजाप १ प्रव्यानुयोग
२ गणितानुयोग ३ चरणकरणानुयोग अने ४
कथानुयोग ए थार अनुयोग कथन कर्यो छे
तेमां प्रव्यानुयोग यिश्रेष्ठ करी आत्माने स्थित-
कारक छे ज्ञेम ज्ञेम प्रव्यानुयोगमु यिश्रेष्ठ
यिश्रेष्ठ स्वरूप ज्ञाणधामा आये छे तेम तेम
सम्यक्त्यनी शुद्धि याय छे, पहुङ्ग्रव्यनो प्रव्या-
नुयोगमाँ समायेशा पाय छे अने तेनु स्व
रूप धीतराग घच्छानुसारे ज्ञाणधायी अने

तेजी अद्वा कारणापी सत्यर मोक्ष प्राप्त याप
हो, अने अस्य मतशादीभीनां तथा असत्य
भासे हो माटे तेनु जाणपणुं करयानी आय
इषडता हो आ प्रथा रुपावानु—

मुख्य प्रगोजन.

ए छे जे हु मुरतयो यिचार करी पादरा
गामे आच्यो स्थाना आषक घकील भाहनलाळ
हीमचदनो समागम ययो तेमने पद्मद्रव्यनु
भ्यरुप जाणयानी जीशासा यता यिनेती क
रचाधी पूर्णचार्यो एत ग्रन्थीमायी उद्धरीने
आ पद्मद्रव्य यिचार प्रयध लसी तेमने सम
जाय्यो, तेथी तेमने घणो हर्षे ययो, अने ज्ञेन
तट्ट्वो उपरी अद्वा इद यद सेमने पोताने
आ ग्रन्थयी घणो नाम ययो तेम चीजा
भाल्य जीवाने थाय पर्म झाणी आ यथ छुपा
यवा तेओप अनुमती मागो ते योग्य लाग
चाधी आपी हो

संपापना.

आ प्रथमा घोइ टेकाणे, मतिक्षोपथी
, यद होय तो हो माटे ऐदित पुहचोप

समा करी सुधारणी “ शुभे यथोशक्ति यत
नीय ” पर न्यायने अनुसरी मैं आ प्रयास
कर्या है, तेमा काह वीतराग यचनथी थिए
दू लग्वासु दोय ते सप्तधी मिच्छामि दुष्कड
दड शु

भलापण

आ प्रन्थनो विषय गदन होघायी गीतार्थ
समक्ष समजीने वाचवायी हितकर यशो आने
फरेला प्रयत्न सफल यथो गणाश्री

आशिर्वादः

भव्य जीवो आ प्रेय वाची व्यवहार अने
निश्चयपूर्वक आत्म साधन करी परमारम्पद
(मुक्तिपद) पामो एम इच्छु शु

तथास्तु

मु० काशीठा, महा सुद १ स १९६९

ली०

मुनि बुद्धिसागर
(प्रथमवृत्ति उपरथी)

द्वितीयावृच्छिन्

निवेदन

जिनेश्वर बिधित शास्त्रोनो पार पामर
 जीवो पामो शब्दे तेम रथी तेमा पण (१)
 गणितानुयोग (२) चरणशरणानुयोग (३)
 क्षयानुदीग अने (४) द्रव्यानुयोग ए चारे
 विभागमा द्रव्यानुपोगनो संघर्षा प्रकारे पार
 तो कोइर शानो विरला पामी शब्दे हे आ
 विषयमा उद्दा उत्तरायु अने आत्मां आत्म
 स्वरूपे अथगोको वैद्यव्यज्ञान प्रगटावत्तु ए
 चणुज विकर वाय हे तेमा पण यतेमान
 समय तथा प्रकारना ज्ञाननी कूचि थव्ही ए
 तो उद्दा पुण्यवत्तनु लक्षण जाणयु

द्रव्यानुयोगना अनेक प्रथो हे ते सधनु
 व्यवसायी मनुष्यो चाचत मनत वरो शक्ता
 “तेभान आ लयु ग्रन्थ घडे ! यदूद्रव्य”
 नो अन्यास थार ले मादे शास्त्रविज्ञारद

गुरुघर्ये ओमदू शुद्धिसागर सूरिश्वरजीप स
१९६८ नी सालमा पादरा गमे आ प्रथ
रच्यो हतो, अने पादराना थकील मोहनलाल
हेमचंद्रे प्रगट कर्ता हतो आ ग्रन्थनी प्रथम
आधृति गलास थायो अने अभ्यासीओने
ते उपयोगी होथायी फरीथी वकील मोहन
लाल हेमचंद्रनी द्रव्य साहाय्यथी मठक्कने
प्रयमालाना ३६ मा प्रथ तरीके प्रगट फर
याओ तुम प्रसंग मल्यो छे,

प्रथम आधृति करता केवलेक स्थले श्री
मदे स्थहस्ते सुधारो धधारो पर्यो छे, अने
तेमा पण खास परी समर्पितनु स्वरूप यिदी
ए प्रकारे आलेरयु छे

आ प्रथमा द्रव्यना पूर्ण भेद तेना गुणो,
तेना पर्याय तेनु स्वरूप, तेना क्षेत्र क्षेत्री,
परमाणुओना भेद, घर्णणा आत्मानु नित्य
पण अनित्यपणु उत्पाद यय, अने ध्रुव शी
पस्तु छे, इनना प्रशार-भेद-व्यवहारझान
अने निष्ठयान, कर्मना प्रकार, तेनो कर्ता

दारण ग्रन्थमा परं उपनिषद्, श्रमीन्, सत्
भेगीनु म्यदर्प इयानसा प्रवार धार भावना,
अने समवित्तनु स्यद्य एगेरे यावतो उपर
विषेचन एणीज उत्तम अने सरल रीते वासु
छे तीनो द्रव्यानुपोषना भव्यामीभो पोले
उपयोग करदो अने योजाभाने ते मांग प्रेरणे,
एषी आद्यापूर्यद आ प्रथना प्रगताये द्रव्यमी
सदाय करनार एकीक मोहनलाल देमचदने
घरवाद जापी विरमीष छोप.

मुराद }
संपादकी }
कोष्ट पदि ११

३०
अव्याप झान प्रसारक
महल.



श्री अध्यात्मज्ञान प्रसारक मंडल.

—०५६—

स्व० श्रीमद् युद्धिसागरसूरिजी ग्रन्थमालामाँ
प्रगट धयेला ग्रंथोनुं सुचीपत्र.

प्रथाक	किमत
* १ अध्यात्म व्याख्यानमाला	०-४-०
* २ भजनसग्रह भाग २ जो	०-८-०
* ३ भजनसग्रह भाग ३ जो	०-८-०
* ४ समाधिशुतकम्	०-८-०
* ५ अनुभवपरिशी	०-८-०
* ६ आत्मप्रदीप	०-८-०
* ७ भजनसग्रह भाग ४ जो	०-८-०
८ परमात्म दर्शन	० १२ ०
९ परमात्मज्योति	छपाय छे
* १० लक्ष्यर्थिदु	०-४ ०
* ११ गुणानुराग (चायूक्ति घीजी)	०-१-०
* १२-१३ भजनसग्रह भाग ५ भो तथा ज्ञानदीपिका	०-६-०

* १४ तीर्थयात्रानु विमान (आ धीजो)	२	०
* १५ अरथात्मभजन संघट		०-६-०
* १६ गुरुपाठ (आ धीजो)		०-८-०
* १७ तात्प्रसानदापिका		०-८-०
* १८ गरुडी संघट भा १		०-३-०
* १९-२ भाष्यकार्यमहसुरहृषि भाग १-२	०-१-०	
* २१ भजनपद संघट भाग ६ टा	०	१२
* २२ यत्यामृत १३ योगदिव्य		० १४ ०
२४ जैग अतिहासिक राममाणा		० १८ ०
२८ आदृष्टमनपद (१०८) संघट	१-०-०	
२६ अरथात्मशान्ति (आ चोची)		०-३-०
* २७ काल्य स० भाग ७ मो		०-८-०
२८ जैनधर्मनी प्राचीन अनेश्वरी चीन द्वियति		
* २९ शुभारपाट (दिदी)		०-४-०
* ३० यो १४ शुभासागर शुद्धीता	०-६-०	
३६ पठद्रव्य विचार विजापुर शृङ्खला		०-४-०
		०-४-०

* ३७ सायरमतो गुणशिक्षण काव्य	०-६-०
* ३८ प्रतिष्ठापालन	०-५-०
* ३९-४०-४१ जीनगच्छमतप्रयाघ, सघप्रगति, जैनगीता	१-०-०
४२ जीनधातुप्रतिमा लेख सं भा १	१-०-०
* ४३ मिथ मिथी	०-८-०
* ४४ शिष्योपनिषद्	०-२-०
४५ जैनोपनिषद्	०-२-०
४६-४७ धार्मिक गद्य सं तथा पत्र सदुपदेश भा १ लो	३-०-०
४८ भजा सं भाग ८	३-०-०
४९ धीमद् देवचक्र भा १	छपाय हे
* ५० कामधाग	३-८-०
* ५१ आत्मतत्त्यदर्शन	०-१-०
- ५२ भौरतमहाकारशिक्षण काव्य	० १० ०
५३ धीमद् देवचक्र भा २	छपाय हे
५४ गहुली सं भाग २	०-४-०
* ५५ कर्मप्रकृतिटीका भापांतर	३-०-०
५६ शुद्धगीत गहुली सं	० १२ ०

६७-६८ आगमसार आ श्रीजी	०-६-०
* ६९ देवर्थन स्तुति स्तवन सं०	०-५-०
६० पूजा स० भाग १ लो	१-०-०
६१ भजनपद स० भाग १	१-८-०
६२ भजनपद स० भाग १०	१-०-०
६३ पवस्तुपदे भाग २	१-८-०
६४ धातुप्रतिमा लेख स भाग २	१-०-०
६५ जैनादिष्ट इशावास्योपनिषद्	
भाषार्थ विवेचन	१-०-०
६६ पूजा स० भाग १-२	२-०-०
६७ स्नानपूजा	०-२-०
६८ श्रीमद् देवचन्द्रजी जने तिमनु	
लीबन चरित्र	०-४-०
६९-७२ शुद्धोपयोग यि सहकृत	
प्राय ४	० १२ ०
७३-७७ संघकरणय यि सहकृत	
प्राय ६	० १२ ०
७८ लाला लज्जपतरायदअने जैनधर्मे	०-४-०
७९ चित्तामणि	०-४-०
८०-८१ जैन धर्म जने लिस्ती	
धूमगो मुफावलो तथा	
जैन लिस्ती सवाद्	१-०-०

८२ सत्य स्थदप	०-६-०
८३ इथान विचार	०-८-०
८४ आत्मशुलिग्रकाश	०-४-०
८५ साधत्सरिक क्षमापना	०-३-०
८६ आत्मदर्शन (मणीचद्वजीकृत सङ्जायो) तु विवेचन	०-४-०
८७ जीनधार्मिक शक्ता समाधान	०-२-०
८८ कायाधिक्षय निषेध	०-६-०
८९ आत्मशिक्षा भाषनाप्रकाश	०-७-०
९० आत्मप्रवाश	१-८-०
९१ शोक विनाशक प्रन्थ	०-१-०
९२ तत्त्वविचार	०-६-०
९३-९७ अध्यात्मगीता वि स्त्रयम् प्रन्थ	१-०-०
९८ जैनसूत्रमा मूर्तिपूजा	०-३-०
९९ थी यशोपिजयली निषेध	०-६-०
१०० भजनपद स भाग ११	०-१२-०
११ „ भा १ आ उथी	०-८-०
१०२ गुजरात घटद् विजापुर वृत्तांत	१-४-०
१३० थोमद् देयचद्वजी विस्तृत ली	

१०५ वनचरित्र सथा देवपिलास	० १२ ०
१०६ मुद्रितजैव श्वे प्रम्यगाट	१-८-०
१०७ वक्षापली-सुयोष	१-४-०
१०८ सनष्टत म० (ऐषवदन सहित)	० १० ०
१०९ पश्च सदुपदेश भाग ३	०-६-०
११० धीखुदिसागर सूरिम्बर स्मारक शाय (सवित्र)	० १२ ०

* आ भीशानीधाना प्रथा विलङ्घमा नयो

* आ प्रथो विदिश ऐद्युषणी खाताए
मज्जुर परेला छे

- आ प्रथो भीमत गायकवाट सरँथा
रना ऐद्युषणी खाताए मज्जुर परेला छे

ग्रन्थो मळवाना ठेकाणा

- १ वकील मोहनलाल हेमचद-पादरा (गुजरात)
- २ शा. आत्माराम खेमचद-सापांद.
- ३ शा. नगीनदास रायचंद भांखरीया—
महेसाणा.
- ४ शा. चटुलाल गोकलभाई-विजापुर.
- ५ शा. रत्नीलाल केशवलाल-प्रांतिज.
- ६ श्री उद्धिसागरसूरि जैनसमाज-पेथापुर.
- ७ शा. मोहनलाल नगीनदास भांखरीया—
१०१-३ घजार गेट, कोट, मुघाई
- ८ श्री अभ्यात्म ज्ञान प्रसारक संदळ—
देट ओफीस झेवेर गुमानन्दो माळो,
आवा फाटा—मुघाई

अशुद्धिशुद्धिपत्रक

शुद्धि.	सं न व्य व्यि उप मरो जेम आत से ने	शुद्धि	सं न व्य व्यि उप मरो जेम आत से ने	पंक्ति	पान
सुव्याप्ति	सुव्याप्ति	उपा	उपा	५००	५००
सुव्याप्ति	सुव्याप्ति	मत	मत	५००	५००
सुव्याप्ति	सुव्याप्ति	जमे	जमे	५००	५००
सुव्याप्ति	सुव्याप्ति	आन	आन	५००	५००
सुव्याप्ति	सुव्याप्ति	तेन	तेन	५००	५००
सुव्याप्ति	सुव्याप्ति	सुव्याप्ति	सुव्याप्ति	५००	५००
सुव्याप्ति	सुव्याप्ति	प्रव्याप्ति	प्रव्याप्ति	५००	५००
सुव्याप्ति	सुव्याप्ति	आते	आते	५००	५००
सुव्याप्ति	सुव्याप्ति	आनात	आनात	५००	५००
सुव्याप्ति	सुव्याप्ति	संव	संव	५००	५००
सुव्याप्ति	सुव्याप्ति	विमाग	विमाग	५००	५००
सुव्याप्ति	सुव्याप्ति	सद	सद	५००	५००
सुव्याप्ति	सुव्याप्ति	स्ले	स्ले	५००	५००
सुव्याप्ति	सुव्याप्ति	शुग	शुग	५००	५००

			सू
८०	८३	मू	नास्ति
९६	९३	नास्ति	नास्ति
९७	९३	लु	लु
९८	८	अपत्य	अथस्तव्य
१२८	७	मटीने	मटीने
१२२	११	थ	थु
१२३	१३	आनपसयाग	अनिष्टमयोग
१२४	२	बन्तु	बहन्तु
१२८	२	महल	महेल
१०९	१५	यान्	यााा
१४४	७	श्रीजा	श्रीजो
१६०	१६	षीजा	षीजा
१६५	१६	ह	ह
१७६	१५	आभ	अभि
१७७	१२	थ	थु
१८१	६	ठथ	न्य
१८५	१५	एकु	एकु
१८९	३	श्वा	श्या
१९५	५	तु	तु
२०२	५	द्य	द्य
२०३	१४	पार	परि
२०९	८	गा	या
२१८	३	सर्वाय	सर्वाय

थो

अनुक्रमणिका

मग्नात्रण	१
दाननु स्थरप	८
एट्रेस्य तथा तेना गुणपर्याय	७
आठप्रभ	४४
नयस्थरप	४३
ग्रमाण	४२
सप्तभगी	१६
प्रिभगी	१५
नीगोद्दस्त्रप	१००
चारध्यान	१०९
चार भाष्यना	१२३
चार भाष्यना	१४६
समवितनु स्थरप	१५४
प्रशस्ति	१७८
	१८७



॥ श्रूतं नमः ॥

षट्कुद्रव्य विचार.

महालम्

नमो अरिहताणं. नमो सिद्धाण.
नमो आयरियाण नमो उवज्ञा-
याण नमो लोप सब्ब साहूण
एसो पंच नभुकारो सब्ब पावप-
णासणो मगलाण च सब्बेसि
पढस हवड मंगलम्

दुहा.

ब्राह्मी भगवनी भारती, प्रणमी तेहना पाय,
गिजलाणीना चार भेद, अनुयोगे करी पाय ?

पूर्व मणीत ग्रथोदधि, सम्पत्यादिक सार,
 तेहनो लेश लही करी, वचन प्रदु धरी प्यार. ९
 पडितजन सुटाइथी, देखे जो आ ग्रंथ,
 सार विचारी धारीने, पामे गिबपुर पंथ. १०
 दुःख देखी टोपने, मनमा माने हर्ष,
 पडित जन करे पारखु, माने ते उत्कर्ष. ११

आ चतुर्गति रूप ससारमा आत्मा अनादि
 कालधी परिभ्रमण करे छे, अने कर्मना
 योगे जन्म जरा मरणादिरूप दुःख भोग्ये
 छे, कर्मना सयोगधी एकेद्वी रेकेद्वी तेकेद्वी चौ-
 रेद्वी अने पचेंटीपणु पामे छे. दश हाषाते दु-
 र्लभ मनुष्य जन्म पाभीने पण श्रावककुल,
 सद्गुरुहसपागम, जिनवाणीनु श्रवण, तेनी
 सहहणा अने ते प्रमाणे वर्तवू ए आदि उत्त
 रोत्तर दुर्लभ छे.

व्यवहारशान—एटले अलंकार, व्याकरण,
 अन्य मतियोना ग्रंथ तथा गणितानुयोग, क-
 पानुयोग, चरणकरणानुयोगनुं जाणपण, ए
 सर्व व्यवहार ज्ञान छे. तसा उपयोग विना
 मूर सिद्धांतना अर्थ करता ए पण व्यवहार
 शान त्रे. हठ समाधि ते पण व्यवहार ज्ञान त्रे.
 एनाथी मुक्ति मळती नवी, पण आत्माना
 मर्मपनु सम्पद जाणतु, पहु द्रव्यना गुण प-
 र्णयनुं जाणतु, उत्पाद व्यय अने ध्रुवनु जाणतु,
 ते थरी निर्थय ज्ञान पूर्णक मुक्ति थाय त्रे.
 पाच द्रव्य त्याग करता योग्य छे, एमा आ-
 त्मानी वस्तु कड नवी, ए पाचमां पण पुद्-
 गल द्रव्यना सयोग संघे आ आत्मा पर-
 म्मु पोतानी भानी घेयो छे. पण वस्तुत,
 ते पोतानी नवी. जान घम्मु आत्मानी छे,

बनतश्चान्, अनत दशेन, अनन्त रागिन भने
अनंत रीर्यनो भोक्ता, आत्मा अस्पी असाध्य
प्रेतशमयी ते. तेजु ने जान नैने निभय जान
षट्टे हो

आत्मा रम्तु भनादि जनत हो, तेने भ-
नादिरी कर्मनो सयोग थयो हो, तेथी दुखी
धाय ते. भवी साथे कर्मनो सपथ जनादि
सात भागे ते. अभवी साथे कर्मनो सपथ
जनादि भनतमै भागे ते.

कर्मना आठ प्रकार ते-नानावरणीय, द-
नानावरणीय, वैद्यनीय, मोहनीय, आषुष्य,
नाम, गोप, भने भतराय, एम आउ कर्म ते, तेनी
दत्तर प्रकृति १५८ ते ते कर्मस्य जड वस्तुनां
प्रथम विचित्र हो. जेम ग्रामीष्य जड औंग-

यिना भक्षण थकी युद्धिनुँ स्फुरायमानपणुं
 थाय छे, तेम रुर्म वस्तु जे जडरपे ले, तेना
 सरध थकी आत्मा विचिन आकारे देखाय
 छे, अने जुदा जुदा प्रकारना शरीरने धारण
 करे छे, नेम पाचइन्द्री, मन, बचन अने काय
 रुपै पुद्गल वस्तुने धारण करे छे, ए सर्व
 कर्मना भर्पंच छे, ए कर्म पुद्गलास्तिकाय छे.
 जड उै, सक्रिय उि, तेमा आत्मापणु नर्थी,
 एप ड्योर झान धाय उे त्यारे तेनाथी मोह
 उतरे ले पट् ड्रव्यनुँ झान धवाथी समकि-
 तनी प्राप्ति धाय छे. ते पट् ड्रव्य देखाटे छे.

(१) धर्मास्तिकाय (२) अधर्मास्ति-
 काय (३) आकाशास्तिकाय (४) पुद्गला-

स्तिराय (५) काल (६) जीवास्तिकाय ए
उ द्रव्य शावता हे.

ए उ द्रव्यना अनुब्रम्भे गुण वहे हे.

१ धर्मास्तिकायना गुण ४ (१) अरपी
(२) अचेतन (३) अक्रिय (४) गतिसहाय

२ भर्मास्तिकायना गुण ४ (१) अ-
रपी(२) अचेतन (३) अक्रिय (४) स्थितिसहाय

३ आसाधास्तिकायना गुण ४ (१) अ-
रपी (२) अचेतन (३) अक्रिय (४) अव-
गाहनादान

४ पुद्गलास्तिकायना गुण ४ (१) स्पी
(२) अचेतन (३) सक्रिय (४) मिळण विख-
रण-पूरणगलन.

५ कालद्रव्यना गुण ४ (१) अरुपी

(९)

(२) अचेतन (३) अक्रिय (४) नवापुराण
वर्तना लक्षण.

६ जीवद्रव्यना गुण ४ (१) अनंतज्ञान
(२) अनंतदर्शन (३) अनंतचारित्र (४) अ-
नंतवीर्य.

ए छ द्रव्यना गुण कहा ते नित्य ध्रुव नपै छे
उ द्रव्यना अनुक्रमे चार चार पर्याय कहे छे
१ गर्मास्तिकायना (१) खंप (२) देश
(३) प्रदेश (४) अगुरु लघु
२ अधर्मास्तिकायना (१) खय (२) देश
(३) प्रदेश (४) अगुरु लघु.

३ शाकाशास्तिकायना (१) खम (२) देश
(३) प्रदेश (४) अगुरु लघु.
४ शुद्गल द्रव्यना (१) वर्ण (२) गध

(१०)

- ३ रस (१) स्पर्श (जगुरङ्ग-
घु सादित)
- ५ मान्द्रधना (१) अतीत (२) भवागत
(३) वर्तमान (४) अगुरु लघु,
- ६ जीवद्वयना (१) अव्याप्ति (२) अनवगाद
(३) अमूलिक (४) अगुरुरु लघु
- ७ ॐ द्रव्यना पर्याय रक्षा
हवे ॐ ॐ द्रव्यना गुणपर्यायनु साम्
प्यमहे हैं.

अगरलघु पर्याय उए द्रव्यमा सरखेहे
हैं. अर्थी गुणे करी पाच द्रव्यनु साधर्म्य छेहे
एक पुद्गल द्रव्यमा भर्ती गुण नथी का
रण के पुद्गलद्रव्य नपी है. तथा अचेतन गुण
के गर्मानिराय, अधर्मानिराय, अ-

काश, पुदगल अने काल ए पाच द्रव्यनु सा-
 वपिष्ठु छे जीवद्रव्यमा अचेतन गुण नयी.
 • चेतनालक्षणोजीवः इति वचनात्' सक्रियगुणे
 करी जीव तथा पुदगल ए वे द्रव्यनु व्यव-
 हारयी सापर्म्य छे कर्म थकी रहित-सिद्ध
 जीवोमा सक्रिय गुण नयी, ताकीना चार
 द्रव्यमा सक्रिय गुण नयी. गवि सहाय गुण
 एक धर्मास्तिकायमा उे ताकीना पाच द्रव्य
 मा नयी. स्थिति सहाय गुण एक अपर्मा-
 स्तिकायमां छे, बीजा पाच द्रव्यमा नयी,
 तथा भरगाढना गुण ते एक आकाशास्ति-
 काय द्रव्यमा उे, ताकीना पाच द्रव्यमां नयी.
 वतेना गुण एक काल द्रव्यमा छे, बीजा
 पाच द्रव्यमां नयी मिलण विवरण गुण पु-
 दगड द्रव्यमा छे, ताकीना पाच द्रव्यमा नयी

(१२)

तपा झान गुण ते एक जीवद्रव्यमा छे
याकीना पाच द्रव्यपा नथी ए मूळ गुण
कोइ द्रव्यना कोइ द्रव्यमा भलता नथी।

एक धर्मान्वितकाय, रीतु अधर्मास्ति
काय, रीतु आनाश, ए त्रय द्रव्यना त्रय
गुण तया चार पर्याय समावा उे, अने अहं
अचेतन, अक्रिय ए त्रय गुण फरी काल
न्य पण ए समान छे।

हरे ए ठ द्रव्यना गुणपर्याय स्वा
जाणवाने सूनपाठ-गाथा कहे उे

परिणामि जीव मुक्ता, सप्त
एग खित्त किरिआय ॥ पिच्चं का
कत्ता, सद्ववगय इयर अप्पवेसे

अर्थ. निश्चयनये उए द्रव्य परि-
णामी छे कारण के धर्मास्तिकाय पोतानामां
निश्चयनये परिणमी रहु छे, पण वी-
जा पाच द्रव्यमा परिणमतु नर्थी. बीजुं अ-
धर्मास्तिकाय द्रव्य पण निश्चयनये पो-
ताना स्वरूपमा परिणमी रहु छे, पण वी-
जा पाच द्रव्यमा परिणमतु नर्थी. आकाशा-
स्तिकाय पण निश्चयनये पोताना स्व-
रूपमाज परिणमे छे. काल द्रव्य पण निश्चय
नये पोताना स्वरूपमां परिणमी रहु
छे, पण वीजा पाच द्रव्यमा निश्चयनये
परिणमतु नर्थी. जो निश्चयनये जीर
पुद्गल द्रव्यमा परिणमे तो कोइकाले
कर्म थकी रहित थइ सिद्धिपद पामे नही.
च्यवटारनये जीव नाटकीयानी पेडे एकेढी,
बेंखी, तेरेंद्री, चौरेंद्री, देवता, मनुष्य, तिर्यच

सिंकाय अने काल, ए पार द्रव्य अजीव
छे. कारण के ज्ञान, दर्शन, चारित्र, नप
वीर्य भने उपयोगरप जीवनु लक्षण तेमनामा
नथी. जीव द्रव्यते जीव छे. ' चेतनालक्षणो
जीव इतिरचनात् '

छए द्रव्यमा पुद्गल द्रव्य मृतिमत छे,
अने नेप पाच द्रव्य अमृत ते धर्म, अधर्म
आकाश, अने याळ ए चार द्रव्य अमृत छे.
जीवद्रव्यना वे भेद हे. सिङ्ह अने ससारी-
तेपा सिद्धना जीर अमृतिष्ठ ते अने ससारी
जीवो क्षमोषाधियी मृतिमत छे. निधयनपे
जीव अरुपी हे माँट अमृति कहेवाय हे, अने
व्यवहारनये करी टेकता, मनुष्य, सीर्वच अने
' रप जीवना पाचसे त्रेसठ (५६३)

भेद थाय छे, ते सर्व मृत्तिरूप जाणवा.
ब्यवहार नयथी पुद्गल द्रव्यना अनता पर-
माणुआ मली खंव बने छे, त्यारे नजरे
ढीडामा आवे छे, माटे एने मृत कहेवाय छे.
एछ द्रव्यना स्वरूपमा मृत अमृतनो विचार कर्यो.

हवे सप्रदेशी अने अप्रदेशीनो विचार
फहे छे.

छ द्रव्यमा पाँच द्रव्य सप्रदेशी छे अने
एक कालद्रव्य अप्रदेशी छे, धर्मस्तिराय
असर्व्यात प्रदेशमय छे, अधर्मस्तिकाय
असरव्य प्रदेशमय छे, आकाश द्रव्य अनत
प्रदेशी छे. जीवद्रव्य अमर्यात प्रदेशी छे
जीव द्रव्य अनता जाणवा. तथा पुद्गल
परमाणुआ (उपचारथी) अनत प्रदेशी छे,

अने एक परमाणुआमा अनता पर्याय राहा हो परमाणुआ मनत छे ए रीति पाच द्रव्य सप्रदेशी छे अने रालद्रव्य अप्रदेशी छे, एनो गणित काल तो उपाद व्यपर्स्प पलटण स्वभावे अहो द्वीप प्रमाण जाणरो ग गीते पहुँ द्रव्यमा सप्रदेशी अने अप्रदेशीनो विचार कही।

इथ पहुँद्रव्यमा एक अनेकनो विचार कहे हुए

पहुँ द्रव्यमा नण द्रव्य एक अने त्रण द्रव्य अनेक जाणरा कारण वे पर्यास्तिराय द्रव्य असरयात प्रदेशी, लोकव्यापी एक जाणु, तेमज अवर्यास्तिराय द्रव्य असरयात प्रदेशी लोकव्यापी एक जाणबु तेमज आसासास्तिराय द्रव्य पण अनत प्रदेशी

“ “ “ एक जाणु, पण ए त्रण द्रव्य पहुँचीए, अने जोन द्रव्य लोक

ध्याणी अनंता जाणवा, ते एकेक जीवना अ-
 सरयाता प्रदेश छे, अने एकेक प्रदेशे अन-
 ती कर्मनी र्गणाना वोकडा लाग्या छे.
 तथा जीव थकी रहीत पट-पट-दट प्रसुर
 मीजा पुद्गलना चुटा स्कध पण अन
 ता छे, माटे जीव थकी पुद्गल डब्य अनंत-
 गुणा जाणवा, अने एकेकी कर्म र्गणामा
 अनत पुद्गल परमाणुआ रखा छे, ते परमा
 णुआ डब्य थकी सदाकाल शाखना छे, माटे
 एकेक परमाणुआमा अनंता उत्पाद व्ययरूप
 कालना समय अतीतकाले न्यतीत थड
 गपा, तथा दुजी पण अनंता समय आव्हने
 कारे व्यतीत थदी, अने परमाणुआ तो तेना
 तेन सदाकाल शाखता छे. माटे पुद्गल डब्य
 थकी पण कालद्वयना समय अनंता जाणवा.

ए रीते जीव पुद्गल अने काल ए त्रण मे
नेक कहाँए

ए रीत एक अनकना विचार पड़व्य
मा कथो,

पड़द्रव्यमा क्षेत्र अने क्षेत्रीनो
विचार दर्शावि छे

छ द्रव्यमा आकाश द्रव्य क्षेत्र छे अने
गक्कीना धर्म, अधर्म, काल, पुद्गल, अने
आमा, ए पाच द्रव्य आकाश क्षेत्रमा रहे
छे माडे क्षेत्री जाणगा, ते क्षेत्री रीते रखा
छे ते गतापि छे आसनी पापणमो एक बाल
प्रह्लण करीने तेन। खट [भाग] एवा करी-
पांक एक खटना वे खट न थाय, एवा सूक्ष्म-

। प्रमाणे आकाश क्षेत्र लइए, तेन
आकाशना असरायाना प्रदेश रखा छे, अन-

तेष्टामा धर्मस्तिकायना असंगयात प्रदेश छे,
 तथा अवर्ममितकायना पण असंगयात प्रदेश
 छे अने निगोटीया गोळा पण असरयाता
 राग छे ते सर्व पट्ट्या मुकीने ते माहेलो एक
 गोळो लडए ते एक गोळामा असंगयाती
 निगोद रही छे ते असंगयाती निगोद पडती
 मुकीने ते माहेथी एक लडए, ते एक निगो-
 दमां पण अनता जीव रहा छे, ते जीवनी
 गणनी चतावे छे, एक भतीतकाल छेडा रहीत
 अनंतो गयो, तथा अनागत काल ते पण छेडा
 रहीत छे, ते सर्वेना जेटडा समय थाय, तेनी
 साथे उर्तमान कार्नो एक समय पण गणनो
 पटले अतीत अनागत अने उर्तमानकालना
 जेन्त्रला समय थाय, ते सर्वने अनंतगुणा करीए
 पटला जीव एक निगोदमा रहा छे, ते सर्व

जीव पर्यामुर्तिने ते माहेथी यात्र एव गी
ल्लुह, ते एक जीवना अमल्याना प्रदेश है,
मये एक्या प्रदेश अनन्ती वर्षनी वर्गणा
लागी है, ते संद वर्गणाभ्यो पढती मुर्तिने
माहेथी एक वर्गणा सृष्टि, ते एव वर्गणा
अनन्ता पुद्गल परमाणुभा रथा है
उतावे है

प्रथम परमाणुभाना रे खेद है, एक उ
परमाणु अंत वीजा व्यधना, वरी स्फुरन
खेद है, पव जीव सटीत खथ, अने वीजा च
रहीत रथ, ते परपट दृह प्रमुख अर्जी ग
जाणवा त्या प्रथम जीव सहित ख इनो वि
लखीए छीए,

रे परमाणुभा खेला धाय ते यार
उरथ बहुवाय है, वरण परमाणुअ

થા થાય, તેવારે ચ્યાણુક ખંધ રહેવાય છે, એમ
 અમલ્યાતા પરમાણુઆ ભેલા થાય ત્યારે
 પ્રસરયાતાણુક ખંગ કહેવાય છે, એટલા
 પરમાણુઆના ખંધ થાય ત્યા સુધીના ખંધ તે
 સુર્ગ જીવને ગ્રહણ કરવા યોગ્ય થતા નથી
 એટલા પરમાણુઆના ખંધને કોઇ જીવ
 ગ્રહણ કરી શકતો નથી, પરતુ અભવ્ય રાગેના
 જીવ ચુમ્પોચરમે બોલે છે, તે થકી અનત
 શુણાધિક પરમાણુઆ જ્યાર ભેલા થાય તે
 વારે ઔદ્દારિક શરીરને લેવા યોગ્ય વર્ગણા
 થાય છે, તે ઔદ્દારિકની વર્ગણાથી અનત
 શુણાધિક દલીયા જેવારે ભેલા થાય તે વાર
 વૈક્રિય શરીરને લેવા યોગ્ય વર્ગણા થાય
 છે, વૈક્રિયની વર્ગણાથી અનત શુણાધિક

जीव चारणनिमा जन्म मरणे देवता, मनुष्य, तिर्यक, अने नारकीरप नवा नवा भर धारण कर छे, माटे अनित्य पर्हीए. तर व्यग्रहारन्ये पुद्गल द्रव्यना खंघ पण साँ अनित्य जाणवा, रारण के पुद्गल द्रव्यना खंघ रने हो छे. अने पाठा विघरे छे, माँ अनित्य जाणवा. द्रव्यास्तिकायना मते नीँ असरयात प्रदेशी नित्य सद्गुरुशाळ गाथवे छे, अन अगुद्ध अनित्य पर्याये जीव अग्ना खतो जाणवो कारण के अगुद्ध अनित्य पर्याये जीव चार गतिरप ससारमा उत्पाद्यपरप पलटण स्वभावे दर्ते छे. ते आरं रीति-मनुष्य भवना पर्यायनो व्यय थयो अदेवताना भवना पर्याएनो उत्पाद थयो, बर्तिर्यच भवना पर्यायनो व्यय थयो, अने म

તુધ્ય ભરના પર્યાયનો ઉત્પાદ થયો. એમ જીવ અશુદ્ધ અનિત્ય પર્યાયે ઉત્પાદ વ્યવરૂપ એકણ સ્વભાવે ચાર ગતિરૂપ સંસારમા સડા-કાળ બર્તે છે, અને જીવ એનો એ ધ્રુવપણે શાખતો છે, તથા જીવના જન્મ મરણ થાય છે કે સર્વ ઉત્પાદ વ્યયે થાય છે, માટે દ્રવ્યાસ્તિકનાને જીવને નિત્ય સમજવો, અને પર્યાયાસ્તિક નાને કરી જીવને અનિત્ય સમજવો. એ રીતે પડુ દ્રવ્યમા નિશ્ચય વ્યવદ્ધારે નિત્યાનિત્યપણુ જાણતુ.

એ દ્રવ્યમા જીવદ્રવ્યને પાંચ દ્રવ્ય કારણ રૂપ જાણતા, અને જીવ દ્રવ્ય અકારણ જાણતું. જેમફે જીવકર્તા અને તેને ધર્માસ્તિકાય કારણ મળ્યુ, તેવારે જીવને ચાલવા હાલવા રૂપ કાર્ય થયું. તેમજ જીવકર્તા અને

तेने वधमांसिकाय रूप कारण मलयु, ते
 वारे जीवने स्थिर रहवा रूप कार्य नीपञ्चु
 तेमज जीरकर्ण अने तेने आकाशामित्राय
 कारण मलयु तेवारे जीवने अवगाहना रूप
 कार्य वन्यु तेमज जीरकर्ण अने तेने पुद्
 गदामित्राय रूप कारण मलयु तेवारे जी
 वने समय समय अनता कर्म स्फुर्यो लेवा
 सिरववा रूप कार्य नीपञ्चु तेमज जीव द्र
 व्यकर्ण अने तेने काल द्रव्य कारण मलयु,
 तेवारे नवा पुराणा र्वनारूप कार्य नीपञ्चु
 ए रीते पह द्रव्यमा जीवने पाचे द्रव्य कार
 ण पषे जाणवा, अने जीव पोते अकारण छे
 घणी प्रतियोगा सक्षेपे एटलु छे के :
 द्रव्यमा एव जीव द्रव्य कारण छे, वारीन
 धर्मास्तिराय, वधमांसिकार, आकाशास्ति

काय, पुद्रगलास्तिकाय, काल, ए पाच द्रव्य
अकारण छे, ए बात पण यणी रीति मळती
छे माटे बहुश्रुत कहे ते न्हरै, आगम सार
ग्रथन्तर्चानी व्यानमाँ तो एम आवे छे के जी-
व द्रव्य कारण, अने पाच द्रव्य, अकारण
एम संभरै छे.

निश्चयनये छ ए द्रव्य पोते पोताना
स्तरपनाँ कर्ता छे, अने व्यवहार नये
अनेक नयनी अपेक्षाए जोता तो एक जीव
द्रव्य कर्ता अने पाच द्रव्य अकर्ता जाणगा.
ते आवी रीते व्यवहार नयना छ भेद छे,
त्याँ प्रथम शुद्ध व्यवहारनयने जीव शुद्ध
निर्मल, कर्म यकी राहित एउ पोतानु स्वरूप
नीपनाबबु तेनो कर्ता जाणवो. एटछे जे जे
(चालु) गुणठाणानु ओढबुँ, अने उपरना

गुणठाणानुं ऐजु, तेने गुदव्यवहारनपे
 फक्तीं कहीये. पटेले गुणठाणे अनतानुधरिनी
 चोरडी हनी ते खपावी अने चोये गुणठाणे
 आच्यो त्यारे जीरने पक्क समरिन गुण म
 काशिन ययो, अने अस्त्यारानीनी चोरडी
 खपावी त्यारे पासमुँ गुणठाणु प्राप्त करी
 देगविरनि गुण प्राप्त यर्या तया मत्याराया
 नीनी चोरडी खपावी तेवारे छटे मानमे
 गुणठाणे सर्वविरनि गुण पाच्यो. आगीआरम्भे
 नारमे गुणठाणे पहोची रागद्वेष रूप मोहनीय
 कर्म खपावी नारमे गुणठाणे घातीश्वर्मनो
 क्षय करी तेरमे गुणठाणे केवलक्षान
 पाच्यो ए रीने पूर्वता गुणठाणानु
 - ०६, अने डपरना गुणठाणानु ग्रहण
 + १५ तेने शुद्ध व्यवहार नय जाणवौ

जीव कर्मरूप अशुद्धताने टाळे, अने गुण रूप शुद्धताने नीपजावे, ते जीवमा शुद्ध व्यवहार नय जाणवो.

हवे बीजा अशुद्ध व्यवहारनये जीवमा अशान रागद्वेष, अनादिकाळना शुद्ध थइ लाग्या छे, तेथी जीवमा अशुद्धपणु जाणनुं. ए अशुद्धताए जीवने समय समय अनंतां कर्मरूप दक्षीआ सत्ताए लागे छे. ए अनादिकालनी अशुद्धता जाणनी ए अशुद्ध व्यवहारनये जीवकर्त्ता छे तेनुं स्वरूप जाणनु. हे श्रीजा शुभ व्यवहार नये जीव दान, शील, तप, भाव, पूजा, प्रभावना, सेवा भक्ति साधन्यवात्मलय, विनय, वैयाकृत्य, उपकार, करुणा, दया, यन्ना, मर्दुं मनोहर वचन वोङ्गु, अने सर्व जीवनुं रुदुं चितव्यु

ए आदि अनेक प्रकारनी जीवने शुभ वर्ण-
रणी जाणवी, ए शुभ व्यवहारनये जीव-
कर्ता कहीये, चोथा अशुभ व्यवहार नये
जीव क्रोध, मान, मापा, सौम, विष्य, व-
पाय, हास्य, रति, अरति, भय, शोष, दु-
गछा, निद्रा, चाडि, ममता, दिंसा, मृपा।
अदत्त, मैयुन, अने परिग्रह, ए आदि अनेक
प्रकारनी जीवने अशुभ करणी जाणवी
ए अशुभ व्यवहारनये जीवकर्ता जाणवो।

हवे पाचपा उपचरित व्यवहारनये घर-
कुट्टन, परिवार, हाट, बखार, गाम, गरास-
देश, चाकर, दास, दासी, बाणोत्तर, राज्य-
पाडी, घन, भाराम, कुचा अने सरोवर,
दि अनेक प्रकारनी वस्तु ते पोताना पू-
पत्यतपणे झुढी छे, तेने जीर अज्ञानप-

पोतानी करी जाणे छे, तेने मारुं मारुं करतो
फरे ते, तेनी वृद्धि देखी रुशी याय छे, तेनो
नाश देखी रडे छे, कुटे छे, शोक करे छे, अने
तेने माटे पोताना प्राणनो पण नाश करे ते, तेने
पोतानु मानी तेनो कर्चामानी जीव पापनो
अधिकारी पोते याय छे, ए रीति उपाचरित
ज्यवहारनये जीवने कर्चा जाणवो.

इये छहा अनुपचरित ज्यवहारनये जीव
शरीर आदि परवस्तु, जे पोताना स्वमूलयी
प्रत्यक्षपणे जुटी छे, पण परिणामिक भावे
लोलीभूतपणे एकठी मळी रही छे, तेने
जीव पोतानी करी जाणे छे. एवा शरीरने
जीव अनतिवार पाख्यो, अने अनतिवार ते
शरीरनो त्याग कर्यो, तोपण अझानपणे जीव
तेने पोतानुं करी जाणे छे, तेने वास्ते अ-

नेक प्रकारनी टिसा फरे छे, आमत्य बचन गोले छे, अद्द्य गटण घरे छे, पण अडे ते वस्तु पोतानी थनी नर्थी पण पाप करी जी व भारे थाय छे, ए रीने अनुपचरित व्यवहारनये जीरकर्ता जाणगो, ए रीने छ प्रकारे व्यवहारनयने मन नीवने कर्तापणु देखाढपु.

सञ्चागयइपर-फटेता सर्वगत एटछे सर्वज्यापी द्रव्य केझला, अने इयर फटेता देवव्यापी द्रव्य, छ द्रव्यमा केझला पामीए ते कहे छे.

पहङ्दव्यमा एक आकाशद्रव्य, सर्व लोकालोकव्यापी छे, अने पार इव्य-देश व्यापी जाणवा, पर्मास्तिकाप नसरव्यात लोक व्यापी जाणु. अपर्मास्ति-

काय द्रव्य असंख्यात प्रदेशी लोकव्यापी
जाणु, तथा कालद्रव्य गणितकाल ते अढी-
ढीपत्त्वापी जाणु, तथा जीवद्रव्य पण लो-
कव्यापी जाणु, तथा पुदगलद्रव्य पण लोक-
व्यापी जाणु, अकेक जीवने सत्ताए अ-
नंता कर्मरूप पुदगल परमाणुआ-स्फंध ला-
ग्या हे. तथा ते यकी वीजा लुटा लोक-
व्यापी पुदगल परमाणुआ-स्फंध पण अ-
नंता हे, ते सर्वे लोकव्यापी हे. ए रीतेह
पाच द्रव्य देशव्यापी जाणारां अने एक आ-
काशास्ति काय द्रव्य, अनत प्रदेशी, सर्वव्या-
पी जाणु, ए रीते उ द्रव्यमा सर्वव्यापी त-
था देशव्यापीनुं स्वरूप जाणु,

उ ए द्रव्य अपेक्षा-अपेक्षी एटके
फीह द्रव्य वीजा द्रव्यमां मवेश करी भली

जता नपी, अने एक वीजानु कोइनोरनु काम पण करता नर्ही, जेंम कोइ दुर्सान उपर पाच वाणीतर रहेता होय ते सर्व पोतपोतानु कार्य फरमाव्या मुजव कर्या करे, अने सहु सहुनी मर्यादामा चाले, तेम लोकमा छ द्रव्य भेडा गदा हे, छ द्रव्य पोतपोतानी मर्यादामा बर्ते हे, पण निश्चयनये कोइ पण वीजामा मादोपाहे भडता नपी, माटे अपवेशी जाणदा, ए रीते एह द्रव्यनु स्वरूप नार भागे भव्य जीवोए जाणु.

इरे एकेका द्रव्यमा आठ पथ कहे हे.

आठ पक्षना नाम-एक नित्य, वीजे अनित्य, नीजे एक, चोयो जनेक, पांचम रात्, छठो असत्, सातप्पो वक्तव्य, आठम अवक्तव्य.

धर्मास्तिकायना चार गुण नित्य हे. तथा पर्यायमा धर्मास्तिकायनो एक खंड नित्य हे. राकीना देश, प्रदेश, अने अगुरु लघु, ए नण पर्याय अनित्य हे. अधर्मास्तिकायना चार गुण, तथा एक लोकप्रमाण खंड नित्य हे अने वाकीना नण पर्याय अनित्य हे. आ-काशास्तिकायना चार गुण, तथा लोकालोक प्रमाण खंड नित्य हे, अने देश, प्रदेश, तथा अगुरु लघु, ए नण पर्याय अनित्य हे. काल-द्रव्यना चार गुण नित्य हे, अने चार पर्याय अनित्य हे. पुद्गल द्रव्यना चार गुण नित्य हे, अने चार पर्याय अनित्य हे. जीव द्रव्यना चार गुण, अने नण पर्याय नित्य हे, अने एक अगुरु लघु पर्याय, अनित्य हे. ए रीते नित्यानित्य पक्ष फसो.

(४६)

દ્વે પર દ્વયમા એવ અનેર ન
બનતે છે

એક પર્માસ્તિકાય, રીજો અપર્યારિતસપિ
એ ને દ્વયના ગ્વથ લોકાકાશ મ્રમાણ એક
છે અને ગુણ અનતા હે. આકાશ દ્વયનો
લોકાકાશ મ્રમાણ ર્વધ એક છે. અને ગુણ
અનતા છે, પર્યાય અનતા છે, પ્રવેશ અનતા
હે, માટે અનેર છે કાલ દ્વયનો વર્વનારા
ગુણ એક છે, અને રીજા ગુણ ભ્રનતા હે,
પર્યાય અનતા છે, સમય અનતા છે. કેમરે
અવીતરાંત્રે અનતા સમય ગયા, અને અનાગત
યાંત્રે અનતા સમય આવશે, તથા ષર્તમાનરાંત્રે
સમય એક છે માટે અનેર પણ હે.
શુદ્ગળ દ્વયના પરમાણુઆ અનતા છે
એક એક પરમાણુમા અનતા ગુણપર્યાય હે.

ને અનેકપણુ છે, અને સર્વ પરમાણુમા પુદ્ગાલ-
પણું તે એકમ છે. જીવ દ્રવ્ય અનતા છે, એ-
કેકા જીવમા પ્રદેશ અસંરથાતા છે, તથા ગુણ
અનતા છે. ર્ધાર્ય અનતા તે તે અનેકપણુ
છ, પણ જીવિતદ્વય સર્વ જીવોમા એક સ-
રસું તે, માટે એકપણુ છે.

ઇહ શિષ્ય પુછે તે કે—સર્વ જીવ એક
સરળા છે તો મોક્ષના જીવ સિદ્ધ પરમાનદ
મયી દેખાય છે, અને સસારી જીવ કર્મદશ
પડયા દુઃখી દેખાય છે, તેનુ કેમ ? તેને ઉ-
ચર આપે છે કે—નિશ્ચયનયે તો સર્વ જીવ
સિદ્ધ સમાન છે, માટેજ સર્વ જીવ કર્મ ખ-
પારી સિદ્ધ થાય છે, તૈથી સર્વ જીવની સત્તા
એક છે, વર્તી શિષ્ય પુછે છે કે જો સર્વ જીવ
સિદ્ધ સમાન ફાદો છો તો અમબ્ધ જીવ પણ

सिद्ध समान ते एम ठर्यु, अने तेतो मोळे
जाता नथी, तेजु केम ? तेने उत्तर आपे हे
के अभव्य ने र्हम चीकणा छे, अने अम
च्यपा, परावर्त र्हम नथी, तेथी सिद्ध थता
नथी, अभव्यने र्हमनो सवध अनादि अ
नतमे भागे छे, तेथी कोड फाले ते मोळा
जाने नहीं, भव्य जीवपा परावर्त र्हम ले
माटे कारण सामग्री मलयाली पञ्चवण पामि
छे, अने गुणथेणि चढीने सिद्ध थाय छे.
आत्माना आठ रुचक प्रदेश, निश्चय नयथी
भव्य तथा अभव्य सर्व जीवोना सिद्ध स
मान छे, माटे सर्व जीवनी सचा एक सर-
खी छे, ए आठ रुचक प्रदेशने कर्म तील
कुल लागतो नथी, ते आचारागम्भूनी थी
। १ ठृत टीकाना कोकुरिजय अ

ध्ययनमा प्रथमोदेशके कहु ते,

इये सत् तथा असत् पक्ष कहे ते. ए
उ द्रव्य स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल, अने स्व-
भावपणे सत् एटले छता छे, अने परद्रव्य
परक्षेत्र, परकाल, अने परभावपणे असत् ए-
टले अछता छे. तेनी रीत यतायवाने माटे ए
पह द्रव्यनो द्रव्य, क्षेत्र, काल, अने भाव,
कहीये ग्रीए.

द्रव्यगुणसमुदाइ
खितओगाहवटणाकालो

गुणपञ्चाय पवच्चि
भावोनिअवथ्थुधमोसो ॥१॥

धर्मास्तिकायनो मूल गुण चलण सहाय
पणो ते स्वद्रव्य,

स्थिति सदायपणो ते स्वद्रव्य जाणवो. आकाशस्तिकायनो मूल गुण अनुगामपणो ते स्वद्रव्य, कालद्रव्यनो मूल गुण वर्तना उक्षणो ते स्वद्रव्य जाणवो. तथा पुढ़गळ द्रव्य नो मूलगुण पूरण गल्लनपणो ते स्वद्रव्य जाणवो. जीव द्रव्यनो मूल गुण ज्ञानादिकचेतना उक्षणपणो ते स्वद्रव्य, ए छ द्रव्यनो स्वद्रव्यपणो कहो.

हवे पह द्रव्यनो स्वस्त्रेत कहे छे—धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकायनो स्वस्त्रेत असख्यात प्रदेशमय जाणवो आकाश द्रव्यनो स्वस्त्रेत अनति प्रदेशमय जाणवो. काल द्रव्यनो स्वस्त्रेत ममयत्प छे पुढ़गळ द्रव्यनो एक परमाणु छे. परमाणुआ अनती जीव द्रव्यनो स्वस्त्रेत एक जीवना अस-

रथाता प्रदेश छे.

हे स्वकाळ ते पहुळद्रव्यमा अगुरु लघु-
नो छे. छए द्रव्यना पोत पोताना गुण पर्याय
ते सर्व द्रव्यनो स्वभाव जाणवो. साराशके
धर्मास्तिकायमा पोतानाज द्रव्य, क्षेत्र, काल,
भाव छे पण वीजा पांच द्रव्यना नयी. तथा
अधर्मास्तिकायमा पण पोतानाज द्रव्य,
क्षेत्र काल, भाव छे पण वीजा पाच द्रव्यना
नयी. आकाशास्तिकायमा आकाशना ज द्र-
व्यादिक चार छे, पण वीजा पाच द्रव्यना
नयी. तथा काल द्रव्यमा कालना द्रव्या-
दिरु चार छे, पण वीजा पाच द्रव्यना नयी.
पुद्गल द्रव्यना द्रव्यादि चार पुद्गल द्र-
व्यमा छे, पण वीजा पाच द्रव्यना नयी तथा
जीर द्रव्यना द्रव्यादिक चार ते जीव द्र-

(५२)

•यमाँ छे, पण गीना पाच द्रव्यना नर्थी।
 “गुणपर्यायरत्तद्व्यम्—” द्रव्यर्थी अभेदपणे
 गुणपर्याय होय तेन द्रव्य कहे छे तथा स्व-
 वर्मनो आधारवतपणो तेन क्षेत्र कहे छे, अने
 उत्पात व्ययनी वर्तना तेने काळ कहे छे,
 तथा विशेष गुण परिणति, स्वभाव परि-
 णति, पर्याय प्रमुख ते स्वभाव कहीए।

अत्र एक-भेद स्वभाव, वीजो-भभेद
 स्वभाव, श्रीजो-भव्य स्वभाव चोथो-अभ-
 व्य स्वभाव अने पाचमो-परम स्वभाव, ए
 पाच स्वभाव जाणवा। तेपा द्रव्यता सर्व ध-
 मने पीतपोताना स्व स्व पार्य करनेकरी भेद
 स्वभाव छे, अने अवस्थानपणे अभेद स्व-
 भाव छे, अणपटण स्वभावे अभव्य स्व-
 भाव छे, तथा पलटण स्वभावे भव्य स्वभाव

(६३)

। ते द्रव्यता सर्वं धर्मं ते विशेषं धर्मने अनु-
यायीज परिणमे, ते माटे ते परम स्वभाव
कठीए. ए सामान्य स्वभाव जाणवा. ए रीते
. उए द्रव्य स्वरुणे सत् उ अने परगुणे
असत् उ.

- हवे छए द्रव्यमाँ चक्कच्य तथा अचक्कच्य
पझ कहे छे.

ए छ द्रव्यमा अनंता गुण पर्याप्त ते
बक्काय एटले वचने कहेवा योग्य ते, अने
अनंता गुणपर्याप्त ते अचक्कच्य एटले वचने
करी कही शक्ताय नही एवा उ. केवळ
ग्रानी महाराजे ग्राने समस्त भाव दीडा
तेना अनंतमे भागे जे बक्कच्य एटछे कहेवा
योग्य हता ते क्षमा. वली तेनो पण अनंतमो

(५८)

प्रमाण गुण्या होना। भर्तुरपासा भागे राष्ट्र
आगम रहा हे. ए उठवला आउ दूर क्षमा।
हे नियंत्रण भ्रमिय परापी चकुर्भर्गी
उपनी ने घनार हे. जेनी भावि नर्थी भने
अत नर्थी ते अनादि अनन्त पदेलो मागो
जाणगो तथा जेनी भावि नर्थी पण भस
हे, ते अनादि सात धीजा माणी जाणदो.
तथा जेनी भावि पण ते अन्ते अनं पण ते
ते साई शाव गोमो भागो जाणदो. यज्ञी
जेनी भावि हे, पण भन नर्थी, ते सादि अनन्त
नामे घोयो मागो जाणदो.

इंवे ए चार भागाठव्योपा ऐरी रात
खतोर हे, ते घनावे हे

जीव देव्यमः शानादिक गुण त अनादि
अनन्त हे. नित्य हे. भव्य जीवने क्वाप्ते साध्ये

(६५)

नर्म अनादि छे. पण सिद्ध धाय ने त्यारे
कुने आवे छे, तेथी ए अनादि सात वीजो।
भागो जाणवो, देवता, मनुष्य तिर्यक अने
नारकी प्रमुखना भव ऊरगा, ते सादि सात
भागो उे जे जीव कर्म घपावी पोक्से गया
नी मोक्षपणे आदि छे, अने पाढु ससारमा
कोड बन्हत आरबु नथी माटे अंत नथी,
तेथी ते आथ्रयी सादि अनत भागो उे. अभ-
य जीव मार्गे कर्मनो समग्र अनादि अनत
ले जीर द्रव्यना चार गुण अनादि अनत
छे. जीरने कर्म साथे संयोग ते अनादि सात
छे, पण अभव्यने नहीं अभव्यने कर्म संयोग
अनादि अनत उे.

धर्मास्तिकायमा चार गुण अने पाचमो

(५६)

पांगो नपी देण, प्रदेश, भने अगुरु एष
ते साडि सात भागे हि तथा सिउना जीवो,
भर्मालिकापना दो प्रदेशे रखा हे, ने प्रदेश
आर्थीने सादि भनत भागा हे. घर्वास री
अपर्मालिकापना एण चाँभगो जाणनी.

आकाश इच्छापां गुण तथा गैर भनादि
भनैत हो रीजो भोगो नपी. तेना देण, प्रदेश
तथा अगुरु एष, साडि मात ऐ. तथा
सिउनो जीवनी साये हो गरव ते सादि
भनतपा भाग हो, पुद्गल इच्छापां गुण, भनादि
अनैत हो जीव पुद्गलनो भरप अभद्यने
भनादि भनत ऐ, भने भल्ल जीरने अनादि
सात हो, पुद्गलना यथ सर्व सादि सात
हो ले स्वय उवाया ने रिथति प्रयाणे रही
ग्वरे हो, रगी नग घंगाय हो साडे

अनंत भागो पुद्गल द्रव्यमा नयी.

काळ द्रव्यमा अनादि अनंतमा भाँगे
चार गुणो हे. पर्यायमा अतीत काळ अनादि
सात हे. अने वर्तमानकाळ सादि सात हे.
तथा अनागत काळ सादि अनत हे. ए काळनु
स्थरूप सर्व उपचारथी हे, ए रीते काळ द्र-
व्यमा चौभेंगी जाणवी.

हे द्रव्य, क्षेत्र, काल, अने भागमाँ चौ-
मगी कहे हे.

जीव द्रव्यमा स्थद्रव्यथी ज्ञानादिक गुण
हे ते अनादि अनत हे.

स्वक्षेपे जीवना मदेश असंरयाता हे. ते
सादि सांत हे. तदुद्वर्तनापणे फरे हे, प हेतु
थी, अथवा अवगाहना माटे सादि सात हे, पण

(५०)

हे, रियान पार सादि मात्र ए अनागत
पार सादि भनेत ऐ,

पुदगर इच्छमा मद्राय जे पूरण गष्टन-
पर्ह ले ते अनाडि भन्हा गे भन्हे कर्मेष
परमाणु ते साठि रात ले रक्षा अगुण
म्बू ते भनाडि भनत ऐ अगुण अण्हनो उ-
पज्ञो रिणगरो ते सादि सान ऐ. साभोप
ते गुण चार, अनाडि अनत ले, वर्णाडि
पर्हाय चार, घण, गंग, रस अने स्पर्श ते
सादि सात ऐ ए इच्छाडि चारनी पुदगड
इच्छमा खौभर्गी जाणवी

एरे ए इच्छना संरेष आभर्याने चौभर्गे
देखाडे ऐ.

तेमा प्राप्त असारा इच्छ ले नेमो अ-
रोकाशमा पार इच्छमानु फोड एन इ

पुद्गल साथे मळेगा सक्रिय ते, अने पुद्गल
इव्यापी रहित थाय त्यारे आक्रिय ले पुद्गल
द्रव्य सदा सक्रिय ते.

हर्व एक अनेक पक्षी निथय ज्ञान
कहेवाने नय कहे ते, सर्व इव्यमां अनेक
स्वभाव ते, ते एक वचनथी कदा जाय नहीं
मांड मांहोमाहे नयवडे सज्जेपपणे कहे, ते.

द्रव्यनो अनादि अनत संबध जाणवो.
 आकाश मदेशनी साथे पुदूगल परमाणुनो
 सादि सात संबध जाणवो. एम आकाश
 द्रव्यनी पेटे घर्मस्तिकाय तथा अघर्मस्तिकाय
 द्रव्यनो पण संबध जाणवो. निश्चयनये
 छ ए द्रव्य स्वस्वभावे परिणमी रद्या छे ते
 परिणमीपणो सदा शाखतो छे ते माटे अनादि
 अनत उ,

जीव द्रव्य तथा पुदूगल द्रव्य वैने मळी
 संबधपणाने पामे छे अनेतेथी तेने परपीरणा-
 मीपणो छे. ते परपीरणामीपणु अभव्य जीवने
 अनादि अनत छे, अने भव्य जीवने अनादि
 सात छे. पुदूगलनो परिणामीपणो ते मत्ताए
 अनादि अनत उ अने पुदूगलनु मळवु वि-
 खरखु ते सादि सात भागी जाणवु. जीव द्रव्य

पुद्गल साथे मळेला सकिय छे, अने पुद्गल द्रव्याची रहित थाय त्यारे अक्रिय छे पुद्गल द्रव्य सदा सक्रिय छे.

हवे एक अनेक पक्षांशी निश्चय ज्ञान कहैवाने नय कहे छे, सर्व द्रव्यांचां अनेक स्वभाव छे, ते एक वचनाची कथा जाय नहीं मांट मांढोमाहे नयवडे सत्रेपणे कहे ते.

मूळ नयनाचे भेद छे. एक द्रव्याधिक अने यीजो पर्याप्तिक, तेमा उत्पाद व्यय पर्याप्तने गौणपणे अने प्रधानपणे द्रव्याची गुण सत्त्वाने ग्रहे तेने द्रव्याधिक नय कहे ते तेना ददा भेद हे

१ सर्व द्रव्य नित्य ते से निय द्रव्याधिक,

(६४)

२ अगुरु लघु अने क्षेत्रनी अपेक्षा न करे जने मूळ गुणने पिटपणे ग्रहे ते एक द्रव्याधिक

३ शानादिक गुणे सर्व जीव एक सरखा छे, माटे सर्व जीवोने एक कहे अने स्वद्रव्यादिकने ग्रहे ते सत्रद्रव्याधिक जेम सत्र लक्षण द्रव्यम् ।

४ द्रव्यमा कहेवा योग्य गुण अगीकार करे ते द्रव्याधिक जाणवो ।

५ आमाने अझानी कही बोलावबो ते अशुद्ध इत्याधिक नय जाणवो ।

६ सर्व द्रव्य गुण पर्याप्त सहित छे एम कहेवु ते अन्त्रय द्रव्याधिक ।

७ सर्व जीवनी मूळ सचा एक छे ते परम द्रव्याधिक जाणवो ।

८ सर्व जीवना आठ रुचक प्रदेश निर्मल हो ते शुद्ध द्रव्यार्थिक नय जाणवो.

९ सर्व जीवना असख्याता प्रदेश एक सरखा हो ते सत्ताद्रव्यार्थिकनय जाणवो.

१० गुण गुणी एक हो ते परमभाव ग्राहक द्रव्यार्थिक नय जागर्हा ज्ञेम आत्मा ज्ञानरूप हो.

इत्यादिक द्रव्यार्थिक नयना दश भेद फला. हचे पर्यार्थिक नयना छ भेद कहो हो.

जे पर्यायने ग्रहे तेने पर्यार्थिक नय कहो हो, तेना छ भेद नीचे प्रमाणे

एक द्रव्य पर्याय, जीजो द्रव्य यज्ञन पर्याय, जीजो गुणपर्याय, चोथो गुण व्यजन पर्याय, पाचमो स्वभाव पर्याय, छठो ग्रिभाव पर्याय.

(४६)

७ जीवने भव्यपणु तथा सिद्धपणु के
हेवु ते द्रव्यपर्याय

८ जे द्रव्यना प्रदेशनु मान ते द्रव्य
चयनपर्याय.

९ एक गुणयी अनेकता थाय. जेम थ
र्धार्थमादि द्रव्य प्रोताना घलण साहकारादि
गुणयी अनेक जीव तथा पुद्गलने सहाय
करे तेने गुणपर्याय नय कहे छे,

१० एक गुणना परा पेद ते गुण व्य-
ननपर्याय कहीए.

११ स्वभाव पर्याय ते अगुर लघु पर्या-
प्ती ज्ञाणवो ए पाँा पर्यायो सर्वे द्रव्य
या छे।

१२ विभाग पर्याय ते जीव, पुद्गल, ए

‘ये द्रव्यमा छे, जीव जे चार गतिना नवा
नवा भव करे, ते जीवभा विभाव’ पर्याय तथा
पुद्गलमा स्वधपण ते विभावपर्याय जाणवो।’

हुवे पर्यायना चीजा छ भेद कहे छे—
एक अनादि नित्य पर्याय, ते पुद्गल द्रव्य-
नो मेरु प्रसुख, चीजो सादि नित्य पर्याय ते
जीव द्रव्यनी सिद्धावस्था, सिद्धारगाहनादिक

त्रीजो अनित्य पर्याय ते समय समय-
मा द्रव्य उपजे विषसे छे ते, “सादिसा-
त पर्याया भव शरीराध्यवसायादय” इति
नयचष्टे, चोयो अगुद्द अनित्य पर्याय ते
जन्म मरण थाय ते ते बडे कहेवो. पांचमो
उपाधि पर्याय ते कर्म संबध छहो थुद्द
पर्याय जे मूळ पर्याय सर्व द्रव्येना एक सर-
खा छे ते, एवं पर्यायिकर्म स्वरूप करुँ,

(६८)

लयचक्र तथा आगमसार कसाँना मर्दे गीजा
वर्यांयना छ धेदमा तफावत पटे छे. उच्च-
देवलिगम्पम्

सातनय.

२ नैगम २ सग्रह ३ व्यवहार ४ रुचुर्मृ-
त्र ५ शब्द ६ समभिस्त ७ एवंभूत ए सात
नपना नाम जाणवा

१ नैगमनय

नथी एक गमो ते जेनो तेने नैगमनय
झडे छे, गुणनो वा कार्यनो एक अंश उप-
न्यो होय तो ते नैगमनय कहीए, जेम कोइ
मनुष्यने पाढ़ी लावदानु घन थयु त्यारे ते
बगडामा लाकडा लेवा चाल्यो, तेने रस्तामा
रीजो कोइ माणस भेगो थयो तेणे पूछपु

के, तु क्यां जाय डे ते बारे तेपे कहु के
 हुं पाली लेवा जाउ हुं, ते पाली तो हजु
 धडी नथी, एण मनविपे चितव्युं ते थड
 एम गण्युं, तेप नैगम नय सर्व जीवने सिद्ध
 समान कहे छे फारण के सर्व जीवोना
 आउ रुचक प्रदेश निर्मल सिद्ध समान छे,
 तेथी एक अंशे मिद्ध छे, ते माटे सिद्ध स-
 मान सर्व जीव कहा, ते नैगम नयना त्रण
 भेद छे. अतीत नैगम, अनागत नैगम, अने
 वर्तमान नैगम, आ प्रमाणे आगमगार प्रेयमा
 कह्यु छे

नयचक बालदरोधमां नैगमनयना
 अण भेद कहा छे. १ आरोप २ अश ३ सं-
 कल्प, तथा विगेषावश्यकमां चोथो भेद
 पण उपचारपणे कहे छे, नथी एकगमो-अ-

भिषाय ते जेनो तेने नैगमनय कहे छे; नै-
गमनय अनेक आशयी छे, ते नैगमनयना
चार भेद छे, नैगमना मेद पैकी आरोप नै-
गमना चार प्रकार छे.

१ द्रव्यारोप, २ गुणारोप, ३ कालारो-
प, कारणाधारोप

१ गुणादिकमा द्रव्यपणो मानवो ते
द्रव्यारोप जेम वर्तना परिणाम ते पचा-
स्तिकायनो परिणामन धर्म छे, तेने काल
द्रव्य कहीने बोलाव्यो. ए काल ते भिन्न
पिंड रूप द्रव्य नधी, पण आरोपे द्रव्य छे,
माटे द्रव्यारोप जाणवो. द्रव्यने गुणनो आ
रोप ते जेम झान गुण छे; पण झानी तेस
आत्मा, एम झानने आत्मा कही, ते गुणा-
रोप जाणवो तथा जेम श्री महावीर स्वा-

મીનું નિર્વાણ થયાં ઘણો કાળ ગયો છે, પણ આજ દીવાળીના દીવસે બીરનિર્વાણ છે, એમ જે કહેવું, તે વર્તમાનકાલમાં અતીત કાલનો આરોપ કર્યો જાણવો તથા આજ શ્રી પદ્મનાભ પ્રભુનો નિર્વાણ છે, એમ જે કહેવું તે વર્તમાન કાલમા અનાગતકાલનો આરોપ પદ્ધી રીતે અતીતના વે ખેદ છે. તથા અનાગતના વે ખેદ છે. તથા વર્તમાનના પણ વે ખેદ છે તે સર્વ મળી કાલારોપના છ ખેદ જાણવા. ચોથો ચલી કારણવિષે કાર્યનો આરોપ કર્યો તે કારણાદ્યારોપ જાણવો.

તે કારણ ચાર છે. ૧ ઉપાદાન કારણ, ૨ નિમિત્ત કારણ, અસાધારણ કારણ, ૩ અપેક્ષા, કારણ, તેમાં વાય દ્રવ્ય ક્રિયા તે સાધ્ય 'સાક્ષેપવાક્યને' ધર્મનું નિમિત્ત કારણ

છે તોપણ તેને ધર્મકારણ કહીએ. તેમજ શ્રી લીર્યિકર મૌસનું કારણ છે તેથી તેમને 'તારયાણ' કહ્યા તે કારણમા ફર્ચાંપણાનો આરોપ કર્યો. એમ આરોપતા બનેક પ્રકારે છે તે કારણાદ્યારોપ

બળી સકુલ્ય નેગમના તે ખેદ છે ૨ સ્વ-પરિણામરૂપ વીર્ય ચૈતનાનો જે નવો નવો ક્ષયોપશ્વમ છેવો તે ૨ કાર્યાત્મક નરે નવે ફાર્યે નવો નવો ઉપયોગ યાય તે. એ ને ખેદ થયા, તથા અશ નેગમના પણ હે ખેદ છે. ૧ પિંદ્રાંશ તે જુદો અશ, સ્વધારિકનો, ધીજને આમિદાશ તે જે આત્માના પ્રદેશ તથા ગુણના અધિ-ભાગ ઇત્યારિક એ સર્વ નેગમનથના ખેદ જાળવા

(७३)

(२) संग्रहनय.

सामान्यवस्थुसत्त्वा संग्राहक संग्रहः सद्विप्रिधः सामान्य संग्रहः विशेषं संग्रहश्च सामान्य संग्रहो द्विविधः मूलतत्त्वरत्नश्च मूलतोऽस्तित्वा द्विभेदतः पद्मविध उत्तरतो जाति समुदाय भेदरूपः जातितः गावि गोत्वं, घटे घटत्वं, वनस्पती वनस्पतित्वं, समुदायतो सदकारात्मके वने सदकारवन, मनुष्यसमुहे मनुष्य वृद्ध इत्यादि समुदायरूपः अथवा द्रव्यमिति सामान्य संग्रहः जीव इति विशेष संग्रहः

अर्थः सामान्ये करी मूल सर्व द्रव्य व्यापक नित्यत्वादिक सचापणे रथा जे धर्म नेनो जे संग्रह करे तेने संग्रहनय कहे छे.

तेनावे भेद छे, १ सामान्य संग्रह २ विशेष संग्रह.

(७४)

सामान्य संग्रहेना २ भेद हे. १ मु
सापान्यसंग्रह, २ उत्तर सापान्यभंग्रह. वन्ह
मूळ सामान्यना आसित्व, वस्त्रुत्व द्रव्यत
प्रमेयत्व, सत्त्व, अगुहलघुत्तर ए छ भेद.
तथा उत्तर सामान्यना ने भेद हे

१ जाति सामान्य, २ समुदाय सापान्य
तत्र गायना समुद्रमा गोत्वस्त्र प जाति हे, त
थट समुद्रायमां घट्टत्व अने वनस्पतिमा के
स्पतिपणो ते जाति सामान्य याहो. अद्या
समूहने अंद बन कहे, तथा मनुष्यना समुद्र
मनुष्य ग्रहण थाय, ते समुदाय सामान्य
उत्तर सामान्य ते चेक्षुदशैन तथा अच्छुदशैन
ग्राही हे, अने मूल सामान्य ते अद्याधि
तथा केवल दर्शनेथी ग्रहणाये हे.

अथवा छ द्रव्यना समुदायने द्रव्य

हेबु, ए सामान्य संग्रह अने जीवने जीव
द्रव्य कही अजीव द्रव्य थकी जुदो पाडवो
ते विशेष संग्रह। विशेषावश्यरूपां संग्रहन-
यना चार भेद किया छे. १ संग्रहीत संग्रह,
२ पिंडित संग्रह, ३ अनुगम संग्रह, ४ व्यति-
रेक संग्रह।

१ सामान्यपणे वहेचण विना ग्रहण
थाय एवो जे उपयोग अथवा एबु जे वचन
अथवा एवो धर्म कोईपण वस्तुने विषे होय
तें संग्रहीत संग्रह कहीए।

२ एक जाति माटे एकपणो मानीने
ते एक मध्ये सर्वनो ग्रहण थाय जेम
“ एगे आया ” “ एगे पुगाले ”
इत्यादि वस्तु अनंति छे पृष्ठ जाति एक

હણ થાય છે તે વીજો પિંડિત સગ્રહ-
દીએ.

જે અનેક જીવરસપ અનેક વ્યક્તિ છે
ત પામીએ, “ જેમ સચિન્ય આત્મા ”
વું જીવ તથા સર્વ પ્રદેશ અને સર્વ
જીવના લક્ષણ છે, તે અનુગમ સગ્રા
દીએ.

ત ના રહેરાથી તૈનાથી ઇતરનો
પણ જ્ઞાન થાય તે, જેમ અજીવ તે
જીવ નહીં તે અજીવ કહીએ, એટલે
બ છે એમ વ્યતિરેક વચ્ચે રહ્યો.
ગે જીવનો સંગ્રહ થાય છે, તે
અદ કહીએ

તાપ રીધાથી સર્વ ગુણ પર્યાય પ-
ત આવે તે સગ્રહન્ય જાળવો

(७७)

दृष्टात—जेम कोइक मनुप्ये प्रभाते
दातण करवाने अर्थे पौताना घरना बारणे
बेशीने चाकरने कहुँ के दातण लेड आवो ।
तेगरे चाकर पुरुप, पाणीनो लोटो, स्माल,
दातण एम सर्व चीज लड आच्यो शेडे तो
एक दातण नाम लडने मंगाव्यु हहुँ, पण
सर्वनो संग्रह करी चाकर लइ खाल्यो ते रीते
संग्रहनय जाणवो

(३) व्यवहारनय

“संग्रहग्रहीतवस्तु भेदांतरेण विभजन
च्यवहरण, प्रवर्तनै वा व्यवहारः सद्विध.
शुद्धोऽशुद्धश ॥

संग्रहनये ग्रहीत जे वस्तु तेने मेदातरे
वरेच्यु, तेने व्यवहारनय कहे छे. जेम द्रव्य

एवं सामान्य नाम कहु, तेमा वली वहेचण
 करीए जे द्रव्यना वे भेद छे, एक जीव द्रव्य
 तथा वीजु अजीव द्रव्य, तेमा पण वहेचण
 करीए जे जीवना वे भेद छे एक ससारी
 वीजा सिद्ध, वली तेमा पण संसारोना वे
 भेद छे, एक स्थावर, वीजो जास, तेमा स्थाव-
 रना पृथ्वीकाय, अपकाय, तेज़माय, वायुकाय,
 अने बनस्पतिकाय, ए पाँच भेद छे, त्रसना
 चार भेद छे वेद्री, तरेद्री, चौरेद्री, अने
 पचेद्री. पश्चोन्द्रियना देवता, मनुष्य, विष्व
 अने नारकी एम चार भेद छे. एम उत्तरोत्तर
 जीवना ५६३ भेदनी वहेचण करवी इत्या
 दिक् सर्व व्यवहारनयनो स्वभाव जाणवो.
 अपवा मरतीन व्यवहारना वे भेद छे १ शुद्ध
 व्यवहार २ अशुद्ध व्यवहार.

सर्व द्रव्यनी स्वरूप शुद्ध प्रवृत्ति-जैम
घर्मास्तिकायनी चक्रण सहायता तथा
जीवनी शायकता इत्यादिकने वस्तुगत शुद्ध
व्यवहार कठीए.

द्रव्यनो उत्सर्ग नीपजवा पाटे जे रत्न-
शयिनी शुद्धता, गुणस्थाने श्रेणि आरोहणरूप
ते सापन शुद्ध व्यवहार कठीए.

अशुद्ध व्यवहारना वे भेद छे १ सद्भूत
व्यवहार २ असद्भूत व्यवहार. तेमा जे सेने
अवस्थाने अभेद रखा जे शानादिगुण तेने
परस्पर भेदे कहेवा, ते सद्भूत व्यवहार.
तथा हुँ कोधी छुँ, हुँ मानी छुँ, अथवा दे-
रता छुँ, मनुष्य छुँ, इत्यादि देवतापणे ते हे-
तुपणे परिणमतां ग्रस्या जे देवगति विपाकी
फर्म तेने उद्यरूप मभाव छे ।

ज्ञान विना भेद ज्ञानशूप जीव ते एक करी
माने छे, ते असद्भूत अभुद्ध व्यवहार करीए,
तेना रे भेद छे.

? आ शरीर मारु छे, हु शरीरी लुं
इत्यादि कहेबु तेने सक्षेपित असद्भूतव्यन-
दार जाणयो.

? आ पुत्र मारो, आ स्त्री, कुद्दव, घन-
धान्यादिक नवविष परिग्रह मारो छे एम जे
कहेबु ते असश्लेपित असद्भूत व्यवहारनयथी
जाणयु, ते असश्लेपित असद्भूत अभुद्ध
व्यवहारना वे भेद छे एक उपचारित अने
गीजो अनुपचारित.

पिशेपावद्यक महाभाग्यमां व्यवहारनयना
मूल वे भेद छे.

? वहेचणरूप व्यवहार.

२ प्रवृत्तिरूप व्यवहार.

प्रवृत्ति व्यवहारना त्रण भेद छे. वस्तु-
प्रवृत्ति, साधनप्रवृत्ति, लौकिकप्रवृत्ति. तेमाँ
साधन प्रवृत्तिना त्रण भेद छे.

१ जे अरिहंतनी आशाए शुद्ध साधन
मार्गे इट लोक संसार पुद्गल भोग आसं-
सादिदोष रहीत जे रत्नगयिनी परिणति,
सरभव त्याग सहित ते लोकोत्तर साधन प्रवृत्ति
नामे पहेली भेद जाणबो.

२ स्पादाद विना मिथ्याभिनिवेष
सहित साधन प्रवृत्ति ते दुष्मावचनिक साधन
प्रवृत्ति.

३ लोकनी स्व स्वदेश कुलनी चाले
प्रवृत्ति ते लोक व्यवहार प्रवृत्ति ए त्रण
मकारनी प्रवृत्ति जाणबी.

(८२)

वाय स्वरूप देवीने भेदनी बहेचण करे
अने जे याद देखाता गुणनेत्र मनि पण
अतरम सचांने न पांन, तेने व्यवहारनय घेऊ
चे, आ नयमा आचार किया मुख्य छे
व्यवहारनये जीवनी अपस्था अनेक
प्रकारे छे

बळी व्यवहारवयना उ भेद छः

१ शुद्ध व्यवहार, ते पूर्वना गुण
गाणानु छोड्यु, अने उपरना गुणाण
प्रहण करु, तेने शुद्ध व्यवहारनय कठे
अथवा इन, दर्शन, चारित्र गुण ते निष्ठ
नये एक रूप छे, पण से शिष्यने समजावदा
शुद्ध जुदा भेद करेवा ते शुद्ध व्यवहारन
जापावो

२ जीवमा अशान् रागद्वेष काम्या छे
ते अशुद्धपणो ते माटे अशुद्ध व्यवहार
जाण्वो.

३ पुष्पनी क्रिया कर्वी वा शुमपरि-
णति प्रवृत्ति ते शुभ व्यवहार.

४ पापनी क्रिया कर्वी वा अशुभ प-
रिणति प्रवृत्ति ते अशुभ व्यवहार.

५ धन कुँडुंर प्रत्यक्षपणे पोतानाथी
जुदा छे पण जीवि पोताना करी जाम्या छे
ते उपचारित व्यवहार.

६ शरीर, लेङ्या, शोग अने इद्रिय
इन्द्रियादि वस्तुओ पोताना आत्मा यस्ती जुदी
छे तेने बापणी करी जीव मानि छे ते अनु-
पचारितव्यवहारनय मतथी जाण्युँ.

उत्पादि व्यवहारनयनुं स्वरूप जाण्वु.

(८)

ऋग्गुमूल रत्नमानयाहक तद् वर्तमान
नामादि चतुष्कारं प्राय. नय च इ कर्ता
ऋग्गुमूलनयमा नाम, स्थापना, द्रव्य, अं
भाव ए चार निषेधा ग्रहण करे जे.

५ शब्दनय

जे वस्तु गुावत, तथा निर्णयवंत होय,
तेने नाम रही गोलाबीए जे भाषा वर्गणा
थी शब्दपणे गोचर थाय, ते शब्दनय, उ
कारणथी अस्पी द्रव्य वचनथी ग्रथा जा
नहीं पण वचनथी कहेबा ते शब्दनय कहीए
अहीं जे शब्दनो अयं ते पणो जे वस्तुमी
वस्तुपणे पासीए, त्पोर ते वस्तु शब्दनये
कहीए. जेप घटनी चेष्टने फरतो होय ते
घट फहेबाय, ए शब्दनयमा व्याप्तुरणर्थ

દ્વર ધ્યાને, જિનપનિમા પૂજતા લાભ થાય છે.

“ તે જેનું નાય હોય, તથા આકાર સ્થા-
પના ગુણ પણ હોય, અને લક્ષણ પણ હોય,
પણ આત્માનો ઉપયોગ ખલે નર્હી, તેને દ્રવ્ય-
નિક્ષેપો જાળવો. અજ્ઞાની જીવ તે જીવ સ્વ
રૂપના ઉપયોગ વિના દ્રવ્યજીવ છે. “ અણુ-
વશોગોદવ્યમ् ” ઇતિ અનુયોગદ્વાર વચ્ચનાત્
વદી કણુ ઠે કે સિદ્ધાત માચતાં પુછતા પદ,
અસર, માત્રા, શુદ્ધ અર્થે કરે છે, અને ગુરુ
મુખે સદહે ઠે, તે પણ શુદ્ધ નિશ્ચયનયે પોતાની
સત્તા ઓલદ્યા રિના સર્વ દ્રવ્યનિક્ષેપમા છે.
જે ભાવબિના દ્રવ્યપણુ છે, તે પુણ્યરથનું કારણ
છે, પણ મોક્ષનુ ફારણ નથી. એટલે જે
ધર્મ કરણીલુપ રૂણ તપસ્યા કરે ઠે, પણ
જીવ, અજીવ એદાર્થની સત્તા ઓછાખતો નથી,

जाणवो, ए स्थापना निसेपो भाग निसेपा स
हित होय छे, जेम स्थापनासिद्ध जिनप्रतिम
प्रमुख ते सद्भाव स्थापना अने असद्भाव
स्थापना पण होय छे, अकाश्रिम जिनप्रतिमा
ते नदीश्वरदीप प्रमुखमा, अने जे अग्नी
प्रतिमा ते कुञ्जिम, ते सर्व स्थापना जाणवी
जेम चिनामणनी स्त्री डया होय त्वा
साधु रह नहीं, कारण के स्थापना स्त्री हो
ते स्त्री तुल्य जाणवी, तेमज जिनप्रतिमा जिन
सरखी जाणवी फली दोरीने सापनी बुद्धि
थी इषता मापनी हिंसा लागे छे, तेम जिन
प्रतिमाने जिननी बुद्धिए पूजता-भानक
आत्माहित जाणवु,

चिनामणनी भूर्जिने हिंसाना परिणाम
थकी फाडे तेने हिंसा लागे छे, तेमज जिन

र ध्याने, जिनप्रतिमा पूजता लाभ थाय छे.

उ जेनुं नाम होय, तथा आकार स्थाना शुण पण होय, अने लक्षण पण होय, ए आत्मानो उपयोग भले नहीं, तेने द्रव्यनेक्षेपो जाणवो. अज्ञानी जीव ते जीव स्वगता उपयोग विना द्रव्यजीव छे. “अणुओगोदव्यम्” इति अनुयोगदार वचनात् जी कष्टु ले के सिद्धात माचताँ पुछता पद, सकर, मात्रा, शुद्ध अर्थ करे छे, अने शुरु खुखे मदहे छे, ते पण शुद्ध निश्चयनये पोतानी सत्ता ओलख्या विना सर्व द्रव्यनिक्षेपमा छे. ते भावविना द्रव्यपणु ले, ते पुण्यमधनु कारण छे, पण मोक्षनु कारण नयी. एटले जे गर्म करणीरूप रुष्ट तपस्या करे छे, पण नीव, अजीव पदार्थनी संत्ता ओळखतो नयी,

जाणवो, ए स्थापना निषेषो नाम निषेषा स
द्वित होय ते, जैम स्थापनासिद्ध जिनप्रतिमा
मसुख ते सद्भाव स्थापना अने असद्भाव
स्थापना पण होय छे. अस्त्रिम जिनप्रतिमा
ते नदीधरदीप प्रसुखमा, अने जे अन्ती
प्रतिमा ते कृत्रिम, ते सर्व स्थापना जाणवी
जैम चिनामणनी स्त्री ज्या होय त्या
साधु रहे नहीं. कारण ये स्थापना स्त्री छे
ते स्त्री हुळ्य जाणवी तेमज जिनप्रतिमा जिन
सरखी जाणवो काली दोरीने सापनी बुद्धि
थी हणता मापनी छिसा छागे छे, तेप जिन
प्रतिमाने जिननी बुद्धिए पूजता-मानता
आत्माद्वित जाणतु.

चिनामणनी मूर्च्छिने हिसाना परिणाम
थकी फाडे तेने हिसाँ छागे छे, तेमज जिन

' सत्तमगीनु स्वरूप.

१ स्याद् अस्ति. स्याद् कहेताँ अ
कान्तपणे सर्व अपेक्षा लेइने जीवदृश्य
आपणो द्रव्य, आपणो क्षेत्र, आपणो विभि
तथा आपणो भाव एम स्मरण पर्याप्ति
हे, तेम सर्व द्रव्य आपणे गुण पर्याप्ति हे ।
स्याद् अस्ति नामनो पहेलो भागो जाणवो

२ स्यान्नास्ति. जीवदृश्यमा वीजा परि
दृष्टपना द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव नयी, एवं
नास्तिपणो जीव द्रव्यमें

१ अनुमान प्रमाण, २ आगम प्रमाण
३ उपमान प्रमाण.

? कोइक सहीनाण-चिह्न देखीने जे
ज्ञान याय, जेम यन यन वृमस्तन तत्राग्निः
जे जे ठेकाणे धूम्र होय ते ते ठेकाणे अग्नि
होय, एटले धूम्रने देखीने जे अग्निनुँ अनु-
मान थयुँ, ते अनुमान प्रमाण,

२ शास्त्रनी साक्षीयी जे रात जाणीए,
जेम देवलोक, नरक, निगोद विग्रेनो
विचार आगमयी जाणीए ठीए, ते आगम
प्रमाण छे.

३ कोइक वस्तुनो दृष्टांत आपीने वस्तुने
विवरणबद्धी ते लघान प्रणाण जाणुवु

પ્રમાણ ।

હવે પ્રમાણ કરતાવૈ છે.-પ્રમાણના બે મેદ
ચે (૧) પ્રત્યક્ષ પ્રમાણ (૨) પરોક્ષ પ્રમાણ

૧ જે જીવ પોતાના ઉપર્યોગથી સાક્ષાત્
દ્રુદ્ધિને જાણે, તેને પ્રત્યક્ષ પ્રમાણ કહે છે. જેમણે
કેવળી છ દ્રુદ્ધ પ્રત્યક્ષપણે જાણે હો, તથા
દેખે હો, તે માટે કેવળજ્ઞાન સર્વદી પ્રત્યક્ષ
જ્ઞાન હો. મન પર્યાવરણાં, તે મનોવર્ગણા પ્ર
ત્યક્ષ જાણે, તથા અદ્યધિજ્ઞાન, તે પુદ્ગાલ
દ્રુદ્ધને પ્રત્યક્ષ જાણે હો માટે એ ને જ્ઞાન દેખન
પ્રત્યક્ષ હો

૨ મતિજ્ઞાન અને શ્રુતજ્ઞાનનો ઉપર્યોગ
તે પરોક્ષ પ્રમાણ હો.

પરોક્ષ પ્રમાણના નણ મેદ હો,

१ अनुमान प्रमाण, २ आगम प्रमाण
३ उपमान प्रमाण.

१ कोइक सहीनाण-चिह्न देखीने जे
शान थाय, जेम यत्र यत्र धूमस्तत्र तत्राग्निः
जे जे ठेकाणे धूम्र होय ते ते ठेकाणे अग्नि
होय, एटले धूम्रने देखीने जे अग्निनुँ अनु-
मान थयुं, ते अनुमान प्रमाण.

, २ शास्त्रनी साक्षीथी जे वात जाणीए.
जेम देवलोक, नरक, निगोद विगोरेनो
विचार आगमथी जाणीए छीए, ते आगम
प्रमाण छे.

३ कोइक वस्तुनो दृष्टत आपीने वस्तुने
ओबखावबी ते उपमात्र प्रमाण जाणयुं

सप्तभगीनु स्वरूप

१ स्यात् अस्ति. स्यात् कहेता अन्ते
कान्तपणे सर्व अपेक्षा लेइने जीवद्रव्यमा
आपणो द्रव्य, आपणो क्षेत्र, आपणो काल,
तथा आपणो भाव एम स्वरूप पर्याये जीव
हे, तेम सर्व द्रव्य आपणे गुण पर्याये हे. ते
स्यात् अस्ति नामनो पहेलो भागो जाणारो

२ स्यान्नास्ति. जीवद्रव्यमा वीजा पाच
द्रव्यना द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव नर्थी, एटां
पर द्रव्यना गुणनो नास्तिपणो जीव द्रव्यम
हे, ए स्यात् नास्ति नामे वीजो भागो थयो

३ स्यात् अस्ति नास्ति द्रव्य स्वरूपे अ
स्ति अने परगुणे नास्ति ए वे भागा एवं

समये द्रव्यमां छे, जे समयमां शुद्ध स्वरुणनी अस्ति तेजे समयमां पररुणनी नास्ति पण छे, “ यस्मिन् समये शुद्ध स्वरुणस्य अस्तिता आत्मनि तस्मिन् समये एव पररुणस्य नास्तिता आत्मनि रोया । ” माटे अस्ति नास्ति ए ने भागा एक समयमा भेला छे, ते स्यात् नास्तिनास्ति त्रीजो भागो थयो ।

४ स्यात् अनक्षय । अस्ति जने नास्ति ए ने भागा एक समयमा छे, तो वचने करी अस्ति एटलु रोलता असरयाता समय लागे, तेथी नास्ति भागो तेज अस्ति कहेगाय नहीं, अने जो नास्ति भागो कयो तो अस्तिपणो न आन्यो, माटे एकम अस्ति कहेता थका नास्तित्व तेज

समये द्रव्यमा हे, ते कहेगाणो नहीं, माँ
मृपावाद लागे, तेमज नास्ति कहेता अस्तित्वनो
मृपावाद लागे, माँट बचने करी अगोचर
छे. एक समयमा रे भागा उचने करी कदा
जाय नहीं कारण के एक अपर बोलता
असरयाता समय लागे हे, माटे बचनपाँ
अगोचर छे, ते स्यात् अब तब्ध चोपो
भागो जाणपाँ

५ अवक्तव्यपणो वस्तुमा अस्तित्वनो
पण छे पाँट स्यात् अस्ति अवक्तव्य ए
पाचमो भागो जाणपाँ.

६ नास्तित्वनो पण अवक्तव्य पणो वस्तु
मध्ये छे माटे स्यात् नास्ति अवक्तव्य ए छोँ
भाँगो जाणपाँ.

७ अस्तित्व तथा नास्तित्व एठ्ले अ

(९९)

स्तिपणु तथा नास्तिपणु एम वे धर्म एक
समये बस्तुमा छे पण बचन थकी कर्गा
जाय नहीं, माटे स्यात् अस्ति नास्ति युगपत्
अवक्तव्य ए सम्प्रो भाँगो जाणवो.

नित्यानित्यत्वादि अनेक धर्ममा सम्पर्खी
छाए पडे छे.

१ स्यात् नित्यम् २ स्यात् अनित्यम्
३ स्यात् नित्यानित्यम् ४ स्यात् अवक्तव्यम् ५
स्यात् नित्य अवक्तव्यम् ६ स्यात् अनित्यं
अवक्तव्यम् ७ स्यात् नित्यानित्यम् युगपत्
अवक्तव्यम् ए सात भागा जाणवा.

तेमज एक अनेकला सात भागा जा-
गवा तथा गुणपर्यायमां पण कहेवा. केमके
सेद्द मध्ये नय नर्थी तोपण सम्पर्खी तो ते.

ए सम्पर्गीमा स्यात् भरित, स्यात् नास्ति,
स्यात् अपक्षेष्य ए प्रण भागा सर्वा
देशी हे अने नारीना पार भाँगा विस्तृ
देशी ते.

“ श्रिभद्गी ”

प्रण दशा यतवे हे ? नाथक २ मा
पक इ मिळ.

१ पित्त्यात्म दशा ते नाथक दशा जी
यावी २ समरिन गुणवत्ताधी मार्डाने अ
योगी केवली गुणवत्ता सुधी साथक दशा
जाणवी. ३ सर्वं कर्षथी राहित सिद्ध दशा
जाणवी

(१) शाननो जाणपणो ते जीर्नो गुण
जाणवो, (२) तेनो ज्ञाना जीव, (३) वेष
सर्वं द्रव्य.

(१०१)

(१) भ्यान ते जीवना स्वरपनुँ. (२) भ्याननो याता जीव, (३) ध्येय ते आत्मा-
नुँ स्वरूप.

आत्माना ब्रण भेद डे. १ बहिरात्मा, २
अन्तरात्मा, ३ परमात्मा. १ शरीर, मन, लेश्या,
अनेहंद्रियादि बस्तुने अज्ञानी जीव आत्मबुद्धिए
माने ते पहेलो बहिरात्मा जाणवो. दुहा—पुद्ग-
लमांराची रहे पुद्गल सुखनिधान, तस लाभे
लोभ्यो रहे, बहिरात्म अभिधान ॥ १ ॥ पु-
द्गलधी न्यारो नहीं, आत्म एकी बुद्धि,
बहिरात्म सुख शे लहे, प्रगटे नहीं स्व-
शुद्धि. ॥ २ ॥

२ देह सहित जीव डे पण निश्चये
सत्ता गुणे सिद्ध समान छे, एटके पोताना
जीवने सिद्ध करी ध्यावे ते अंतरात्मा जाणवो.

પુદ્ગલ વસ્તુ પોતાના આત્માની નખી
 આત્માથી ઘરીર, ઇદ્રિપ, અને લેણ્યા બંગરે
 ભિન્ન છે. આત્મા અસ્પી છે, પુદ્ગલ (કર્મરષ) રૂપી છે,
 આત્મા ચેતના સદ્ગીન છે કર્મ જહ
 છે, આત્માને ચાર ગતિમાં ભડ્યાનું ફારણ
 કર્મ છે, તે મારી વસ્તુ નખી, પણ પર વસ્તુ
 છે અરે હુ એ પર વસ્તુને પોતાની માની બેઠો
 હુ, અને તૈયી હુ દુઃખી થાડ હુ રે ચેતન !
 તુ અસ્પી અનંત શુણનો ભોક્તા છે. આડ
 કર્મના નાનથી તુ પરમાત્મા ભૂદ્રાત્મા
 સ્વરષ ઘડા કર્મ રહિત જેવા સિદ્ધના જીવો
 છે, તેવો સત્તાએ તું પણ છે. કર્મના આપર
 થાયી તારા શુણ દ્વારા ગયા છે, ઇત્યાદિ
 પોતાના આત્માને સિદ્ધ સમાન ધ્યાબવો તે
 અન્તરાત્માનું લક્ષણ છે.

१ सर्व कर्म खपावी केवलज्ञान पास्या
तेगा अरिहत तथा सिंड सर्व परमात्मा
जाणगा.

२ देवे द्रव्य माये छ सामान्य गुण कहे छे,

३ आस्तित्व-ते छ द्रव्य आपणा गुण-
पर्याय प्रदेशे करी अस्ति ते, तेपा धर्म, अध-
र्म, आकाश अने जीव ए चार द्रव्यना असं-
रयाना प्रदेश मली खध छे, अने पुद्गलमा
खध बवानी शक्ति ते, पाटे ए पाच द्रव्य
अस्तिकाय छे, अने छटो काळ द्रव्यनो समय
छे, ते कोइ कोइयी मञ्जतो नयी, कारण के
एक समय विणइया पठी वीजो समय आवे
ते, भाट काळ अस्तिकाय नयी. ए द्रव्यमा
अस्तित्व क्यो.

४ चस्तूर-एटने छ द्रव्यमा वस्तुपणो

कहे छे, ते द्रव्य एकठा एक क्षेत्र मध्ये रहा
छे, एक आकाश प्रदेशमाँ अधर्मस्थिकायनो
एक प्रदेश रहो छे, तथा अधर्मस्थिकायनो
पण एक प्रदेश रहो छे, आगमसार कर्त्ताना
मत प्रमाणे जीव अनताना अनत प्रदेश
रहा छे एम लरयु छे आकाशना एक प्र
देश आत्माना सर्व प्रदेशो रही शकता नयी.
एम अन्यागमोयी जाणाय छे.* पुदूगल पर

आत्माना पश्च प्रदेशनो अषगाहना पश्च
आकाश प्रदेश प्रमाण होयायी पश्च आत्मनि
असरयाता प्रदेशो पश्च आकाश प्रदेशो रहे
जावे नहीं पश्च अनत आत्माना अनत
देशो पश्च आकाश प्रदेशो रहो जावे छे पश्च
रणवे लौकाकाशना प्रदेश ज्ञेन्न निर्गोद्ध
गोला छे पश्च पश्च गोलामा असरयातो निर्गा
छेते पश्च निर्गादमा अनत कीबना अनत

माणुआ अनेता रहा छे. ते सर्व पोतानी सत्ता लेइने रहा छे, पण कोइ द्रव्य कोइ द्रव्य साथे मली जतु नयी ते वस्तुपणे जाणु.

३ द्रव्यत्व-कहेताँ द्रव्यपणो ते सर्व द्रव्य पोतपोतानी क्रिया करे छे. घर्मास्ति-कायमा चलन सहाय गुण ते सर्व प्रदेश मध्ये छे. सदा पुराळ तथा जीवने चलन सहकार रूप क्रिया करे छे.

प्रथ-चौकातसिद्ध क्षेत्रमा घर्मास्ति काय उे ते सिद्धना जीवोने चलाववामा सहाय क्रिया केम करतु नयी ।

देशी रहेला हुे माटे पट्टले आगमसार कर्त्ता तथा अन्यागमो यज्ञेनो मत अपे शास्त्र सत्य हुे

उत्तर—सिद्धना जीवो अक्रिय छे, मार्गे
 चालता नयी, पण ते क्षेत्रमा सूक्ष्म निगोद
 ना जीव तथा पुद्गल छे, तेने घर्मास्ति
 काय चलन सहाय आपै उँ, पण सिद्धना
 जीवो अक्रिय छे, तेथी तेमने चलण
 सहाय आपतो नयी. पुद्गल मक्रिय
 छे, पण पुद्गल सग त्यागी जे सिद्ध
 यया ते तो अक्रिय छे, अने अक्रिय एवा
 सिद्धना जीवो चाली शकता नयी, जे वस्तु
 सक्रिय होय छे, गति करी शके छे, तेने
 घर्मास्तिकाय चालवामा सहाय आपे छे, पण
 अक्रिय एवा सिद्धना जीवो गति करता
 नयी, तेथी तेमने चालवामा सहाय आपी
 शक्तु नयी सिद्धात्माओ अक्रिय उँ, मार्गे
 तेने चलण सहाय आपतो नयी. ते सिद्धना
 जीवो निश्चल स्वस्वरूपी उँ.

(१०७)

अधर्मास्तिकाय जीव, तथा पुद्गलने स्पर राखरानी क्रिया कर छे तथा आकाश द्रव्य ते सर्व द्रव्यने अवगाहना गुणरूप दान आपे छे.

पृ. न—अलोकाकाशमाँ वीजुं कोइ द्रव्य नयी, तो अलोकाकाश क्या द्रव्यने अवगाहना दान आपे छे ?

उत्तर—अलोकाकाशमा अवगाहना दान देनानी शक्ति तो लोकाकाश जेवीज त्रे, पण त्याँ अवगाहना दान लेनार कोइ द्रव्य नयी, माटे अवगाहना दान करतुं नयी तेयी अलोकाकाशमायी अवगाहना गुण शक्ति, जे स्वभावे छे तेनो नाश यतो नयी. अलोकाकाशमा अवगाह गुणमा अगुह लघुपर्याययोगेष्टगुण हानि वृद्धिचक्र चाकी राए छे.

पुद्गल द्रव्य मिलवा विस्तरवारप क्रिया कर्या करें छे. फाळद्रव्य वर्तनास्प क्रिया कर्या करे छे, जीव द्रव्य ज्ञानलक्षण उपयोग रूप क्रिया करे छे. ए द्रव्यपणु पड़-द्रव्योमा कहु.

४ प्रमेयत्व-ए प्रमेयपणो छ द्रव्यमा छे, तेनो प्रमाण केवशी पोताना जानधी करे छे, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, अने आकाश ए एकेक द्रव्य छे. अने जीव द्रव्य अनंता छे तेहनी गणतरी बतावे छे. सज्जी मनुष्य सरयाता छे, असज्जी मनुष्य असरयाता छे, नारकी असरयाता छे, देवता असरयाता छे, तिर्यच पचेन्द्रिय असरयाता छे, द्विन्द्रिय असरयाता छे, त्रीन्द्रिय असरयाता छे, चतुर्सिन्द्रिय असरयाता छे, ते-

થકી પૃથ્વીરાય અસરયાતા છે, અપ્રોરાય
અમરંયાતા, તેડ્રાય અસરદ્યાતા, રાયુકાય
અસરદ્યાતા, પ્રત્યેક વનસ્પતિ જીવ અસર-
દ્યાતા, તે થકી સિદ્ધના જીવ અન્તા, તે
થકી વાદર નિગોદના જીવ અનતગુણા,
વાદર નિગોદ તે કદ, મૃદ, આદુ,
મૂરળ, શકરીયા, મુલા, મસૂલ એના મુદ્દના
અશ્રમભાગ જેટલા ખાગમા અન્તા જીવ
રયા છે, તે મિદ્ધના જીવથી અનતગુણા છે,
અને મૂહ્ય નિગોદના જીવો સર્વથી અનત-
ગુણા છે.

સૂક્ષ્મનિગોદ.

શોકાકાશના જેટલા પ્રદેશ છે, તેટલા
નિગોદના ગોલા છે, તે એકેક ગોલામાં

असरयाति निगोद छे, अनता जीवोनु प्र
 डभूत एक गरीर तेने निगोद कहे छे ते
 माथी एक निगोदमा अनता जीव रहा छे
 अतीत काळना सर्व समय, तथा यन्मानमा
 छनो एक समय, तथा अनागतकालना सर्व
 समय, त र्वने भेला करीए अने तेने अ
 नत गुणा करीए तेला एक निगोदमा जीव
 रहा छे, एटले एक निगोदमा अनता जीव
 रहा छे, तमावी एक जीव ग्रहण करीए
 तना प्रदेश असरयाता छे, अने एकेका प्रदेशे
 अनंति कर्मनी घर्णणा लागी छे, ते एकेका
 घर्णणा माये अनता पुद्गल परमाणुआ छे
 एम अनता परमाणु जीवनी साथे लाग्या
 छे, ते यकी अनतगुणा पुद्गल परमाणु
 जीरथी राहत-हुना छे.

(३११)

गाथा.

गोलाय असंखिज्ञा, जसंख निगोए
हवइ गोलो, इकिकमिनिगोए, अनता जीवा
मुणेयच्चा ॥ १ ॥

अर्थ—लोकपाढे असंरथाता गोला छे.
एकेक गोला मार्य असरयाती निगोद छे
अने एकेक निगोदमा अनता जीव छे.

गाथा.

सत्तरस समहिआ, किरइगाणु पाणपि
हुंति खुद्धभवा, सगतिससयतिहुतर, पाणु
युणइग मुहुत्तमि.

अर्थ—निगोदिया जीव मनुष्यना एक
धासोधासमा सत्तर भव झाङ्गेरा करे छे.

(११२)

मुहर्तमा ३७७३ नण हजार सातसो
तीतेर धासोधास थाय छे. वेटल्लामा निगो
दिया जीव केटल्ला भव करे ते नवाबे ले.

पण साहित्यस्तपणसय, छत्तिसा इग
मुहर्त सुहुभवा, आवलिपाण दोसय, छप्पना
एगसुहुभवे.

अर्थ—एक मुहर्तमा निगोदना जीव
६५५३६ भव करे छे. निगोदनो एक भव
२५६ आवलीनो छे. क्षुङ्क भवनो ए
ममाण छे

गाथा—अधिथ अनताजीवा, जोहिनप
चोतसाइ परिणामो, उवबउमति चर्यांतिय
पुणोरि तथ्यतथ्येन ॥ निगोदमा अनताजीव
एवा छे के जे जीवो । फोइ वरखत

राम्या नधी, अनतोकाल पूर्वे गयो तो पण
ते जीवो गरखार स्थान उपजे छे, अने
व्यवे छे, एम एक निगोदमा अनताजीव त्रे,
ते निगोदना ते भेट छे, १ एक व्यवहार
राशिनिगोद, अने २ अव्यवहार राशि-
निगोद, तेमा जे गादर एकेन्द्रियपणो-भागे
गसपणो पापीने पाठा निगोदमा जड पछ्या
ते, ते निगोदिया जीवने व्यवहार राशिया
कहीए, अने जे जीव कोडपण काढे निगो-
दमाथी नीकछ्या नधी, ते जीव अव्यवहार
राशिया कहीए.

इदा मनुष्यपणामाथी जेटारा जीर कर्म
खपारीने मोते जाय ते, तेटला जीबो तेज
समये अव्यवहारराशिसूहमनिगोदमाथी नी-
कलीने हुंचा आवे ते, जो दग्धजीर मोहे

जाय तो दशनीव नीकले कोइक वेलाण
 भव्यजीव ओळा नीकले, तो एक रे अभव्य
 नीकले, पण च्यवहार राशिमा कोइ जीव
 वधेघटे नहीं एवा निगोदना असंरयाता
 गोला लोक माहे छे, घटे न राश नि-
 गोदकी वधे न सिद्ध अनन्त

छादीशिना आव्या पुदगलस्कंधो आहा-
 पण जे लेहे, ते सखलगोला कहेवाय छे,
 अने लोकातना प्रदेशे जे निगोदना गोला
 रव्या छे, तेने त्रण दिशिना आहारनी स्पर्शना
 छे, माटे ते रिकल गोला कहेवाय छे. ए
 मूळम निगोदमा अनतु दुख ठे, तेनु उदा
 हरण वतावे छे. सातमी नरकनु आउखु
 तेचीश सागरोपमनु ठे, अने ते तेचीश साग

द्रव्योमा छे द्रव्यमा एक समयमा उत्पाद-
व्यय थाय छे, अने तेज समयमा मिरपणे
वर्ते छे. उत्पाद व्यय, अने धुरपणे तोहीज
सरूपणे छे. “ उत्पाद व्यवधुवयुस्त—सद्
लक्षण दव्य ” इति तत्त्वार्थ वचनात् तेने
विस्तारयी बतावे छे

६. धर्मास्तिकायना असर्याता प्रदेश
हे. त्या एक प्रदेशमां अगुरु लघु असर्यातो
हे, अने ग्रीजा प्रदेशमा अनतो हे. ग्रीजा
प्रदेशमा सर्यातो हे. एम असर्याता
प्रदेशमा अगुरु लघु पर्याय घटतो बधतो
रहे हे, ते अगुरु लघु पर्याय चल हे, ते जे
प्रदेशमा असर्यातो हे, तेज प्रदेशमा अनतो
थाय हे, अने अनताने ठेकाणे असर्यातो
थाय हे, अने असर्याताने ठेकाणे सर्यातो

याय हे एम लोक प्रमाण असर्वात प्रदेशा समव्यो समकाले करे हे. जे प्रदेशमा असंगयातो फिटीने अनतो याय हे, ते प्रदेशमा नसरयातपणानो विनाश अने अनतपणानो उपजवो थाय हे, अने उ उच्चमा अगुम्लघुपणे गुण ध्रुव वर्ते हे, एम उपजवो, रिणसवो, अने ध्रुव ए तण परिणाम हे, तेने उत्पाद, व्यय, अने ध्रुव कर्हे हे.

अगर्मास्तिकायमा उत्पाद, व्यय, अने ध्रुवस्त प्रमे परिणाम असरयाता प्रटीक्षे सदा समय समयां परिणमी रागा हे. तेमा पण उपजउ, रिणसउ, अने स्थिर रहेवुं, एज सकू छक्षण जाणवुं.

आकाशना प्रदेशमा पण एक समये तण परिणाम परिणम्या रागा हे. जीवना

असरायाता प्रदेश छे तेमा पण उत्पाद,
व्यय, अने ध्रुव, ए नण परिणाम समय
समये परिणमी रखा हो तथा पुढूगल परमा
णुआमा पण सदा समय समय, उत्पाद व्यय,
अने, ध्रुव ए नण परिणाम परिणमी रखा हो.
कालनो वर्तमान समय मटीन अतीतकाल
याय हो, तो ते काळमा र्तमानपणानो
विनाश हो, अने अतीतपणानो उपजेवो हो,
तथा काळपणे ध्रुव हो, ए स्थुलयकी उत्पाद
व्यय अने उपणो रुद्धो, अने वस्तुपणे मूल
पणे ज्ञेयने पलटवे ज्ञाननो पण ते भासनपणे
परिणमी थाय थाय हो, तेमा पूर्वपर्यायना
भासननो व्यय, अने अभिनवज्ञेय पर्यायना
भासननो उत्पाद, तथा ज्ञानपणानो ध्रुव, ए
रीते संगुणना धर्मनी प्रवृत्तिरूप पर्यायनी

उत्पाद, च्यय श्री सिद्ध भगवत्तमाँ पण समये
समये यड रहो ते.

ए पर्मास्तिकायना प्रदेशे जे भेनगत
अमर्व्याता पुद्गल तथा जीवने पहेले
समये चलण सहायीपणो परिणमतो हतो,
तेन प्रदेशपा रीजा समयमाँ अनत परमाणुआ
तथा अनतजीव प्रदेशने चलणसहायीपणो
थयो तेवारे असंरथाता चलणसहायनो व्यय,
अने अनंता चलणसहायनो उपजवो, अने
चलणसहाय गुणपणे ध्रुव, एम धर्म द्रव्य-
पद्धये उत्पाद, व्यय अने ध्रुवपणो यड रहो
ते. ते प्रमाण अधर्म, आकाशादि द्रव्यमा
जाणवु. तथा रक्षी कार्य कारणपणे उत्पाद,
व्यय, तथा अगुरु लघुपर्यायना चलननो उ-
त्पाद, व्यय, पंचास्तिकायमा, कहेवो. तथा

कालद्रव्य ते उपचारथी द्रव्य हे, तेनु सर्व स्वस्त्रप उपचारथीज कहेहुं ए रीते सर्व द्रव्य मा सत्पृष्ठो हे जो अगुरु लघुनो भेद न थाय, का प्रदेशोनो माहोमाहे भेद थाय नहीं, मांट अगुरु लघुनो भेद सर्वमां छे.

॥ अगुरु लघु ॥

अगुरु लघुपणो कहे हे.

जे द्रव्यनो अगुरु लघु पर्याय हे, ते ह प्रकारनी हानि वृद्धि कर हे.

१ अनतभाग वृद्धि. २ असरयाती-
भाग वृद्धि. ३ सरयातभाग वृद्धि. ४ स
रवशतगुण वृद्धि ५ असरयातगुण वृद्धि. ६
अनतगुण वृद्धि.

ए छ पकारनी वृद्धि रही. हवे उ पकारनी हानि बनारे छे.

१ अनतपाग हानि. २ असंरयातभाग हानि. ३ सरयातभाग हानि. ४ सरयात गुण हानि. ५ असरयातगुण हानि. ६ अन-तगुण हानि ७ छ पकारनी हानि ममजरी.

मर्द इन्यमां ए छ पकारनी हानि तथा वृद्धि सदा समये ममये थर रही छे. उष नरो (उत्पाद) अने हानि शदेतां (व्यष्टि) वहीए, ए अगुर उघुन्ह यगु अगुन लघु गुणां गोपकर्म रोके छे, ए अगुर उगु स-भार सदा समये ममये द्रव्यमा परिणाम ते

ए ए द्रव्यमा जड्या मरखा गुण ले, तेने भाषाय गण यहे छे.

जे गुण एक द्रव्यमा हो अने तो गुण
रीजा द्रव्यमा नहीं, तोने विशेष गुण कहे जाएँ.

जे गुण कोइन द्रव्यमा हो, अने कोइन
द्रव्यमा नहीं, तोने साधारण असाधारण
गुण कहे हो.

ए छ द्रव्यमा अनतगुण, अनतपर्याप्त,
अने अनतस्यभाव सदा शाखता हो, जेवी
रीते थी केवली महाराजे प्रस्त्वा, ते सर्वे
जे रीते हो, ते रीते शुद्ध सद्व्यापुर्वक यथार्थ
उपयोगयी धत्तज्ञानादिक भी यथार्थपणे जा
णवा सद्व्यापा. एवु निश्चयज्ञान ते मोक्षमासिन्न
कारणीभूत हो जे जीव ज्ञान पाभ्यो, ते
जीव विरती करे हो, तेज चारित्र जाणवुं.
ज्ञाननु फल विस्तिपणु हो, ते मोक्षनु
कारण हो.

४ चार ध्यान.

१ आर्त्यान २ रीढध्यान ३ धर्मध्यान ४ शुद्धध्यान

१ आर्त्यान अने २ रीढध्यान एवे दुर्गानिषेतुभूत हे ३ ते यान अशुभ हे. भन्य प्राणीयोने एवे ध्यान त्याग फरवा योग्य हे, धर्मध्यान अने शुद्धध्यान एवे शुद्ध उपास्य हो.

आर्त्यान.

मनमा भ्राह्म दोहड़ना परिणाम ते आत्मध्यान पर्याप्त, आर्त्यानना चार पाया हे.

१ शृणियोग २ भनिष्टमंयोग ३ रोग-रिता ४ अप्रांग.

व्यकाल सर्वयी शोच-एटठे शोक विचारि
चित्तवन, शोच करतो तो अप्रशोच फहीए
जाँ आ वर्षमा अमुक वास करत्थुं तो आवता
वर्षमा अमुक लाभ यदौ, दान, शीयल, अने
तप बगैरेनु फड मागे के जो में तप, दान,
शीयल पाढ्यु होत, तो आवता भवमा दे-
खना थात, वा अमुक थात, चक्रवर्ति थात,
राजा थात अने अमुकनो नाश करनार थात
पूर्वी आगला भवनी जे वाढ़ा हेने अप्र
शोच कहे हे.

आर्तध्यानना चार पाया थकी जीव
तिर्यचनी गतिमा जाय हे, माटे भव्य मणि
योए ए व्यानथकी दूर रहेतु, आर्तध्यान
रूप शधुनो मनमा वास करता देवाथी आ
त्मानी अनंतिकद्विनो नाश थाय हे, आत्मा,

खरेखर आर्तध्यानपी अनादिकाळपी रस-
लयो, अने हजी जो एनो सग नहीं मूके तो
घणा भव भटकते, जे आर्तध्यानने शघुरूप
जाणे हे, ते तेनाथी दूर रहेवा अतःकरणपी
मदेन्त करे हे, संसारमा भुंडनी पेडे रस्या
पस्या थका दुर्ध्यानि ध्यावे हे, ते पामरो
अधोगतिने सेवे हे ससारमा कोइ कोइनु
नपी, चेतन पर—जड वस्तुने पोतानी मानी
अनता दुर्ख भोगवे हे, खरो शघु दुर्ध्यानि
हे, ए दुर्ध्याने प्रसन्नचंद्रराजपिने सातभी
नरफन। दलीया संचरन्दा, (एकठा कराव्या)
पण धर्मध्यान रूपी योद्धाए आगो दुर्ध्यानने
हडायी, पौक्षरप स्त्रीनो मेलापकरावी आप्यो
आश्चर्य एडलुज थाय हे के जीव पोते हित
तथा आहिने जाणे हे, उता अहितमा वर्ते हे

निश्चय महात्माओ द्वदयस्प मरक्षमा चलन
 सरखा आर्तध्यानने प्रोश करवा देता नथी
 आत्मदैतेपि भोए हु कोण छु, क्यारथी आव्यो,
 क्या मझ, तार कोण, हु कोण, ए यार्यनो
 उपयोग पूर्वक विचार थरी त्याय वस्तुनो न्याग
 करवो एज दितकारक है, चारसार आ
 मनुष्यजाम परमवो दुर्लभ हे भव्यो ॥ ॥
 जो धर्मसामग्री पार्मी यमाद करशोतो धर्णा
 भर मटनशो, अयोर दुष्यमार्थी दुर्घटनो आ
 उत्तम अवसर हे, एम ज्ञानीओ पुस्तकद्वारा
 जणावे हे,

आर्तध्यानना परिणाम पाचमा दधा
 छहा गुणठाणा सुधी दोय हे, कारण के
 छहु गुणठाणु प्रमत हे, मरेते त्याए याननो
 परिणाम सभवे हे

२ रौद्र ध्यान.

१ हिंसानुरंधीरौद्रध्यान २ मृपानुरंधी-
रौद्रध्यान ३ अदत्तानुरंधीरौद्रध्यान ४ परि-
ग्रहानुरंधीरौद्रध्यान.

१ जे हिंसा करीने हर्ष पामे, वीजो
कोइ हिंसा करतो होय तेने देवी खुश थाय.
अप्ता युद्धनी अनुमोदना (प्रशंसा) करे,
तेने हिंसानुरंधीरौद्रध्यान करे ते

२ जुठु बोली मनमा हर्ष पामे. अहो
र्घ केउ कपट कर्यु के-पारा जुडापणानी
कोइने खरर पटी नही एवो मृपावादरूप
परिणाम, तो मृपानुरंधीरौद्रध्यान कहेवाय छे.

३ चोरी करी, डगाइ करी मनमा
राजी थाय, अने चित्रे जे पारा जेरो
कोण नल्यान् छे, के जे पारको माल खाय
छे. चोरोने चोरी करवामां सदाय आपवाना

पाणस अंथ समान रनी जाय छे, तेम
 पाणस रौद्रध्यान रूप अंथारी अघोर रात्रीमा
 अग्नानी वनी जाय श्रे अघार रात्रीमा
 तेम चोरोनो मचार पाय छे, अने तेमा
 खातर पाढे छे, तेम रौद्रध्यानस्प अघोर
 रात्रीमा राग, द्वेष, मोट, माया अद्वेताः
 निदा, क्षेश, चाढी, अने असत्यस्पी चोरा
 भात्यानी अनत कुदि लुडे छे रौद्रध्यान रूप
 परिरा अत्यन्त वेभान कर्त्ता छे तथा अनन्त
 हु वना हेतुभूत छे. हे चेतन ! ! ! तु आपो
 आप चिचार के रौद्रध्यानस्प शङ्कु तने हित
 कर्त्ता छे के अहितकर्त्ता छे । हितकर्त्ता तो
 कदापिरालि कदी शकाय नहीं, अने आहित
 करनार तो प्रत्यक्ष देखवामा आवे छे, छता
 हु केम तेनो सग छोडतो नयी । तु तने

(१३३)

कइ पैसा घेसे छे । ना तेम पण नर्थी. द्रढ़द-
हारी जेवा दिसफे पण ए शमुनो संग
त्याग कर्या त्यारे ते मुगव पाम्यो, हे चेतन ॥॥
तु विचार के ए रौद्रध्यानरूप शमुना बशमां
पहेलो प्रभ्यण शिठ, तथा सभूम चक्रबर्ती
नरकलां महा रारव दुख मोगवे छे, तेम
छतां केम तु कइपण पनमां विचार करतो
नर्थी. सूर्यनं तथा चन्द्रने जेम राहु घेर छे,
तेम तजे रौद्रध्यानरूप राहु प्रहण करे छे.
जेम फोयला खागाठी फाळु मुम्ब पाय छे,
तेम राढ़ शनर्या समजबु छाखो शमुओने
जीतनागाभो पण रौद्रध्यानरूप शमुने जीती
शक्ता न री, एयुं अगुभ, आत्मघाती, मलीन
रौद्रध्यान छे. एनो खतपूर्वक त्याग करवो,
एन दिनकारी शिशण छे. ए वे ध्याननो

त्यारे हवे कोनो स्वीकार
 । तेवी आकांक्षा पता धर्म ध्याननो
 स्वीकार करवो एम शास्त्रकार जणावे छे,

३ धर्मध्यान.

दुर्गतिष्ठ पडता भ्राणियोने पारण करी
 राखे अर्थात् दुर्गतिमा पडवा दे नहीं अने
 उच्च गति आपे तेने सामान्य प्रकारे 'धर्म-
 ध्यान कहे छे.

निमोद स्वरम जेवी रीति कहुँ छे, तेवी रीति
 हृदयमां धारे, यथातव्य करी माने—सहहे.
 वीतरागनी आज्ञा नित्यानित्यपणे तथा नि-
 श्वय व्यवहारपणे माने, अद्वा करे, तथा च-
 त्सर्ग अपादपणे माने, अद्वा करे ते आज्ञा
 पमाणे जेने य गर्थ उपयोग मालन थयो,
 तेना इर्पथी ते उपयोग पव्ये निर्धार भा-
 मन, रमण, अनुभवता, एकता, तेमा तन्म-
 यपणुँ, ते ध्यानने आज्ञा विचय, धर्मयान
 बहे हे

अपायविचय-जीवमा जे अगुदप-
 पाथी कर्मना सयोगे संसारी जबस्थापां
 अनेक प्रकारना अपाय रहेतां दृष्टि छे ते
 अश्वान, राग, द्वेष, कषाय, अने आखब ते
 पारा नथी, तेना यकी हु अनंतोकाल रक्षार्थ्यो

अनेक प्रकारनी आहुतिने धारण करी
 चार गतिमा भम्या करु ल्लु ते अश्वान, राग,
 द्वेष, मारो यात कर्त्ता हो, ते मारा यक्षी भिन्न
 हो, हु ते थकी जुद्दो ल्लु, अनन्तशान, अनन्त-
 दर्शन, अनन्त चारित्र अने अनन्त दीर्घमयी
 ल्लु शुद्ध, शुद्ध, अविनाशी ल्लु, अज अनादि
 अनन्त, अस्य, अपर, अगल, अकल,
 अमल, अगम्य, अनामी, अर्पण, अरुमी,
 अरूपी, अछेदी, अभेदी, अरेदी, अलेशी,
 अयोगी, अभोगी अरोगी, अकषायी, अखेदी
 अगरीरी, अनाहारी, अव्यायाध अन
 वगाही, अगुरुलघुपरिणामी, अयोनि, अ
 प्राणी, अतीद्रिय, अपर, अपर, अपरम्पर,
 अव्यापी, अनाश्रेत, अक्षय, अविरुद्ध, अ
 शोकी, असगी, लोकान्वेकज्ञायक, शुद्ध अने

धिदानदमय मारो आत्मा हे. एवो एकाग्र-
वारुप जे व्यान, तेने अपायविचय धर्मयान
फडे हे.,

३ विपाकविचय—पूर्वोक्त विशेषण युक्त
मारो जीर हे, पण 'अनादिकालथी' कर्मनो
सरथ आत्मानी साथे लोलीभूतपणे हे, तेथी
जीव भनता हुन्न भोगवे हे. कर्मवरो जीव
हुःसी हे. कर्मनो विपाक चित्रे जे—जीवनो
शानण ते शानावरणीय कर्म दाढ्यो हे, जी-
वनो दर्शन गुण ते दर्शनावरणीय कर्म दाढ्यो
हे, विषाणुध गुण ते वेदनी कर्म रोकयो
हे, क्षायिक गुण ते पोदनीय कर्म रोवयो हे,
भजनस्थितिरूप जे गुण ते आयुष्य कर्म दा-
ड्यो हे, जीवनो भरूपी गुण ते नामकर्म दा-
ड्यो हे, अशुर लघु गुण ते गोप्त्र कर्म दाढ्यो

अने अनेत चीर्पे गुण ते अंतराय कर्म रोकयो छे. एम आत्माना आड गुण ते भाड कर्म रोकया छे. आ ससारमा भमता थका जै जीवने मुख दुख थाप छे ते कर्मधी थाप छे. माटे पौद्गालिक मुख उत्पन्न थपे छने खुशी थबु नाहि, दुख आवे छले शोक करवो नहीं. कर्म स्वरूपनी प्रकृति, स्थिति, रस, अने प्रदेशनो वध, उदय उद्दिष्टा, तथा सत्ता चिंतवानो जे एकाग्रतारूप परिणाम, तेने विपाकविचय घर्मयान कहे छे

* संस्थानविचय—चाँद राजलोकलो स्वरूप आ प्रमाणे विचारि. आ लोक चउद राज प्रमाण उचो छे, ते माये सातरान अधोलोक छे, बचमा अहारसो योजन मनुष्य सेन तिर्झे लोक छे, ते उपर कइक उँग

सातराज दर्ढलोक हे, तेमा सर्व वैपानिक
 देवता घेसे हे, अनंते उपर सिद्धशिला हे,
 तेना उपर एक योजनना चोरीस भाग
 करीए वैमाना नेवीस भाग नीचे मूर्खी
 द्यरना चोरीसभा भग्ने सिद्धसेवः हे, ए
 रीते लोकनु प्रमाण हे, ए लोकनु सद्यान
 बैशाख हे, अनंहकाळ पर्यंत जीवे संसारमां
 ममता, मर्व लोकने जन्ममरणदे इष्टयों हे,
 एवु जे लोकनु स्वस्य चितव्यु तथा लोकमाँ,
 रहेला पर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय आदि,
 पंचास्तिकायनु अवस्थान तथा परिणमन
 तथा द्रव्यमये गुणपर्यायनु अवस्थान तथा
 द्रव्य मये रहेला उन्पाद, उषय अने धुबनु
 सन्तप्तु तेनु जे एकाग्रताए, तन्पय चितव्यन
 परिणाय, तेने संस्थान, पिचय, धर्षण्यान
 कर्हे हे,

आ आरामा (काळमा) भव्य प्राणी
योने धर्मध्याननो आधार विशेष उ. माटे तने
विषे तत्पर थवु ते सुखकारी उ, धर्मध्यान
चोया गुणठाणाथी माछीने सातमा गुणठाणा
मुथी होय छे.

४ शुक्लध्यान.

शुक्र घटेता निर्मल शुद्ध परभान्दन
विना आत्माना स्वम्पने त-मयपणे 'ध्यावदु
तेने शुक्लध्यान कहे छे तेना पाया ४
चार छे

१ पृथक्ल वितर्क सपरिचार (२)
एकत्व वितर्क अपरिचार (३) सूक्ष्म क्रिया
अपतिपाति (४) ऊँचिङ्गन क्रिया निवृत्ति
ए चार शुक्लध्यानना पाया छे.

(१९१)

२ पृथकूत्त वितर्क सप्रविचार-पृथकूत्त
 पहली जीवी अजीव जुदा करवा, स्वभाव
 तया विभावनी जुदी पृथकृपणे वर्द्धन करवी
 स्वरूपने रिषे द्रव्य तया पर्यायनो पृथ
 कृप एट्टेले जुदापणे यान करी पर्याय ते
 गुणमा भैंदमावे, अने गुण ते पर्यायमा संकृ-
 मावे, ए रिते व्याधमेने रिषे धर्मातरः भेद ते
 पृथकूत्त बहीए, अने तेजो वितर्क ते जे शु
 द्धार्थ स्थित उपयोग, अने सप्रविचार ते
 मार्गिकूत्त उपयोग, एट्टेले एक चितव्या पडी
 र्हाजो विनश्वो, तेजे सप्रविचार कहीए.
 एर्हे निर्धन्त रिकूत्त रहित पोतानी सत्ता-
 न घ्यावे, ते पृथकूत्त विनक्स सप्रविचार ना-
 फनो एट्टो पायो जाग्यो, ए एहेलो पायां
 आठमासी अग्रीयारमा गुणठाणा । मुषी

होय हे

२ एकत्ववितर्क अप्रविचार-मे जीव
आपणा आत्माना गुण पर्यायनी एकता
करी ध्यावे, ते आगी रीते षे-जीवना गुण-
पर्याय अने जीव ते एकज हे, मारो जीव
सिद्ध स्वरूप एकज हे, एको एकन्ब स्वरूप
तम्मयपणे अनला आत्मधर्मनो एकन्बपणे
ध्यान-वितर्क फेता श्रुतज्ञानालंबीपणे अने
अप्रविचार केहता विश्ल्य रादित दर्शन-
ज्ञाननो समयातरे कारणता विना रत्नवर्यी
नो एक समयी कारण कार्यतापणे जे
ध्यान, चीर्ण उपयोगनी एकाग्रता ते एकत्व-
वितर्क अप्रविचार जाणवो. ए तीजो पायो
थारमा गुणठाणे न्यावे, ए बेड पायाम् । श्रु
तज्ञानालंबीपणो हे, एण अवधि मनःपर्यव

ज्ञानोपयोगे वर्ततो जीव कोइ भ्यान करी
शुके नहि कारण के ए ते ज्ञान परानुयायी
छे माटे ए व्यानथी यनघातीया चार फर्म
खपावे, निर्मल केवलज्ञान पमि, पछी तेरमे
गुणठाणे व्यानतरीए रहे. तेरमाने अंते
अने चडदमे गुणठाणे नीचे अमाणे बेशाया
व्यावे.

३ सूक्ष्मक्रियाअप्रतिपाति-सूक्ष्म मन
वचन कायाना योगरूधे, शुलशी करण करी
अयोगी थाय, अप्रतिपाति निर्मल वीर्य अ-
चलतास्तप परिणाम ते सूक्ष्म क्रिया अप्रति-
पाति यान जाणबुँ. इहा सत्ताए ८५ प्रकृति
रही हती. तेमाथी ७३ सूखपावे.

४ उच्छ्वास क्रियानिवृत्ति-जे योगरु

धन कीथा पागी जोप तेर प्रहृति खपावे, अ-
पीयी थाय, सर्व कियार्थि रदित थाय ते स
मुष्टिश्र मियानिवृचि शुक्लध्यान जाण्वै
ए ध्यान भ्यावता जोप कर्म प्रहृतिष्ठ खरण
रूप क्रिया ऊँठेदे, भ्रगादना देहमानमार्थि
ब्रीजा भाग घटादे, शरीरनो त्याग करी
अहोर्थी सातराज उपर लोकने भने जह
मिढ थाय.

इवं बीजा चार भ्यान कहे छे. (१)
पदस्थ (२) पिदस्थ (३) रूपस्थ (४)
रूपतीत.

१ अरिहत, सिढ, आचार्य, उपाध्याय
ज्ञे साधु ए पचपरमेष्ठीना गुणने संभार
तेनु हृदयमा भ्यान करे ते पदस्थ ध्यान
जाण्वु.

२ शरीरमाँ रह्यो जे आपणो जीव तेमां
अरिहत, सिद्ध, नाचार्य, उपाध्याय, अने
माधुपणाना सर्व गुण छे एहसु जे भ्यान ते
पिंडस्थ ध्यानफलीए. अपवा गुणीना गुण
मध्ये एकत्वता उपयोग फरवो ते पिंडस्थ
ध्यान जाणवुँ.

३ शरीरकर्मादि रूपमाँ रह्यो यको पण
मारो आत्मा अस्पी अनंतगुणी छे, शरीरमा
रहेला आत्मामा यान बडे तछीन थबु.
ब्रह्मार्घादि स्थानोमा ध्यान घरबु, तेने रूप-
स्थध्यान कहे उ. ए त्रण ध्यान थर्म ध्या-
नमाँ गणवा.

४ रूपातीत-निराकार, निःसंगी, नि-
मेल, संकल्प विकल्प रहित, अभेद, एक,
शुद्ध, सत्त्वारप, चिदानन्द, असङ्ग, अखड,

अनतगुण पर्याप्त रूप आत्मस्वर पनु ध्यान,
ते रूपानीत ध्यान जाणतुं अर्द्धिया मार्गेणा,
गुणठाणा, नय, प्रमाण, मति आदिक भान,
सत्योपशमभाव, सर्वं त्याग दरवा योग्य हैं
ए रूपानीत ध्यान कहु विशेष चार ध्याननु
स्वरूप योगदात्त आदित्यी जाणतु.

श्रीजु धर्म ध्यान नेनी चार भावना
यहे हैं ॥

चार भावना

(१) मैत्री भावना (२) प्रमोद भा-
वना (३) फारण्य भावना (४) माघ्य
रूप भावना.

मैत्री भावना

सर्वं जीव साथे मिश्रता चित्तबर्वी, को-

जीव मारो दुश्मन नयी, सर्वे जीवना आत्मा
 सिद्ध समान सचाए छे, अने कर्मना बशथी
 ससारमा मुखी दुःखी देखाय छे, ते सर्वे
 जीव मारा सजातीय भाड छे, एकेन्द्रियादिथी
 पञ्चेन्द्रिय सर्व जीव सजातीय छे, ते मारा
 गाथप छे, मित्र छे. तो तेमना उपर मारे
 द्वेष करवो न जोइए, तेमनु भलुं चिन्तवयु.
 मारु घरान करवाने फोड समर्थ नयी, कर्म-
 नोन ए प्रपच छे, कर्म ए जड वस्तु छे,
 अचेतन उं, रूपी उं, कर्म वस्तु विजातीय
 ने, ए थकी मारं दूर रहेउ जोइए, अने
 एना प्रपचमा फसायु मारे योग्य नयी,
 अनादिकाल्यी कर्म जड वस्तु मने चार
 गतिमा भटकाउ छे, अने मारु पोतायु
 स्वरूप ओङ्खरा देनुं नयी, जेम दारु मारा

माणसने पण नेभान रत्नारी दे छे अने तेना
गुणनो नाश करे छे, तेम पर्यं पारा गुणनो
नाश कर्या छे.

जेम फोइ पाव मिश्री हळीमळीने दर
रोज एफडा रहे छे, अने एक घीजा सापे
सारी रीते मिश्रना राखे छे परस्पर भलु
गाहे छे एक दिवसे पाच मिनोए दाढु
पीयो, ते दारनी नीशा गृह चरी, ल्यारे ते
परस्पर गाळे देवा छाग्या, अने एक
घीजाने मारवा छाग्या, तेमा ए सर्व प्रपञ्च
नु कारण दाढु छे. हवे ज्यारे ए दाढनो
नीशो उतरी गयो त्पारे ते एक घीजा सापे
हळीमळीने बातो करवा छाग्या भेनीमिश्र
पणे बर्तवा छाग्या. तेम कर्मस्पी दाढना
जुस्साथी सर्व जीयो एक घीजाने गश्च-दु-

दमन, भाइ वैन, बोरे प्रपञ्च तरीके माने छे,
 पण तेमा जीवोनो काइ वाक नयी. ए स-
 वैनुं कारण कर्म छे कर्मबडे जीव थीजा
 जीवने दुःमन तरीके घारे छे, पण तेमाँ
 कोइ जीव कोइनो दुःमन नयी, कर्म थकी
 रहीत थएला सिंदू महाराजनु कोइ खराब
 करवा समर्थ नयी, तेम हुं पण ज्यारे कर्म
 रहित थइश, त्यारे कोइ मारु खराब करी
 शकवा समर्थ नयी, कर्म तेज दुःखकारी छे.

कुतराने कोइ माणस काकरो मारे तो
 ते काँकराने करडवा दोडे छे. सिहने कोइ
 माणस गोळी मारे तो ते गोळी तरफ नाहि
 जताँ ए गोळी कोणे मारी एम लक्ष्मी मारनार
 सामो दोडे छे. तेम केटलाक प्राणी कुतरा

गोड जीव उपर द्वेषभाव करता नहीं।

पारा आत्माने भेद मर्म लाग्या है, तैसरीजा जीवोने पण वर्ष लाग्या है पण भास्त्राभी तो सर्वनां सरमा उठे मारे। आत्मा अस्त्री भनन्तस्थान, अनन्त दर्शन भने अनन्त रारिशनो भोक्ता है, सर्वे जीवो गुणोरटे एव मरमा छीष सजारीय छीष माटे मर्वे जीवो मारा मित्र है, पक्की भावनाने मैश्री भावना फैहे है, मर्व जीव उपर हितवृद्धि राखवी तेने मैश्री भावना पहुँचे

२ रीत्री प्रमोऽ भावना पहुँचे सुण बन्त अन्त शनिादिष्ठ उपर राग तेने प्रमोऽभावना कहे हैं। एवं वरता जीवोने देखी सुशी थयु, ज्ञानबन्त वैरागी सुनिष्ठीने देखी हृष्ण परयो तथा दश द्रष्टव्ये द्वारीले

मनुष्य जन्म पार्वीने आपकु फुलमा अवतार
आदि धर्मनी जोगवाड़ पार्वी हर्ष बरबो, तेने
प्रमोद भावना कहे हैं।

३ धर्मवंत उपर राग नहीं अने मिथ्या
त्वी उपर हेप पण नहीं तेने मायस्थ भावना
कहे हैं हिंसक जीव उपर पण उत्तम जीवने
करुणा उपजै, उपदेश देवा थकी जो सारा
मार्ग आये तो तेने शुद्ध मार्ग आण्यां क-
दाचित् मार्ग न अरि तो पण द्वूप न करबो
कमके ते अज्ञाण है एम जाणतु, ए माय-
स्थ भावना।

४ सर्व जीवने पांताना तुल्य जाणी
दया पाले, कोइने हणे नहीं, तथा जे दुःखी
होय, धर्महीन होय, तेना उपर करुणा लावे,
अने तेनु भलु करवा घाँ, तथा धर्महीन

मनुष्य देखीने एम इच्छे के आ मनुष्य परार
धर्म पासके ? यथार्थ आत्मवदना स्वरूप
र्मने क्यार अबलवद्दा ? एवो जे परिणाम
होने चोपी फार्म्य भावना कहे हैं

वार भावना

अनित्य भावना.

? शुहेन, घन, शुष्र अर्न परिषारादि
सर्व विनाशी है. मत्यक्ष देखाय है ते शरी
पण एक दिवस जाग पासके, जीवनो मूल-
धर्म अविनाशी है, जे जे नजरे देखवामा
आये है ते सर्वनो जाग थायहे एम विचारमु
ते पहेली अनित्यभावना.

अशरणभावना ।

२ संसारमां जीवने मरण समये शरण
राखवा कोइ समर्थ नथी, माता, पिता,
भाइ, बेन अने पुत्रादिना जोतां शरीर मूकी
जीव परलोक प्रयाण कर छे, ते कोइनापी
रखातो नथी. राजा होय वा रंक होय,
कीडो होय वा ईद्र होय, तो पण मृत्यु कोइने
मरक्तु नथी. चार गतिना जीवोने मरण थकी
रक्षण करी शरण राखवा कोइ समर्थ नथी,
पण विचारखु ते थीजी अशरणभावना
जाणवी.

संसारभावना.

३ कर्मना योगे जीव घारगतिख्य सं-
सारमां अनादिकालधी जन्म मरण करे छे,

अने असय दुख भोगवे छे. मसार चल्ला
अपि (दावानज) समान छे. उनम पुर्णपी
ए चारित्र ग्रहण करी ससारनो त्याग वयो
छे. अरे हु महा पापी ममारमा राम्पो
मार्यो ए हु ह्ये हु. यमय मसारथी वयोरे
दुटीश ? आ ममाणे विचारणा ते ससारभा
बना जाणदी.

एकत्र भावना

ध जीव एफलो भाव्यो छे, अने अहीयो
एफलो यीनी गतिपा नाय छे धन
प्रान्यातिक परिग्रह, पुष, अने फलश, बो-
सापे आरमानु नभी. हुडुरनु पे भरव
माह दिसा, असत्य, चोरी—ह एष्टर्यं
हु लक्ष्मी पेदा फरु छु, पण तेथी यएल
पापमाथी फोड भाग लेनार नभी क

रेल कर्म मारे एकलाने भोगबद्यु पडशे, सगा
 वहाला, बहालीस्त्री, पुत्र अने दीकरीओने
 जन्मती यम्हते साथे लाज्यो नहोतो. पूर्व भ-
 गना संयंधथी मारे तेमनो मेलाप थयो छे,
 पण भेते सर्व मृक्ती मारे एकलुं जयु पडशे.
 जे जे प्रमाणे अहीं हु धर्म या अधर्म कर्तु
 छु, ते ते प्रमाणे परभयमाँ सुख दुःख पा-
 पीश. परने मार मानी हु मलकार्डं छु, पण
 वस्तुतः कोइ मार्ह नथी. सप्तष्टे करी सर्व
 मेगु थयु छे, ते सर्वनो एक दिवस वियोग
 पाय छे. चोराशीलाख जी नायोनीमा भमता दश
 हृष्टाते दोहीलो मनुष्य जन्म पामी, हे चेतन !!!
 हृषे केम प्रमाद कर छे आखो दिवस घाचीनी
 पाणीना बळदनी पेठे पापकाममा लागी राहो
 छे, पण जाणतो नथी के मूढ ! अते अनंतु

दुःख मोगरबू पठ्ठे. देखाता शरीरनी पर्न
 भने र्घाव थइ जवानी से काया माटीमा
 माटीसप थइ जशे. आ रसते जेरी धर्मनी
 सामग्री मल्ही छे, तेही गारबार मल्नार नपी.
 पारे हे चेतन ! ! चेत ! चेत ! माये काढ
 झापाटा देत. हु उपायी आध्यो, उपा जाइ,
 तुं फोण छे, तार फोण छे, एनो विषार
 फर. राम, रामण, पाँडप, फौरव भने
 लक्ष्मण जेवा थीरपुरपौ एक गया, तो त
 केम मोहरानानी येनमा उँपे छे ? जाग !
 जाग ! एकत्वपणु धार इत्यादि निचारणा
 ते एक ब्र भावना जाणदी.

अन्यत्वभावना

६ आ ससारपा फोइ फोइनु नपी. सो

स्वार्थनुँ सगु छे. ज्यारे आपणाथी वीजानो स्वार्थ सरतो नयी. त्यारे अन्योनु आपणा उपरथी हेत उतरी जाय छे हे चेतन ! तारी नजरे जे जे पदार्थो देखाय छे, ते ताराथी जुदा छे, अने हु तेनाथी जुदो छे. माता, पिता, भाइ, बेन, स्त्री, पुन अने धन ए सर्व हे जीव ताराथी जुदां छे. हश्य शरीर छे ते पण हे चेतन ! ताराथी जुदु छे, लेश्या, योग, पाच सस्थान, पाच शरीर, तथा पाच संघयण, दस माण, अने पाच इन्द्रियो. ए सर्व हे चेतन ! ताराथी जुदु छे तेनामां पोतापणु मानीश नहीं. एम विचारयु ते अन्यत्र भावना जागवी.

अशुचिभावना.

६ शरीर अपवित्र मळ मूत्रनी खाण छे.

अगुच्छिमय छे, पुरपना नव अने स्त्रीना वार
द्वारथी सदा अगुच्छि नीको छे, राल शरीर
पवित्र लागे छे, पण रोग थए छवे दुर्घटी
युक्त थइ जाय छे, मास, रधिर, भद्र अने
हाडका चोरथी शरीर गन्ध छे, तेने देखी है
चेतन । तु शु राचे उ गर्भगसं कीडानी पैठे
नवमास मलमा रखो, मूर्यनो मकाश आवे
नहीं, अने उधे मस्तके रहेयु, एहवा गर्भना
दुख चेतन शु तु विमरी गयो ? अगुच्छिमय
काया देखी मोइ पापी शु राचे छे ? पण
निचारउ ते छही अगुच्छिभागिना.

आस्त्रवभाविना

७ मिथ्यात्य, अधिरति, कपाय,
अने योगथको जीव आस्त्रवनु ग्रहण
करे छे. शुभाशुभ कर्मना द्व्यायां आश्रवानो
जे रस्ता तेने आस्त्रव कहे छे. शुभ श्ली

याने पुण्य कहे छे, अने आत्मानी साथे
 छागेला जे कर्मना जगुप दलीयां तोने पाप
 कहे छे. हिंसा, असत्य, चोरी, मैयुन अने
 परिग्रह रूप आस्तवयी कर्मनो यथ थाय छे.
 राची माचीने पाच इंद्रियोना ब्रेवीश विषय
 सेववाथकी आस्तवनो रँघ थाय छे. प्रमा-
 दना धगथकी, तेमज मन बचन कायाना दुः-
 प्रणिधानथी तेमज क्रोध, मान, माया, लोभ,
 हास्य, रति, अरति, शोक, भय, दुग्धा,
 स्त्रीवेद, पुरुषवेद, अने नपुसकवेद, ए आ-
 दिधी आस्तव थाय छे. जीव अनादि काळथी
 आस्तवना योगे चार गतिमा भन्या करे छे,
 अने तेथी अनेक मराना दुख पामे छे. ए
 आम्ब महा दुखदायी छे, आत्मानु अहित

लारक आम्रप छे पांट तेजाथी हे चेतन ! हु
त्रूर रह, एम विचारयु ते आस्त्रभावना, आ-
त्मनो संघर्ष अमर्ती जीवने अनादि अनंत
छे अने भवी जीवने अनादि सात छे.

७ सवरभावना

आस्त्रनो जेनाथी रोध पाय तेने
सवर कहे छे जीव भावना भावे के-इर्या
समिति, भापासमिति, एषणासमिति इत्या
दि पाच समिति अने श्रणगुप्ति शुद्ध क्षपारे
पाळीश, अने नावीस परिमद्दने समभावे
क्षपारे सहीश चेतन ! विषयाभिलापावी मन
पालु वाळ, क्षात्यगदि दक्षाविध यतिधर्म शुद्ध
पाळगा उद्यम कर के जेथी आत्महित पाय
यनिधर्म भवोभवना दुख टाळनार छ, अने
पचपी गति जे मोक्ष तेने आपनार छे. धर्म

छे ते मुनिवरने के जे मान अने अपमानने चित्तमां सम गये छे, सोनु अने पापाण चि रामां समगणे छे, शङ्ख पित्र उपर समहाइ राखे छे, पाँच प्रकारना चारित्र हे जीव तने वयारे श्रास थशे. क्यारे एकाकी अप्रतिबद्ध विद्वार करीश हे चेतन कोइपण जीव साथे वैर विरोध करीश नहीं कारण के तेथी भयोभव दुख पापीश. कपट कर नहीं. विष्वासपाती थाइश नहीं. संसाररूप समुद्रमा बुडाडनार नव मरुआरनो परिग्रह छे, तेनो त्याग कर. मृछा—ममता राखवारी जन्म मरण करवा पडे ले, तो साक्षात् नवरिध परिग्रह केवा केवा दुख पमाड्डे तेनो विचार करी परिग्रहनो त्याग कर. विष्यने विष (ज्ञेर) सरखो जाण. एकेक इंद्रियना

गुनि, देवणगुमार अने गजमृकुमाल जेवा मु
नीभरोने धन्य छे के जेओए उग्र तपश्चर्पा
करी ते. हु पण उयोरे तेवी रीते तपश्चर्पा
करीश, न्योरे धाय दिवस मानीता इत्यादि
विचारणा ते निर्जर भावना जाणबी.

१० लोकस्वरूप भावना

चहदराजलोकनु स्वरूप विचारेत
ते लोक स्वरूप भावना जाणबी. एनु स्व
रूप पूर्वे लग्बधामा आन्यु छे तेर्ही अर्थ
नपी लरयै

११ चोधिदुर्लभभावना

समारम्भा भमता जीवने समकित
मासि थवी दुर्लभ छे. समाकित पास्या छ
चारित्र ग्रहण यस्यु दुर्लभ ते.

त्यादि विचारणा ते वीथिदुर्लभ भावना जाणवी।

१२ धर्मना कथक सद्गुरुनी दुर्लभता.

धर्मना कथन करनार सद्गुरु तथा जिनेश्वर भगवान्‌नी स्याद्वादमय वाणी सांभळवानी सामग्री पामची दुर्लभ हे, धर्मगुरुनी शासि दुर्लभ हे, ते नारमी धर्मदुर्लभ भावना जाणवी।

ए वार भावनानो विस्तार, अब्र ग्रथ गौरवना भयथी क्यों नथी, विशेष अधिकार नीजा प्रथोपकी जाणवो, मनुष्य जन्म पामी आलस्य, विपय, कपाय अने परभावमां जो आयुष्य गालीश तो हे चेतन ॥ ॥
दुर्गतिमां जाइश आत्मस्वरूप

सपनित सहित ज्ञान, दर्शन, चारित्र ते
 मोक्षनु पारण छे ज्ञान सहित चारित्र न
 ग्रहण यदि ज्ञाने तो पण ऐणिक राजानी
 पैदे सदहणा शुद्ध राजवी, जो ममकिल
 शुद्ध छे तो मोक्ष आसन्न छे कथु छे के
 दसण भट्टोभट्टो, दसण भट्टोइनचिधि
 निवाण, सिंजङ्गति चरण रहिया,
 दसण रहिया न सिंजङ्गति ॥ ९ ॥
 वक्त्री आगममा कथु छे क जसक्कहतकी
 रह, अहवा नसकई तयमिसदहणा,
 सदहमाणो जीवो, वच्चइ अथरा-
 मरठाण ॥

अर्थ—रे जीव हु करी शक्के तो कर अने जो
 न करी शक्के तोषण जेयो बीतराग भगवत्ते
 स्पाद्धादरूप उपदेशयो छे, ते प्रमाणे ॥

हयमां शुद्ध अद्वा राख, अद्वा घरनार अनु-
क्रम मोक्षस्थानक पमि छे. जीवाजीवा
पुण्ण, पावासवसंघरो य निज्ज्ञरणा,
बधो मुख्यो य तहा, नव तचाहुति
नायव्वा—जीव, अजीर, पुण्य, पाप, आ-
सव, सवर, निर्जरा, यथ अने मोक्ष, ए
नवतरय जाणवा योग्य छे.

हेया बधासव पुण्ण पावा
जीवाजीवाय हुति विन्नेया, सवर
निज्ज्ञर मुखो तिन्निवि ए उवादेया
॥ २ ॥ यथ, आसव, पुण्य अने पाप ए
चार तस्व त्याग करवा योग्य छे. जीव
अने अर्जीष तस्य जाणवा योग्य छे संवर,

त्याने जाणी उपादेय करी ध्यावे तेने सम
कित जाणु.

चउदराज लोकनो खथ लोफकाकाज सा
दिसात हे, ते आर्हा रीते के लोकना मध्य
भागे आठ रचन प्रदेशयी माईने सादि हे,
अने चउदराज लोकनो अन आवं स्था सात
तथा एक चउदराज लोकनो छछो प्रदेश मु
कीनि पछे अलोकनी आदि क्षेत्री, पण अ
लोकनो अत नधी, माटे सादि अनन
क्षयो हे.

छ द्वायना यथार्थ ज्ञानपूर्वक पाच द्रव्य
नो त्याग परिणाम अने जीव द्रव्य आदरवनि
परिणाम तेने समावित ज्ञान कहे हे ते सम
कित ज्ञानधी भलुन थाय हे नहु हे के-
विं गिहियव्ये भगिहियव्ये इन्द्र

अच्छमि जडवपेन्द्रजो सोउपपसो तओनाम,
भावार्थ—हानर्थी उ द्रव्य जाणीने आदरवा
योग्य होय ते अदंर, अने त्यागवा योग्य
त्याग करे एगो ज उपदेश ते नय उपदेश
जापवो.

इवे समकितनी दशरुचि कहे छे

२ निसर्गरुचि—ते निश्चयनये जीवादि
नवतत्त्व जाणे, आस्तरने त्यागे अने संवरने
संपै, वीतरागना कहेला छ द्रव्यने द्रव्य,
क्षेत्र, काढ, अने भावर्थी जाणे, नामादि चार
मिमेपा निनाज्ञा पूर्वक पोतानी बुद्धिर्थी जाणे
सदहे. वीतरागे कहेला भाव सत्य छे, एम
जाणबुँ ते सम्यकल ते.

उपदेशरुचि—नवतत्त्व तथा उ द्रव्यने
गुरु उपदेशर्थी जाणीने सदहे ते

आज्ञारुचि—वीतराग मुगवते को-

३ आळानुं गान्यपङ्कु तेने जाह्नारुचि कोे छे

४ सूत्रहचि—रक्तमात्रात्रमा तिथि
मान, पिस्तालीन आगमाचि मृष्टमूत्र, तणा
तन्पूती, पात्प, चृणि, दीपा ए परामीना
पचन माने ते जीव सूत्ररग्मिन कदेवाय छे.
आगम भणशानी तथा नाभजनानी घणी
चाहना होय ते मूत्रारि जाणरी

५ बीजहचि—गुरुमूत्रधो एक दूनो
अर्ध सापलीने भर्नेक पट माटे त यीजरहचि,

६ अभिगमरुचि—गुरु—सिद्धात भर्य
सहित जाणशानी इच्छाने अने अर्ध विचार
सापलशानी घणी चाहनान भाभगदरुचि
कोे छे.

७ विस्ताररुचि—पद्मदेयना शुणपर्या

यने चार प्रमाण तथा सातनये विस्तारथी
जाणगानी रुचिने विस्ताररुचि कहे छे,

८ क्रियारुचि-ज्ञान, दर्शन, चारित्र,
तप, प्रिनय, वैयाकन्य, समिति, गृसि, चरण
सिंचरी अने करण सिंचरी सहित, आत्म-
धर्म साथे जे रुचि तेने क्रियारुचि कहे छे.

९ सक्षेपरुचि-अर्थज्ञान घोडुँ फटे छते
घणु जाणीने कुमातिमां पडे नहीं, ते सक्षेप-
रुचि जाणवी.

१० धर्मरुचि-पांच अस्तिकायनुँ स्व-
रूप जाणगानी तथा अतज्ञाननो स्वपाव
अतराग साता सदहयानी रुचिने धर्मरुचि
फटे छे, ममकितना मडसठ गोल जाणी
आदरे, ते जीब समकिती कहेवाव छे. हे
मब्ब्यो ! पूर्व पुण्ययोगे मनुष्य जन्म पान्या

ओ, माँ शुद्धेन, शुद्धगुर, माँ शुद्धपर्म
तने आदरो. सामायक-पूजा, प्रधारना,
पठिक्षण, पोस्त, भावकल्प घारन्त, साधु
ना पथमदात्र, तीर्थयात्रा, मद्दृश्यगणी
मीर्णाटार अने शुद्धक्रियानो खण्ड पर्मकर-
णीने हृदयमा घारण करो के जैर्गि भनुमत्ते
शिवमूर्ख पामो

— —
समक्षितन् स्वरूप
॥ तत्त्वार्थदानसम्यगदर्शनम् ॥

(तत्त्वार्थसूत्र)

देवतवधीजिनेष्वेव, मुमुक्षुपुगुरुत्वं
धर्मधीराहंताधर्मं, तत्स्यात्सम्यक्त-
। . ॥ ३ ॥ (उपदेनपामाद)

भावार्थ-राग द्वेषने जीतनारा जिन
कहेगाय ते, नामजिन, स्थापनाजिन, द्रव्य
जिन, भने भागजिन एम चार प्रकारे जिन
हे, ते जिनेश्वरोमाज देवतुद्धि राखवी, तथा
भव (ससार) थकी पोताना आत्माने मुक्त
करणाने इच्छनार जे सुसुसु पुरुषो तेमांज
गुरुपणानी तुद्धि राखवी, तेमाज दुर्गतिमा
पडता जीवोने धारण करनार जिनेश्वर प्रणीत
अमंमा धर्मपणानी अद्वा राखवी तेने सम्य-
ग्रदर्दन कठे उ तं सम्यक्त्व स्वभावथी
अथवा शुल्का उपदेशथी एम हे प्रकारे प्राप्त
थाय हे.

स्वभावथी एट्ले शुरु विगरेना उपदेश
नी अयोध्या रहित स्वभावथी (क्षयोपशमथी)

न्यून एवा एक कोटाफोटि सागरोपदीनी
स्थितिशाज्ञा करे हे. अहीया जीव वर्ष्यी
उत्पन्न यथा अथन निविट रागदेवनी
परिणामस्थ कर्का भने दुर्भय एवी ग्रथि
सुधी आरे हे. आ ग्रीदेवगुप्ती तो अभ
ष्यजोवा चारित्र छाने पण सम्याती वा
असम्बद्धानीवार अविहे हे. आ याप्रवृत्तिर्व
रणनी फाळ अनुमूर्तनो जाणयो

अनाद्यनन्तससाराऽऽ वर्तवर्त्तिपुदे
हिपु । ज्ञानदृष्ट्यावृत्तिरेद-नीया
न्तरायकर्मणाम् ॥ ८ ॥ सागरोपम
कोटीनां, कोटय चिंशत्परास्थिति-

सप्ततिः ॥ २ ॥ ततोगिरिसरिद्ग्राव
 घोलनान्यायत्. स्वयम् । एकाभिध-
 कोटिकोटयूना, प्रत्येकक्षीयते स्थि-
 तिः ॥ ३ ॥ शेषाभिधकोटिकोटयन्तः
 स्थितौसकलजन्मिन. यथा प्रवृत्ति-
 करणाद्यन्थदेशसमिर्यति ॥४॥ रा-
 गदेपपरीणामो दुर्भेदोग्निथरुच्यते।
 दुरुच्छेदोदृढतरः काषादेरिवसर्वथा
 ॥५॥ ग्रन्थदेशतुसप्राप्ता रागादि-
 प्रेरिताः पुनः । उत्कुष्टवन्धयोग्याः
 स्यु श्रद्धुर्गतिजुपोऽपिच ॥ ६ ॥

(७) भ्रूवंकरण-भूवे, रुक्त

नहि प्राप्त थएला एवा आत्माना परिणाम
 थाय तेंते परिणामयदे रागद्वेषनी जे गाड
 छे के जे समाकित पामवाया अंतरायभूत छे
 ते गाडने उदी शसाय छे. अहीया भच्य-
 जीव रसघात-स्थितिघात-गुणश्रेणि अने
 अपूर्वनध ए चार बाजाने करे छे तथा अ-
 नतानुनधी कपायना जे दख्लीपाओ उदय
 आव्या छे तने क्षय करे छे अने जे हवे पठी
 पोडा चखतमा उदय आववाना छे, तेनीरे
 उदीरणा फरीने उदयमा लाजी उपशमावे छे
 क्षय करे छे. आ अपूर्वरणजी काळ अत-
 मुहुर्तनो जागवो.

नेपामध्येतुयेभव्या भाविभद्रा श
 आविष्कृत्यपरवीर्य अपूर्व-

करणे कुते ॥७॥ आतिकामन्तसहसा
तंमन्थिदुरातिकमम् । आतिकान्तम-
हाध्वानो घटभूमिमिवाध्वगः ॥८॥

(३) आनेवृत्तिकरण—जे करण यायाने
धीर्घशक्ति प्राप्त यथा वाद जेनी निवृत्ति यती
नयी अर्थात् सम्प्रत्व प्राप्त यथा विना जेनी
निवृत्ति यती नयी, तेने अनिवृत्ति करण
कहे छे आ करणनो कंटलोक फाल गंधे
थके अने एक प्राण याकी रहे थके मोटी जे
स्थिति तेना वे विभाग करे छे, एक नानी
स्थिति अने धीनी मोटी स्थिति, नानी
स्थितिने आ 'करणमाँ भोगवी तय' करे छे
अने मोटी स्थितिमाथी जे दलीयाओ पोढा

समय पत्री उदय आवाना छे, तेनी उदीरण
 करी उदयमा लारी (एटले नानी जे स्थिति
 छे तेनी अदर मेळवी भोगवी क्षय करे छे)
 आनी उदीरण। वे आवलीका वाकी रहे यके
 टारी जाय छे, अहीय(मिथ्यात्वना केटला
 एक दलीया ओ क्षय थइ जाय छे, अहीया
 पण जीन, रसप्रात-स्थितियात, गुणधेणि
 अने अपूर्णत्व ए चारने करे त्रे, अहीया
 जीन, अतरकरण करे छे शेप एक आवलीका
 वाकी रहे यके त्रण गुज फरे छे, मिथ्यात्वना
 चौडाणीया रसवाला दलीया ओ छे तेमाना
 केटलाएकने उच्चपरिणामबद्दे एकडाणीया
 करे छे अने केटलाएकने बे ठाणीया अने
 त्रण ठाणीया रसवाला करे छे, केटलाएक
 तेषा चौडाणीया रसवाला दलीया

रहे छे. एटले ते रसने यत्तामाने सत्तामां
दीन करे छे, तण पुज थया पछी जीव उप-
शम समकित पामे छे आ करणनो अने
उपशम समकितनो काळ अत्युक्तुत्तनो छे.
तण करणने प्राते जीव उपशम समकित पागे
ते उपशम समकितनो काळ पूर्ण थया पठी
जो एकठाणीया रसनो उदय थाय तो तेनु
नाम समकित मोहनीय जाणदु, ते बडे स्थापो
पश्चम समकित प्राप्त थाय ते रे अधदा तण
ठाणीया रसनो उदय थाय तो मिथ्रमोहनीय
जाणवी, ते बडे मिथ्रसमकित पामे ते, तेनाथी
जीवने घर्ममा उदासीन शृंचि थाय छे
अगो चौठाणीया रसनो उदय थाय तो मि-
थ्यात्म मोहनीय जाणवी, ते बडे जीव मिथ्या-
त्वने पामे छे, कर्मग्रथना मते ससारचक्रमा

प्रथम उपशम समाप्तिन प्राप्त पाप ऐ अने ति
दातना मते प्रथम सपोपशम समकित प्राप्त
पाप ऐ.

॥ अधोनिशुक्तिकरणादन्तरकरणेक्षते
मिथ्यात्वविरलकुर्युर्वेदनीयदप्रत
॥९॥ आन्तसुहूक्तिकस्यग्—दर्शन
प्राप्नुवन्तियत्, निसर्गहेतुकमिद ।
सम्यक् अद्वानमुच्चपते ॥ १० ॥ गुरु
पदेशमालम्ब्य सर्वेषामपि देहिनाम
यत्तद्वस्यग् अद्वान स्यादधिगमजे
परम् ॥ ११ ॥

उपशमसम्यवत्त जीव इयरि अनंतानुरूपी

(१८९)

શોકરી તથા સમયિત મોહનીય, મિથમોહનીય,
અને મિપરાચ્ચમોહનીય એ સત્ત પ્રદૂતિને
રવશમારે છે (શાન્ત ફરે છે) ત્યારે તેને
ગ્રામ મદ્દપક્ત્ય શાસ્ત થાય છે.

તચ્ચાનાદિમિધ્યાદષ્ટે: કરણન્નયપૂ-
ર્બક્ષમાન્તમુહૂર્તિક ચતુર્ગતિકસ્યાડ-
પિતંજીપર્યાસપશ્ચનિદ્રયસ્યજન્તોર્ધ-
ન્યભેદાન્તર ભવનીત્યુક્તપ્રાયમ् ॥
ઉયસમસેદિગ્યસ્યસત, હોઙ્ગુવસા
મિય તુ સમ્મત્તા જોવાઅક્યતિપુજો
। અદવિઅમિચ્છોલહૃદ સમ્મ ॥

सप्तोपामसम्यकत्व-अनतानुरूपीनी चा
कटी, मिथ्यासमोहनीय, मिथमोहनीय भने
समाफेतमोहनीय ए सात पठानिनो प्रदेशोदय
अने समाफित मोहनीयनो प्रदेशोदय अने
रसोदय जेपाँ होय तेने अपोपाम सम्परक
कहे छे.

कम्मगधेसुधुव । पढसोवसमी
करेह तिपुज । तच्चडीओपुणगच्छइ
सम्मे मिसमि मिच्छेवा ॥

उपशम सम्यक्त्वर्थी न्युत थनाँ जो जीव
सम्यक्त्व मोहनीयने पामे शु तो तेने क्षपोप-
काम सम्यक्त्वनी प्राप्ति पाय छे, र्मग्न्यना
व प्राणे एम जाणबु सिद्धातना यत प्र
। औपशमीमिक सम्यक्त्वर्थी न्युत अवश्य

मिष्पात्मने पापे छे. उकं च कल्पभा-
 प्ये—आलंबण मलहती, जहसठाण
 न मुंचष्ट इलिआ, एवअकयति
 पुजी । मिच्छचिअडवसमीएइ ॥
 मिच्छत्तजमुद्दन्न, तरीणअणुइअं-
 घडवसतं । मीसीभावपरियणं ।
 वे इच्छत खभोवसम ॥ तच्च सत्क-
 मवेदकमप्युच्यते, औपशमिककं
 तुसत्कमेवेदनारहिमित्योपशमिक-
 क्षायोपशमिकयोभेदः ॥

सास्वादन सम्यक्त्व—ननंगानुरधी क-
 पाचता इद्ये उपाप समीक्षन वमतां मि-
 ष्पार एगम्यानक पापा पहेला आतरे

मोहनीय चरम पुद्गल रेदनस्प एक साम
प्रक येदक सम्पवत्त्व जाणवु

क्षायिकसम्यक्त्व-अनतानुवर्धीनी
मोफदी-मिथ्यात्वमोहनीय, मिथ्रमोहनीय
मने समक्षिन मोहनीय ए सात प्रणतिनो वंश
उदय, उदीरणा अने सत्तानो सर्वपा जेवा
यथ पाय छे तेने क्षायिक सम्पवत्त्व फरे है

एवं सम्यक्त्वाना कालनियमसाह
ननु सक्षये क्षायिकमित्यु
क्त्वात् सति क्षायिके श्रीकृष्णवा
सुदेव. कथ तृतीयनरकावनी ज
गाम् श्रेणिकश्च प्रथमामिति । उ
द्वेष्ठा शुद्धमशुद्ध

चेति तत्र श्रीकृष्णथेणिकंयोरुद्गुद्धं
 क्षायिकं तस्य सादिसपर्यवसितत्वा
 दिनि न विरोधः। यदुक्त श्रीनवपद
 प्रकरणवृत्तोऽतथाहि क्षायिकस्य
 शुद्धाशुद्धभेदेन द्विभेदत्वात् तत्रा-
 पायतद्रव्यविकला भवस्थकेवलि-
 ना मुक्तानां च या सम्पर्गृहिस्त-
 च्छुद्ध क्षायिक तस्य च सायपर्यव-
 सामत्वान्नास्त्येवभंगो यदाह 'ग-
 धहस्ती'भवस्थकेवलिनो द्विविधस्य
 सयोगायोगभेदस्य सिद्धस्य वा
 दर्शनमोहनीय सतकक्षयाविभूता

सम्यगृहादिः सा दिपर्यवसानेति शो
 त्वपायसहचारिणी श्रेणिकादेति
 सम्यगृहादि तदशुद्ध क्षाधिक
 तस्य च सादिसपर्यवसानत्वादस्ति
 प्रतिपातो यदुक्तं गंधहस्तिना तन्
 या च अपाय सद्ब्यवर्तिनी अपा
 ये भूमिज्ञानाशः सद्ब्याणि शु
 द्धसम्यक्त्वदलिकानि तद्वर्तिनी
 श्रेणिकादीना च सद्ब्यापगमे
 भवत्यपायसहचारिणी सा सादि
 न चेति केवलज्ञानोत्प
 अपायक्षये अपाय भूमिज्ञानो

(१९७)

शः तत्क्षये इसौ भवति न प्रथमक-
पायोदये तत्काले तदुदयाभावात्
तत्क्षये एव तस्योपपत्तिरित्यल
प्रसङ्गेन इति शुद्धाशुद्धं क्षायिकं
हिमैद् । । ।

थीकृष्ण थेणिक घोरने क्षायिक सम्पत्त
एतु, तेमने चारित्रिनी क्रियाओपर अत्यंत राग
द्योवाधी रोचक समीकृत पण फहेवाय हो,

खीणे दसणमोहे-तिविहंमि विभव-
निआणभूअंमि ।

निपन्नवायमउल-सम्मत ए

फारक सम्यक्त—तत्रकारक सू
त्राज्ञा शुद्धा कियैव, तस्या एव
परगतसम्यक्त्वोत्पादकत्वेन सम्य-
क्त्वरूपत्वात् तदवच्छिन्नं वा स-
म्यक्त्वं कारकसम्यक्त्वं । एतच्च
विशुद्धचारित्रिणामेव ॥१॥

सूत्राज्ञा शुद्धक्रिया तेज फारक स-
म्यक्त छे. वे मियनिज परगत सम्यक्त्वो-
त्पादकपणाबदे सम्यक्त्वरूपत्व छे, ए हेठु
यदी तदवच्छिन्नसम्यक्त्वेने कारकसम्य-
क्त होइ छे. विशुद्ध चारित्रयतोने कारकस-
म्यक्त होय छे

रोचक सम्यक्त—रोचयति स

भ्याद्युषानप्रदृतिं, न तु कारयती-
ति रोचकम्, अविरतस्म्यद्वशं
इत्यग्नेषिकादीनां ॥ ९ ॥

ममहे भद्राननी प्रदृतिनी रुचि क
रे न शारिषनी प्रदृति कराती शके
को देन रोचक स्म्यन्व करे ऐ. देवविर-
त्याद् एवंनी क्रियायो रुचे प्रजंते करी
जान को, हम भेषिकादीनी करो.

दीपकं व्यज-
कमित्यनपान्तरम्, एतच्च ये स्वयं-
मिष्याटिरपि पांस्यो जीवाजी-
दि, तस्याह्वारमहं कर्त्तव्यम् ॥ १० ॥

(२००.)

दीपकने व्यंजक सम्यवत्व कहे छे
पेते स्वयं जे मिठ्याहाए जीव होय, अ-
अन्योने यथावस्थित जीवाजीवादि पदा-
समझावे छे, तेने अगारमदेशनी ऐडे दीप-
सम्यफूल्व होय छे.

द्रव्यसम्यकरत्व-तत्रजिनोक्तत
र्खेपु सामान्येन रुचिद्रव्यसम्यक्त
खम्—त्या जितोक्ततर्योमा सामान्ययी
रुचि थाय छे तैने द्रव्यसम्यक्तत्व कहे छे.
द्रव्यसम्यकरत्व ते भावसम्यकरत्वहु
कारण छे. कारण बिना कार्यनी उत्पत्ति यती
नयी, द्रव्यसम्यक्तत्व बिना भावसम्यक्तत्वनी
। यती नयी. नामसम्यकरत्व, स्था
। । ।, द्रव्यसम्यकरत्व अने

भावसम्यकरव ए चार निकेपयी सम्ब
 वेत्र भवतोरवुं—द्व्यसम्यकत्वनी प्राप्ति, पाद
 भावसम्यकत्वनी प्राप्ति थाय हे. पाट द
 व्यसम्यकत्वना जें जे हेतुओ होय तेवेनु
 अवलम्बन करतां सर्वं जीवोने साहाय्य आ
 परी, तथा सामान्यितः जेने सञ्चाइ जिणे
 सरभासिआईं वयणाईं नमहा हुंति
 इय वुद्दि जस्त मणे—सम्मत निवृत्त
 तस्त ॥ एवी श्रद्धा होय तेने द्व्यप्रस्तव
 आणवु.

भावसम्यकरव—नयनिकेपप्रसा-
 णादिभिरधिगमोपायो जीवजीवा-
 दिसकलुत्तत्वपरिशोधनश्चानात्म-

क भावसस्यकरनम्—परीक्ष
 तिश्चानतृतीयांशस्वरूपस्यैव
 शास्त्रे व्यवस्थापित्वात् ।
 सिद्धसेनदिवाकरपादा* एव
 मते, सदहसाणस्त्र भावउ
 पुरिसस्ताभिणिवोहे-दसण
 वह वच्चो ॥

नय निषेप ममाणोहै सर्वेषत
 पायस्प जे योष धाय छे,
 दिसफलतस्व परिमोथनस्प जे
 कथे छे परीक्षा
 श्रीजो अपायरुप जे भेद
 रूपे व्यवस्थापनामा ३

श्रीरामद्वयवाचे श्रद्धारोगा श्रान् श्रुतिः
कृष्ण दिवस्त्रिव्याप्तार्थी अनेक श्रान् श्रुतिः
मात्रिताम्यकृत्वा कृत्वा श्रुतिः
श्रीरामद्वयवाचे प्रसागे कृत्वा श्रुतिः
कृत्वा तत्र प्रयत्ने तत्र जागित्
दस्तैः सम्भृता, मात्रिण लक्ष्मीत्
अथ यमाप्तिं सम्भृता ॥ २ ॥ अ
हि हि देवाग्रस्त्रो देवाग्रस्त्रो देवाग्रस्त्रो
देवाग्रस्त्रो देवाग्रस्त्रो देवाग्रस्त्रो । लिपिः
स्त्री देवाग्रस्त्रो देवाग्रस्त्रो देवाग्रस्त्रो
देवाग्रस्त्रो देवाग्रस्त्रो देवाग्रस्त्रो । लिपिः
स्त्री देवाग्रस्त्रो देवाग्रस्त्रो देवाग्रस्त्रो
देवाग्रस्त्रो देवाग्रस्त्रो देवाग्रस्त्रो । लिपिः
स्त्री देवाग्रस्त्रो देवाग्रस्त्रो देवाग्रस्त्रो
देवाग्रस्त्रो देवाग्रस्त्रो देवाग्रस्त्रो । लिपिः
स्त्री देवाग्रस्त्रो देवाग्रस्त्रो देवाग्रस्त्रो
देवाग्रस्त्रो देवाग्रस्त्रो देवाग्रस्त्रो । लिपिः

जिणेहिं पणपात्त जिनेभर जे
 तेज सत्य हे, एवी सामान्यरुचिने द्र
 कहे हे, नयनिक्षेप प्रमाण परिष्कृत
 रुचिनु भावसम्यक्त्वे रुपे रुद्रपण
 वशान श्रद्धा परिषुद्धने भावसम्यक्त
 जे शानी नवतत्त्वोने नयनिक्षेप
 द्वारक समजी ज्ञके हे तेने भावस
 मगटे हे, सामनय चार निक्षेप इ
 प्रमाणोधी पद्मदध्य, नवतत्त्व आदित्य
 पूर्वक स्वरूप अवशोषि जे तत्त्वोन
 करयो तेने भावसम्यक्त्वे कये हैं ।

व्यवहारसम्यक्त्व—ज्ञान
 सप्तपष्ठभेदशील

इति अद्या मने चरणयी सम्प्रत्यक्षा
 सदसुप्त देवता ने शीलने करवा देने व्यवहार
 सम्प्रत्यक्ष करो हे, सम्प्रत्यक्षा सदसुप्त वा
 ही सम्प्राप्ययी हेतु निवेद विस्त्रय अद्यतोः
 हे शुद्ध देवता घर्मनी आगमना करो,
 निवासने अवश करवा, अर्जे देवता शुद्ध
 देवता वा व्यवहारना व्यवहारसम्भ
 वा ग्रन्थ सम्प्रदेश पाय हे, जैन धर्मना वा
 अथ चार वह कारणो हे वर्तमानी प्रदाता
 हो एवं शुद्ध को व्यवहारसम्भवक्ष्य करु
 णा यत्करु, देवता घर्मनी भद्रनी य
 चारस्य अथ चार करो तेज व्यवहार स
 व्यवहार निवेद अनि हे व्यवहारसम्भ
 वा ग्रन्थ सम्प्रदेश पाय करिय हे, अ
 द्यता वा व्यवहार निवेद

म्यन्तव भास थाय छे माटे व्यवहार सम्यक्तव प्रवृत्तिनो आदर कर्तो निश्चयसम्यक्तवना जे जे व्यवहारहेतुओ छे तेनी रसी प्रवृत्तिने व्यवहारसम्यन्तव कहे छे.

निश्चयसम्यक्तव-

निच्छुद्धयओ सम्मत, नाणाइ
मयप्पशुद्धपरिणामो, इअरपुण तुह
समए, भणिअ सम्मतहेउहाँ ॥

निश्चयतो ज्ञानादिमयात्मशुद्ध-
परिणाम. निश्चयसम्यन्तवम् ॥

निश्चयथी ज्ञानदर्शन चारित्रमय आत्म
शुद्धपरिणामने निश्चयसम्यन्तव कहे छे
ज्ञानदर्शन अने चारित्रसलुलितपरिग मने

निश्चयसम्यकत्व कहे छे. तथा एने भावचारि-
त्र कहे छे भावचारित्रने निश्चयसम्यकत्व केवी
रीते कहेवाय । तेना उत्तरमा जणाववा-
मा आये छे के भावचारित्रस्यैव नि-
श्चयसम्यकत्वरूपत्वात् भावचारित्रने
निश्चयसम्यकत्वरूपत्व छे, अतएव मिध्या-
चारनिवृत्तिरूप कार्यनो तेथी सद्भाव छे.
तो आ प्रमाणे निश्चयसम्यकत्वनुं स्वरूप
कहेता श्रेणिक कृष्ण बगोरेने निश्चयसम्य-
कत्व घटी शके नहि । उत्तरमां कहेवानुं के
श्रेणिक कृष्णादिकने निश्चयसम्यकत्व नथी
अप्रमत्तस्यतानामेव तद्रूप्यवस्थितेः
सातमा गुणस्थानकबाटि अप्रमत्त साधुओरेने
निश्चयसम्यकत्व होय छे, कारण के सातमा
गुणस्थानकबाटि अप्रमत्त साधुओरे शुद्धात्म

ज्ञानदर्शन चारित्र परिणति होय छे. आचा
रागमूलमा अप्रयग सापुओंने निधयसम्य-
कत्व कथ्यु छे. तत्पाठ.—

ज सम्मति पासह, त मोणति
पासह, ज मोणति पासह तं स-
म्मतिपासह ॥१॥ ण इमं सक
सिद्धिलेहिं अदिजमाणेहिं गुणासा-
प्तहिं वक्तसमायारेहि पमत्तेहिं गार-
मावसत्तेहिं मुणी मोण समादाय,
धुणे कम्मसरारगं, पतलुह च से-
वांति धीरा सम्मत्त दसिणोत्ति ॥२॥

जे सम्यकत्व छे ते चारित्र ले, अने
जे चारित्र छे ते सम्यकत्व छे. आ छ-

ऋनी टीका श्रीशीलांगाचार्ये करी छे तेमा अ-
प्रमत्त साधुने निश्चयसम्प्रवत्त्व कथ्यु छे. जे
निश्चयसम्प्रवत्त्व छे तेने भावचारित्र कथ्यु
छे, अने ते सातमा गुणस्थानकवर्ति साधु-
ओने होय छे. ज्ञानी ध्यानी समाधिवंत सा-
धुने निश्चयसम्प्रवत्त्वनी प्राप्ति याय छे.

विभुद्भारित्रीगाने कारकसम्प्रवत्त्व क-
थ्यु छे पण ते बाय चारिन क्रियारूप छे,
अने निश्चयसम्प्रवत्त्व तो आत्मानी शुद्ध
ज्ञान दर्शन चारित्र परिणति रूप छे, माटे
कारकसम्प्रवत्त्व अने निश्चयसम्प्रवत्त्वमां
ए प्रमाणे भेद जाणवो निश्चयसम्प्रवत्त्वने
आश्रयी सिध्धान्तोमां प्रशमादिनु लक्षणपणु
कथ्यु छे अप्रमत्त साधुओने जेबु अत्यन्त
ज्ञानादि शुद्धात्मपरिणाम वडे निश्चय सम्प्र-

कत्य मास पाय छे तेहु कृष्ण अने श्रेष्ठिक
बगोरेने निश्चयसम्यक्त्व घटहु नथी। कारण
के हैओर्मा निश्चयसम्यक्त्व साक्षणीनी उत्प-
चिनो अमाव छे। ओपागुणस्थानकमा
सायिकसम्यक्त्व मास थइ शके छे परतु निश्चय
सम्यक्त्व के जे भावचारित्र स्वरूप छे ते चो
धागुणस्थानकमा मास थइ शफहु नथी, दीक्षा
चारित्र क्वेवानो जे हृदयमा भाव थाय छे तेने
भावचारित्र क्वेवामा आवहु नथी। परतु
आत्मा व्यारे दीक्षा अंगीकार करी साधुना
ब्रतो पाल्तो छतो सातमा अप्रमत्त गुणवाणाना
विशुद्ध शान दर्शन चारित्र परिणाम बडे प
रिणमै छे। त्यारे तेने भावचारित्रनी प्राप्ति
कथवामा आये छे, अने ते भावचारित्र

भाग्नेनि

कथवामा आये छे।

श्री हरिभद्रसूरिए एज प्रमाणे कहु छे.
 निच्छयसस्मत्त वाहिगिच्च सुन्तभ-
 पिअनिउणरूप तु । एव विहो
 पिओगो—होइ इमो हत वणुत्ति॥

ज्ञानादिमय इत्यस्यायमर्थ, ज्ञा-
 ननये ह्वानस्य दशाविशेष एव स-
 म्यक्त्व क्रियानये च चारित्ररूप,
 दर्शननये तु स्वतन्त्र व्यवस्थितमेव
 इति ॥ शुद्धात्मपरिणामप्राहिनिश्च-
 यनये तु

आत्मेव दर्शनज्ञानचारित्राप्य-
 थवा यते: यत्तदात्मक एवैप्-शरीर-

सधितिष्ठति ॥

आ प्रमाणे निश्चयनयसम्यक्त्वनु स्व-
रूप अवयोपद्यु, भुद्ध ज्ञानदर्शन चारिप्रे प-
रिणति रूप आत्मा तेज निश्चयसम्यक्त्व छे
बाह्य रागादि संष्कृत्य विकल्प राहित निरपा-
थिमय भुद्धात्म बोध स्थिरता, लीनता तन्मय
परिणति तेज निश्चय सम्यक्त्व अवगोपयु.

आगमसाररत्ना देव-गुरु अने धर्मनी
शद्वाने व्यवहारसम्यक्त्व कहे हे, अने आ-
त्मा तेज देव, आमा तेज गुरु अने आत्मा
तेज धर्म एवी शद्वाने निश्चयनय सम्यक्त्व
कहे हे, पश्चोत्तररन्तचिन्तामणिया शेठ अ-
नुपचद मलुकचंद जणावे हे के उपशम स-
म्यकृत्य-क्षयोपशम सम्यक्त्व अने क्षायिक
सम्यक्त्व तेज निश्चय सम्यक्त्व हे. आ प्र

माणे तेझो निश्चयसम्यक्त्वनी व्याख्या करे छे पण तेनो मवचनसारोद्धारवृत्ति-नव पद प्रकरणटचि-धर्मसंग्रहवृत्ति-आचारांगमूल टीका वगेरेमाँ कथेळा निश्चयसम्यक्त्वनी साथे मतभेद देखाय छे. नवपदप्रकरणवृत्ति, धर्मसंग्रह वगेरेमाँ साधिक समाफितने निश्चय समाफितथी भिन्न गऱ्युँ उे अने श्रेणिकने साधिक सम्यक्त्व छतो निश्चय सम्यक्त्व नयी एम स्पष्ट फऱ्युँ छे. आगमसारना कराए जे निश्चय सम्यक्त्वनी व्याख्या करी छे ते पण उपरनी व्याख्याथी भिन्न पढे छे. तो पण अनुभवनी अपेक्षाए अप्रमत्त साधुओने जे निश्चय सम्यक्त्व कथ्यु छे तेनी साथे संघ कथंचित् बधवेसतो आवे छे. अप्रमत्त साधुओ, निश्चयनयनी अपेक्षाए प्रोत्ताना आ-

त्माने देवन्युर मानीने अने तेने शुद्ध पर्म-
रूप मानीने ते सत्ताए तेनु ध्यान करे छे,
तेथी तेओने शुद्धात्मशानपरिणतियोगे निश्चय
सम्यकत्व द्योय छे, मारो आत्मा तेज देव गुरु
पर्मरूप छे, पर्यु बर्ननमा मूर्खीने तेनो चासावि
फ शुद्धात्म अनुभव निश्चय करवो, ते अप्रमण
दशाविना अच्य, केज नीचेना शुणस्यानकोमा
रहेला जीवो छे तेभोने आवी शके नाहि, एम
अनुभवनिश्चय शुद्धात्मा परिणतिए तेनो भा
षाय समजी निश्चय सम्यकत्वमा ते व्याख्या
समविज्ञ परी मतभेद दुर करी शकाय छे.
आगमसारकर्ता धीमद् देवचंद्रमीए जे हाइथी
निश्चय सम्यकत्वनु लक्षण कर्थ्यु छे तेनो सत्य
भावार्थ तो तेभो जाणे परतु सापेक्ष हाइए
सिद्धान्त शैलीए ए प्रमाणे घटा ता तेमना
फयनमा विरोध जगावो नथी, देव गुरु अने

घर्मैरुप जेनो आत्मा परिणम्यो छे अने तेनो
शुद्धानुभव करीने आत्मानो शुद्ध ज्ञानादि
परिषिक्तिने सेवे छे तेने निश्चय सम्यक्त्व
मगडे छे एवो बास्तविक अनुभवार्थं ग्र-
हतां सापेक्षत्वं व्यारयाए निश्चय सम्यक्त्वं
ग्रहाय छे.

।

सम्यक्त्व.

सरयात वर्षायुष्क संज्ञि पञ्चेन्द्रिय ति-
र्यैचो तथा स्त्रीओ तथा भवनपति चर्यतर
उयोतिरेने क्षायिक समाक्षित नथी. तेओ-
ने ते भवमा क्षायिक सम्यक्त्वं उपसम
थतु नथी. संरयाता वर्षायुष्कराङ्गा मनु-
प्यने क्षायिक सम्यक्त्वनो आरभ याए छे
माटे संख्याता वर्षायुष्कराङ्गा संज्ञिपञ्चे-

त्माने देव-गुरु मानीने अने तेने शुद्ध धर्म-
रूप मानीने ते सत्त्वाए तेनु ध्यान करे छे,
तेथी तेओने शुद्धात्मज्ञानपरिणतियोगे निश्चय
सम्पवत्त्व होय छे, मारो आत्मा तेज देव गुरु
घर्यहृष्ट छे, एवु बत्तेनमा मूकीने तेनो चास्तारि
क शुद्धात्म अनुभव निश्चय करबो, ते अपमत्त
दशाविना अ-य, केजे नीचेना गुणस्थानकोमा
रहेला जीवो छे ते भोने आवी शक्ते नहि, एम
अनुभवनिश्चय शुद्धात्मा परिणतिए तेनो भा
याप समजी निश्चय सम्यकनमा ते व्यारया
समावैश्य फरी पतभेद दुर फरी शकाय छे.
आगमसारकर्ता थीमदू देवचंद्रजीए जे दृष्टिथी
निश्चय सम्यकत्वनु दक्षज फछ्यु छे तेनो सत्य
भावाखी तौ तेओ जाणे परतु सारेक्ष दृष्टिए
सिद्धान्त शैलीए ए प्रमाणे घटा ता तेमना
व्यनमा विरोध जणाती नपी, देव गुरु अने

मैल्य जेनो आत्मा परिणम्यो उे अने तेनो
गुदानुभव करीने आत्मानो शुद्ध ज्ञानादि
परिणतिने सेवे हे तेने निश्चय सम्यक्त्व
गटे उे एयो वास्तविक अनुभवार्थ ग्र-
हां सापेक्षत्व व्याख्याए निश्चय सम्यक्त्व
प्रदाय हे.

सम्यक्त्व.

संरयात वर्षायुक्त संक्षि पञ्चेन्द्रिय ति-
र्थो तथा स्त्रीओ तथा भवनपति व्यंतर
ज्योतिषोने साधिक समक्षित नथी, तेओ-
ने मे भवमा साधिक सम्यक्त्व उपलब्ध
यहुं नथी, संरयाता वर्षायुक्तवाला मनु-
ष्यने साधिक सम्यक्त्वनो आरम थाय हे
माटे संरयाता वर्षायुक्तवाला समिधंडे-

निद्र्य तिर्यच सीओ अने उपर्युक्त प्रण म
कारना देवताओंने पारम्परिक साधिक स-
म्यवत्व प्रण होतु नयी. कारणके साधिक
सम्यक्षट्टिनो तीभोमा उत्पाद थतो नयी.
उपर्युक्त सरयातायुक्त संशिप्तेनिद्र्य तिर्यच
सीओ तथा प्रण मध्यारना देवताओंने
उपशम अने सपोपशम सम्यवत्व याए छे
एकेनिद्र्य, द्वीनिद्र्य, शीनिद्र्य, चतुरनिद्र्य
अने असंशिप्तेनिद्र्य जीवोने ते भव बा
परमारनी अपेक्षाए इण सम्यवत्वमांथी
एक प्रण सम्यवत्व होतु नयी, घादर, प-
भी, जळ, बनस्पति, द्विनिचतुरनिद्र्य
जीवो अने असंशिप्तेनिद्र्योमा पर्यासाव-
स्थामा पारम्परिक सास्वादन सम्यवत्व अने
पर्यास सभी द्वेनिद्र्यमां तादृभविक प्रमाय

ले, सूक्ष्म पर्केन्द्रिय वादर तेज वायुमां स-
 म्यवत्त्वेछेश्याविंतोना उत्पादनो अभाव छे
 माटे सास्वादन तेभोपां नयी, ए कम्प्रनियक
 अभिप्राय छे. सूत्रामिसायबदे तो पृथ्वि आदि
 एकेन्द्रियोने सास्वादन सम्यवत्त्व नयी.
 यदुक्त—प्रश्नापनायाम्, पुढिवि-
 काङ्गाणं पुच्छा गोयसा पुढिविका-
 हया नो सस्मदिष्टी नो सस्मासि-
 चउदिष्टी एव जाणवप्पदकाङ्गा—॥
 इति प्रवचनसारोऽरे १४९ द्वारे ॥
 पञ्च सम्बन्धानां कालनियमूलाह—
 अत्तुहुक्तोवसमो, छावलिसासा-
 णवेयगोसमओ, साहियतित्तीसाय-
 रखइयो दुगुणो खओवसमे, ॥

उपशमनो अन्तस्मुद्रतेषाह छे, सास्वादन
 नो उत्कृष्ट उ आवलिका मान, वेदक्षनो समय
 पाप, सापिक्षनो तेत्रीस सागरोपम अने भ
 योपशमनो छासठ सागरोपमनो काळ जाग
 यो सर्वायसिद्धादिनी अपेक्षाए क्षायिक सम्बद्ध
 वत्वनी तत्रीस सागरोपमनी स्थिति नाणवी
 यात्रीस सागरोपम स्थितिराख देवपणे श्रग
 बार उत्पन्न यत्रापी क्षयोपशम सम्बद्धत्वनो
 छासठ सागरोपमनो काळ सिद्ध याय छे
 अने तेमा नरभवनु भायुष्य अधिक जागवृ

उक्तोस सास्तायण-उवस्तमिया
 हुति पचवाराओ, वेयग सयगा इ
 क्षसि-असखवारा खओवसमो ॥

आखा भवचमां जीवने सास्वादन

पापतो नयी।

उक्तं च शतकद्वृहच्चूणी—

उवसमस्मिट्टी—अतरकरण
ठिओ कोइ देसविरयपि लभइ कोइ
पमत्तभावपि। सासाइणो न किंपि
लहे इति ॥

पुजन्रयसक्रमश्च कलपभाष्ये ए-
वमुक्त, मिथ्यात्वदलिकान् पुद्रगला-
नाहृष्य सम्यग्गृहिणः प्रवर्धमानप-
रिणामः सम्यक्त्वेमिश्रे च सक्रमय-
ति। मिथ्रपुद्रगलाश्च सम्यग्गृहिणि
सम्यक्त्वे मिथ्याहृष्टश्च मिथ्यात्वे

सम्यक्त्वपुद्गलास्तु मिथ्यात्वे स-
क्रमयति न तु मिथ्ये ॥

प्रवर्गमानपरिणामी सम्यगृह्णितीव, मि-
थ्यात्वं पुद्गलोने आकर्षी सम्यक्त्वमा अने
मिथ्यात्वमा संक्रमावे हे, सम्यगृह्णिते जीव
मिथ्यं पुद्गलोने सम्यक्त्वमां सक्रमति हे अने
मिथ्याहृष्टे जीव मिथ्यात्वमा संक्रमावे हे
तथा मिथ्याहृष्टे सम्यक्त्वपुद्गलोने मिथ्या-
त्वमां सक्रमावे हे एण मिथ्यमां नहीः

मिच्छत्तंसि अखीणे तिपुजा सम्म-
दिद्धिणा नियमा खीणसि उ मिच्छ-
त्ते-द्वुएगपुजी व खवगोवा ॥

मिथ्यात्व असीण थये झते सम्यगृह-

ऐयो नियमा श्रीपुजवाला होय छे. मिथ्या
त्व सीण यसे छने ये पुंजी होय छे अने
मिथ्र सीण यसे छते एक पुंजी होय छे अने
सम्यक्त्वमोहनीय सीण यसे छते साधिर
सम्यक्त्वबत याय छि.

सम्यक्त्वपुद्गला अद्वौधितमदनको
इवस्थानीया विरुद्धचैलादिद्रव्यक-
ल्पेन कुतीर्थिकलसर्गकुशाखश्रवणा
दिमिथ्यात्वेन मिथ्रिता सन्त तत्क्ष-
ण एवमिथ्यात्व स्यु यदापि प्रपतित
सम्यक्त्व पुन सम्यक्त्व लभते
तदापि अपूर्वकरणेन पुञ्जान्नय कृत्वा
निः । ॥ २ ॥ सम्यक्त्व पुञ्ज एव

गमना हृष्टव्य । न तु तदा अपूर्व-
 करणस्य पूर्वलब्धस्यैव लाभात् कथ
 अपूर्वतेति चेदुच्यते अपूर्वमिवाऽपूर्व
 स्तोकवारमेवलाभादितिवृद्धा सेष्ठा
 न्तिकमत चेतत्-सम्प्रक्ष्वप्रासादि-
 व देशनिरतिसर्वनिरत्योः प्रासादि
 यथाप्रवृत्तापूर्वकरणे भवतो नत्वनि
 वृत्तिकरणअपूर्वकरणाद्वासमासाव-
 न्तरसमये एतत्योर्भावात् । देशस-
 र्वनिरत्यो प्रतिपत्तेनन्तरसमन्तरमुहुरं
 यामदनदय जीवः प्रवर्धमानपरिणा-
 मस्तत उद्देव त्वनियमः कोऽपि प्रव-

धीमानपरिणाम एव कोऽपि स्वभा॒
 वस्थ कोऽपि हीनपरिणाम ये च
 भोगविनैव कथचित् परिणामहासा॑
 शविरते सर्वविरतेषां प्रतिपत्ति ता॑
 स्ते अकृतकरणा एव पुनस्तां लभन्
 ये त्वाभोगत प्रतिपत्तिता आभोगं
 नैव मिथ्यात्म गतास्ते जघन्यतोऽत
 मुद्दत्तेनोत्कर्षत प्रभूतकाले यथोक्त
 करणपूर्वकमेव पुनस्ता ते लभन्
 इत्युक्त कर्मप्रकृतिवृत्तौ- ॥

सैद्धान्तिक मत प्रमाणे विरापित सम्य,
 कर्तव्यालो जीव ग्रहण करेल सम्यक्त्वन्

छे ते देवगति वा नरकगतिमा जाय छे स्या
 ते जीव तद्भवातरित रीजा भवमा सिद्ध था
 छे, अने पूर्व बद्धायुष्क साधिक सम्यक्त्व
 तिर्यंच वा नरकगतिपर जाय छे तो
 अवउयाऽसख्यवपर्युष्केऽवेद न
 सख्येयवपर्युष्केपु तद्भवान्तरं
 देवभवे ततो नृभवे सिद्धधती।
 चर्तुर्थभवे मोक्ष अवश्य असख्याता।
 पर्युष्कोमा उपजे छे पण विचारयु सख्या
 वपर्युष्कवालाओमा नहि, ते भव पश्चात् दे
 भव अने त्याथी मनुष्य भवमा सिद्ध थाय
 जेणे पूर्व भवनु आयुष्य नाध्यु नथी, प
 कोइ मनुष्य साधिक सम्यक्त्व एमे छे तो

भवपा क्षपक्षयेणि आरोही सिद्ध पाय छे, -

एक जीव अने नाना जीवनी अपेक्षाए
स्थित्वनो सपयोग जघन्यथी अने उत्कृष्टवी
तमुहृत्वनो जाणवो, अने कायोपशम स्वप तेनी
दिनो एक जीवने जघन्यथी अन्तमुहृत्व अने
उपतो श्रम अधिक छामठ सागरोपमनी
प छे तेना उपर सम्यक्त्वथी अपन्युत जीव
द याय छे, नाना जीवने आश्रयी तो सर्व-
ल जाणवो,

फौटि सम्यक्त्वनो त्याग करे छते पुनः
ग जावरणना कायोपशमथी अत्तमुहृत्व मानमा
ः सम्यक्त्वने पामे छे फौटि सम्यक्त्वनुं
वर् जघन्यथी तो अन्तमुहृत्व छे अने आशा
प्रचुर जीवनी अपेक्षाए तो उत्कृष्टवी

अपार्थि पुद्रल परावर्त जाणतु. कथुं छे वे

तिव्ययरपवयणे सुअ
आयरिअ शणहर महहीअ
आसायतो चहुसो—
अणतससारिओ होइ ॥

नाना जीवोनी अपेक्षाए तो सम्पर्कत्व
आतरानो अभाव उे.

चतुर्दश पूर्व वा दशपूर्वतु परिपूर्ण उ
ज्ञान छे तेने नियमाए सम्पर्कत्व होय
थारीना के जे किञ्चिन् न्यून दश पूर्व भरो हैं
छे ते बोने सम्पर्कत्वनी भजना जाणवी तेअैं
न रत्व होय वा मि. यात्व पण होय, यदुत्त

यो इस तथा अभिन्ने
नियमासमं तु सैसए भयणा
मति गोही विवचा सोवि
होति मिच्छे न उणसेसे ॥

ओपदरागूरी थो ओपेन चतुर्दश
नियमार मध्यस्त्र दृष्टि हो, एग क्षुं
ज्ञाव ते साह जगाव्यु न गी, नन्य ते यक्षी
सून रुरी धन मतना जाणवा, अध्यव दशगूर
न दृष्ट्यामुनता चारेश नैर्गीकार करी, त
लाग दौर हो, एग तेन सम्यक्त्वनी प्राप्ति
हो न गी, वारगारिव दिपावहे न पञ्चजीवि
न दृक्षेत्रा दृश्या जार हो—

आ कालपा सम्पर्कत्वनी प्राप्ति जेने थाएँ
 छे, तेने उत्तम भव्य जीव जाणवी। ॥ सम-
 त्तमि उ लछे, पलिअपुहुत्तेण साव
 ओ हुज्जा। चरणोवसमखयाण,
 सागरसखतरा हुति ॥ सम्पर्क प्राप्ति
 थया वाद उत्तर देशविरत्यादि गुणोनी प्राप्ति
 थय उ गुरुनी विनय भक्तिवद्वै जे आराधना
 करे छे, तेने सम्पर्कत्वनी प्राप्ति थय उ क्षयो-
 पश्यादि सम्पर्कन्व योगे तीर्थफर नाम कर्म बाधी
 शकाय छे, वीश स्थानकर्नी आराधना कर-
 नार जीव तीर्थफर नाम कर्म बाधे छे, सम्पर्क
 वत्य प्राप्ति थया पश्चात् धर्मक्रियानी सफलता
 छे, देव, गुरु, धर्मनो रागी भने मध्यस्थ

मन्दकुपायी जीव सम्प्रकल्पनी प्राप्तिनी अधि-
 कारी मे छे, पार्गानुसारी जीव सम्प्रकल्पनी
 प्राप्ति कराने अधिकारी बने छे, जेना मनमा
 सम्प्रकल्पनी प्राप्ति माटे जायेत तीव्र निवासा
 होर, तोगे पार्गानुसारी प्रयत्न थवु , जोहर,
 पार्गानुसारीपण आच्चा वाढ सम्प्रकल्पनी
 प्राप्ति याय छ, आन्मशानी आत्माना स्वल्पने
 अत्तीर्थी आत्माना भुद्ध गुण पर्यायपाँ रप
 एता करी सुप्राप्तिकर बनी जायेत अतीत्रिष्ठ
 श्रेष्ठन्दना अनुभवे सम्प्रकल्पनी प्राप्ति करे छे,
 आत्माना मरजनिन्दनो आप ज्याँ ते ल्पाँ
 सम्प्रकल्प छे, देवतिरिति भने सर्वतिरितिगुण
 इति कराने पर्न बने खास शक्तिही देव,
 देव दयम सम्प्रकल्पनी प्राप्ति कर्वी गीतार्थ

आत्मज्ञानी ध्यानी सद्गुरुना चरणकपल से र-
वार्थी सम्यकन्वनी प्राप्ति पाय छे.

उपर प्रमाणे सम्बन्धत्वना जे जे भेदो
कषा छे, तेनी प्राप्ति माटे प्रयत्न करनो एज
उत्तम शुद्धपौनुं कर्तव्य छे. आगमोनो नय,
निषेप, प्रमाणोर्थी अनुभव करीने राग द्वेष
रादित आत्माना समभाव स्वरूपमा परिणमयु
एज परमसाध्य कर्तव्य छे. समभावे परिणमता
आत्मा केवल ज्ञान प्राप्ति करी मोक्ष पामे छे

सेयवरो वा आसवरो वा
बुद्धो वा अहव अन्नो वा
समभाव भावी अप्या—
१ मुख्य न सदेहो ॥

भेतावर वा दिगंबर, बुद्ध अथवा
 वेदांती—वैदिक धर्मी, मुसलमान, स्त्रीस्ति व-
 गेरे गमे ते होय परतु समभावे आत्माने भावी
 समभावे निश्चयतः परिणमी समभावी थाय छे
 ते मोक्ष पामे छे, ते कर्मावरणनो क्षय करी
 सम्यक्त्वादिने प्राप्त करी परिपूर्ण गुणमयी
 वनी सिद्ध बुद्ध परमात्मा याय छे, सर्व सिद्धा
 तनो सार ए छे के सम्यक्त्वादिनी प्राप्ति करी
 आत्माने समभावे भावयो, समभावे परिणमता
 कषायनी मन्दताए अने क्षीणताए निसर्ग
 सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय छे अने सफल कर्मने
 निवारी परिपूर्ण सिद्ध बुद्ध बने छे, समभावे
 परिणमता सहजानन्दयोगे सम्यक्त्वनी प्राप्तिनो
 अनुभव करी शक्तय छे.

आगमसार, नयचक्र आदि ग्रंथोनी सहा-
यताथी ते ग्रयोना अनुसारे भव्यजीवोना उप-
कारार्थे पहुङ्क्व्यापिचारग्रन्थ वनाव्यो ते तेमा
काइ वीतरागनी आज्ञा रिरद्द भाषण थयु
होय, लायु होय, ते निविधे करी मिर्हामि
दुक्कड दउ छु, आ ग्रथमा रिभ्रम चित्ताथी
कोइ दोप थयो होय तो ते मुधारवा पटित-
पुस्पोए छुपा करवी. शुभे यथाशक्ति य-
तनीय ए न्यायने अनुसारी में उप्रम कर्यो
ते, तेथी हु मारी पहेनत परोपकार थये छवे
सफल पानु छु, आ ग्रथ पंडित पुरु
पोने योग्य ते जा ग्रथ वाची व्यवहार
माँ शाली हृषप्रा निश्चय हापि राखशे ते
पास्ते,

दुहा.

अध्यात्मरस शीलया, ए पद् द्रव्य विचार,
 जे भरी प्राणी धारये, ते लहेश्वे सुखसार. १
 जन्म मरणयी आत्मा, रक्षलयो काल अनत,
 जिनवाणी पद् द्रव्यनी, सुणता होये संत. २
 सात नयोधी आत्मा, सप्तमगीए धार,
 आत्मस्वरूप विचारये, ते लहेश्वे भवपार. ३
 ओगणीश अहायननी, विक्रम साल रसाल,
 फागुण मासनी पचमी, रुडो शुक्ररवार. ४
 पादरा नगरे गोभता, शतिनाथ भगवंत,
 पादपश्च तेना नमी, ग्रथ कर्यो गुणवत. ५
 पिनयवत विवेकवत, ब्रावरु मोहनभाइ,
 हीमचंद्र सुत कारणे, ग्रथ कर्यो सुखटायी ६
 तपगन्ठ गगन दिग्गकर, हीरविजय मूरिराय,
 सहेजसागर तासशिष्य, पदनी उपाध्याय. ७

पाट परंपर तेहनी, रविसागर शुश्राय,
 मुखसागर शिष्य तेहना, विनयर्त शहाय ८
 तास चरणने सेवतो, पुदि फौ छे पम,
 भणेगणे जे पारशे, ते पामे मुखसेम. ९
 ज्यां लगे शशी भानु रहे, जगमा करे प्रकाश,
 तावद् भगिन भानुसम, धइने करो हुन् १०
 ए पठ द्रव्य पिचार ग्रन्थ, निनवालीर्पी त्ताल
 भणशे गणशे ते भवी, छहेशे महलगाउ.॥ २१ ॥

संपूर्णम्

ॐ शान्ति ३

